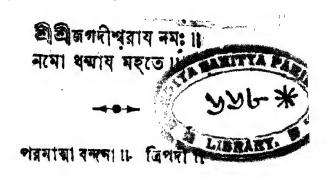


क्री के असका कर सामिता मी के असका कर सामिता असी-कार्यमें



म्यून कर मान्यून कर म

# দুপ্রাপ্য



निर्विकात नित्रक्षन, जञ्जन्त ननाउन, विज्विश्व বিক্তন রিনি। রবিচন্দ্র বাযুগণ, করে গমনাগমন, রে দেখকারণ তারতিনি।। আদিঅন্ত নাহিতার, নিরাকার নিরাধার, নর্মব্যাপী নর্ম শক্তিমান। বিশ্বসূষ্টি স্থিতি লয, য়াঁহার আদেশে হয়, নিতা অন্তি ছাঁহার বিধান !! स्त्र आख्टाय कनधन, रिताम नर्ष्य कृति छत्न, कैर्न वानि ধারাবরিষণ। তাঁরি ভবে অনুপত, •সুরাসুর জীব স্নত, जिनि जाति जनाति कार्रात ॥ स्टात्रा उन्तर्भ, कृत्त कल नूरमाखन, इय् श्रीत नियमानुनाता । छाहाति अखीव बर्रन, खरमा किया खरत कृत्न, नृत्व जूर्थि बाहात विद्नी-(त ।। व्याम्यनन व्यल्जनन, मृक्क किन्ना व्युक्तिन, पूर्विम कत्नव ৰিস্তার। শর্কগতি সর্ক্রম, কিন্তু সর্কে ছুনিশ্চ্য, নাদ ব্রহ্ম প্রথব প্রকার 🔃 অপার মহানা তার, বুঝিবে কে চমৎকার, नर्ज्ञ नम् क्षातान । नर्जनाकि व्यवनान, व्यवदाना विश्वकान, क्र कीर्द्ध, क्रमगरम शाम ॥

ाः, विक् भनना। जिननी।

মাধবাছ নমোনমঃ, পুরাণ পুরুষোভ্ম, তুমি । स्वाक्तिकात्ना कालीय वतन घटे।, नवीन नीतम इ ্ছেরে মুনি মনঃ বিমোহন ।। সুচাক চরণ তল, জিডা্ট্রী ক্লন্দ্ দল, ভুমর নৃপূর কল তায় ! মোহন মূরলী করে त्रन विश्विका धरत, रम मौधुती छेलमाटकाथाय ॥ ल খান পাতায়র, গলে বনমালাবর, দিরে শিথিপুচ্ছ সুভূ ভনা মেঘে সৌদানিনী প্রায়, সঁজল রিম্মিকা তায়, ব খনু তন্র গণন ৷৷ অধ্রে নধুর হালি, চাহিয়ে সেং রাশি, মৃত হয অন্ত ভাজান। চন্দন চচিতিত কায়, भाक्षा करित काय, नीनकार्छ होतक मीनन।। क মুমুমা নীরে, কখন পুলীন তীরে, কখন বিপিন বৃদ্যাবং कथन कम्य्रगृटन, कथन कालिम कूटन, कथन वा शिति वर्षान ।। कथन निकृक्षवत्न, नहेर्य शिलीशरण, রাস হাস পরিহাস<sup>়</sup>িবলিব সেসৰ কত, পুরাণমত রাং রচিলা দ্বাদশ য়াতা ব্যাস 11.শুন প্রভূ জীনিবাসঃ এ म्सरमञ्ज व्यानः, रेवं उव मध्य गाहि हाई । व्यक्ति ए অন্তরে, থেকোনা অন্তরান্তরে, অন্তে হেন ওচরুণ পা

मक्ठिवमना।। 'मिशमीना

म्हा पूर्व विनामिनी, म॰ हात छि जिकातिनी, व मानिनी मानिछानिनी। महिषामूत्रमिनी, तर्कतीक वि जिमी, कत्रवामिनी मुथ्मानिमी।। मूत्रमत्र ध्यमविनी, पूर अत्यिभी, जूतर्गमंगी तिल्निनिन्नी। छुलि मुक्ति विधायिमी,
नूथरमाक निर्मायिनी, इठ मुखिनी धृठ्वृखिनी।। विठाल
जानानिनी, अतायत निर्नाजिनी, निर्मादिनी निर्मा इनी। अठ उपर दानिनी, अठ उपर छायिनी, निर्मादिनी निर्मादिनी निर्मादिनी।। उप उप निरातिनी, जूत तिल्ला क्यादिनी निर्मादिनी।। उप उप निरातिनी, जूत तिल्ला क्यादिनी, अय कातिनी अय दातिनी। अजीम नन निन्निनी क्याठ जननी, अप कातिनी अय दातिनी। अपिम नन निन्निनी क्याठ जननी, अप इक्षाठ वत्रनी, गन्दायिनी पन्धा-विनी। तक्ष तक्ष प्यामस्य, क्ठाल किश्व अस्य, श्रमना-विनी अनामानिनी।।

#### निव वसना॥ जिल्ही॥

ত্রয়কৃথে নমোনমঃ, পরবুজ নির্দেশ, ব্যভ বাহন
য়োগেশর। বিধুভানু হুঁতাশন, ভালে শোডে ত্রিন্মন,
হিমকর শেখর শক্ষর। শিকেদীর্ঘ চটাজুট, কঠে দীপ্ত
কালকুট, গলে দোলে ক॰ কালের মালা। সঙ্গেতে প্রমথ
গণ, প্রেত ভূত অগণা, প্রিয়ত্ন সিরিসুতা বালা।।
গাশানে মশানে স্থান, নাহি মান অভিযান, চন্দনে
অঙ্গারে সমধ্যান। কিভিনাস পরিধান, বিভূতি বিভূতি
জ্ঞান, বেদাগ্মে ব্যক্ত, সে প্রমান।। ত্রিদশ তরঙ্গে রঙ্গে,
নিয়ত ধারণ রঙ্গে, ভূজঙ্গ সূরস্থ অন্ত নমে। য়ত অমঙ্গল
ভবে, লকলি মুল্ল ভবে, পারকর ভব ভ্যাভঙ্গে। হর
হর শারহর, তাপ হর পাপহর, দ্যারে নিষ্ঠার পুরহর।

श्राम अभर जारम, नवन वनना जारम, मारमञ्जूष

#### श्रात्म वस्ता। जिन्नी।।

শ্বোন্মঃ লয়েদর, পরম্পরাৎপর, তরুণ কলেবর। পঞ্চবজু গজানন, চত্ত্রুল ত্রিন্যন, মহা সুচার সৃন্দর।। হিল্ল বর্ণ বাস, দিক্ দশ পর্দ গলে শোভে দিব্য উপবীত। আরোম্থান্য হার, ভ তে সে চমংকার, বণ শীর্ণ হইতে বর্ণিত।। রতন পায়, মরি কিবা শোভাপায়, উপমায় অভাব উপ সৃষ্টি আদি ছিতি লয়, তব মহিমা নিশ্চয়,সেতত্বে: কেবা পায়।। তুমি বুলা বেদে বলে, অয়োনিসম্ভব ভ হলে হও ভবের আত্মজ। কির্ণা তোমার কর্ম, বে ভাহার মর্ম্যু, তব ধ্যানে মুক্ষ ক্মলজ।। আমি চাহি বর, কর্ষণাকণা বিতর, বি্মুহর বিমুরাজেশ্বর। ত্বং বর্ষণিতা, বিশ্বধাতা বিশ্বপাতা, প্রসাদের দুক্তি বিং

### जूर्या वन्त्रा। जिल्ली।।

মাত্র গ্রায় নমোনমঃ, সংহর কল্যতম, বে ময় সত্য নিরঞ্জন ৷ বুক্ষাণ্ড কারণ তুমি, স্বর্গমন্ত ব্যোম লকলের জীবন ন্যন ৷৷ বেদ প্রাণাধি য়ত, আগ্রম মত, শুনি ভাচে বুকা ভেজোম্য ৷ জ্বাকৃসুম সংক্রাশ্যপ্র মহাকাশ, প্রকাশ ভোমাতে সুনিশ্যম ৷ জ্বপতেজ বাযু, আকাশ গণের আয়ু, ত্ব'হি দেব কৰা দৈশায়ণ। তব অসম্ভবে ভবে, সকলি আকাশ তবে, স্ততি বাদ নহে এ কখন।। গতি একচক্র থে; ভূন্হ অলকাপথে বুল্লাণ্ড দিনেকে জাও লঞ্জি। শুকাও সিজু কমল, প্রফুল্লে ভাসে কমল, কেব। তব মহামার সলি।। সঙ্গে জায়া স্থ-জাছায়া, শনিয়ম মনুক্ষা, তব কাষোন্তব সুরেশ্বর। বা-সকোকনদ পর, ভালে ত্রিন্যন ধর, বরাভ্য কর থর তর।। অরিলে তোমার নাম, ধর্ম অর্থ মোক্ষ কাম, অনা আসে পাষ সকলেন। প্রসাদে হেরিয়ে দিন, চাহিলে দিনের দিন, য়াবে দীন দিনের কারণ।।

#### ं जानीतथि वन्तना ॥ जिननी ॥

নমোদেবী সুরেশ্বরী, ভীয়ানাতা বিশ্বোদরী, সুখোদা মোকদা বেদে বলে। বুল্লদ প্রস্তানি, বুক্তকমগুলু বানী, ধন্য কাশী তব ক্পাবলে। সগর সন্তান য়ত, মুনি শাপে হৈলা হত, নৈ সবের উদ্ধার কারণ। আরাধিলা ভাগিরথ, পুরাইলা মনোরথ, মতাভুন করি আগমন। অপরণ রূপখানি, কোটা সুখা কুপমানি, কিয়া ন্য বুপের ক্রানা ক্রেন। কেমনে কিকেব সামি, কাম রিপু হ্যে কানী করিলেন মাথায় ধারণ। চরণ হল ব মল, অঞ্জলি কমল দল, প্রাপদ কমল নাল তায়। বিপ্ল সৌরভ ভরে, ভুবন আকুল করে, অলিকুল মধুলোভে ধায়।। পরিধান দিকা-যুর, শুধাভাও প্রোধ্র, ভুক জিনি ভুজ্গিনী শোড়া।

রতন কঙ্কণ তাব, অধর মণির প্রায়, চমকে জগন্মনো लाखा।। नाखि नृक्षांमद्यावतः , खरवत सानम इत, जिवलि **হিল্লোল অ**ভিপ্রায়। নিতম্ব শিখর কা**য**, নিয়ত বেষ্টি ভাষ, ক্ষীণ কোটি শৃঙ্গ মধ্য প্রায়া, তথা নানা নণিমা-লা, নিয়ত করে উজালা, অহ রহ ধৃক ধৃক ঘুলে। কেন না হইবে তাহা, জনঞ্ত অ ছে•য়াছ - রতাকর সভবে অচলে।। গলে দোলে মৃক্তাহার আহাঃ কিবা চনৎকার, কর্লেমনি মকর কৃশুল। কেশ গাল কাদয়িনী, স্মিতি श्रिनी (नीमामिनी, कीतिएवेंद्र क्लांटन सन्मन ।। नमनकनक শশি, বিহীন শশাহ্ষ মাশ, খঞ্জন গঞ্জন আঁথি তায়। গিধিনী নঞ্জিত নাশা, পীয়ুষ পুরিত ভাষা, ওষ্ঠাধর প্রবালের প্রায় চত্তভূজি মুশোভিত, শুধাক্ষ্ত সমন্তি, শব্দ পথ চানর য়ে ক্রা বিস্তারি কি কব আর, স্প্সারে নিস্তার তার, য়ে লয় স্মরণ ভূমে তব ৷৷ োগ শোক তাপ পাপ, অপমৃত্যু অভিশাপ, ্তামা, কার ণ নাছে রয়। न्त्रभारत रेकवना मूक्ति, तिमागरम **এই, यू**कि, नित ६ कि वार्थ कचू नरं।। जूनि शक्त चक्तांवाना; एक ভाবে इल हीना, विकाहेरल जिल्लाबनारमाजू। माकि जागितथी जान, क ज्ञान महीय। बात; काल द्वान मि अ ना काल्व ।।

खद्भश्रीवन्त्रना। जिश्री।

নমোদেবী স্বর্ষতী, স্বচ্ছ স্বেত ক্পৰতী, বাগীস্বরী বাব্য বিনোদিনী ৷ স্বেত্বাস স্বেত্হাস, দিক্ দশ প্রকাশ

भः महाविष्ठा विष्ठा विश्वायिनी ॥ .উष्ठीक श्रक्षांक इति, কি বা কোকনদ ছবি, শোভে কিবা চরণ দুখানী। কণক নূপর বাজে, প্রফুল রাজীব রাজে, ভুমর গুঞ্জর মরমানী।। ছেম কদ লির গুৰু, চাকসুগঠনউৰ, কিমা করি কর মনে।-হর ৷ কটা অতি ফীণতর, নাভি সুধাসরোবর, তাহে শোভে অমূল্য অম্বর।। খৈত্নরোসিজাসনা,খেত্সরোজ 'ভূষণা, শ্বেত্ সরসিংজ ভূজনাল ! কণ্ঠ ক্ষু রাজরাজে, নান: অলম্ভার সাজে, মণি মুক্তা মাণিক্য প্রবাল।। প্রফুল্ল পক্ষজানন, তাতে যুগলন্যন, শৃশুশাশধর শোভেভালে। হেরিকিবা অপর্বপ, অতি অসম্ভবৰূপ, কমল কৌমুদ সম কালে ৷৷ বেদাগন তন্ত্ৰ মত্ৰ, ঘণ তত আদি য়ন্ত্ৰ, রাগ অনু-রাগ তান মান। বরপ্রায় ক্রিযাকাল, নৃত্য গীত বাদ্য তাল, শ্রুত কলামূর্জ্নাবিধান।। সকল তোমাতে হ্য, नकन जामार्ड नय, नकन रन जामार्ड निर्मय । स কিছু ভ্ৰনময়, য়ারে তব কৃপা নয়; গণ্য মধ্যে কেতারে शनया वान्याकारिकारिकार, अहत्रव रंगित् गर्व, अन . গ্রাম জগতে অক্ষায়। প্রদাদ প্রসাদ আবে, প্রণতি বিন তিভাসে, নিরাশ্রে বিতার আশুষ।!

नक्ती रमना। जिल्ली।

नंदशलक्यी गहामाया, कीवरणलाइन काया, तुका काया विश्व धामविनी। क्यला क्यला लय, मक्राल क्यल अय, क्यल कृष्य धामविनी। क्यल शामुणीनि, क्यल

वमन गानी, कमालंद पत उष्टाधद । कमन कद निन्छ, অঙ্গুলি কলি তুলিত, কমল মৃণাল বাহবর !৷ প্রফুল্লকমল হাস, আঁখি কমল প্রকাশ, কমল কোমল য়িনি বাস। कमल क्वांतक बत्त, किश्वा श्वा ध्वाधात, भाषा धन छ एष বিকাশ ৷৷ গণিন্য আভরণ, নান: অঙ্গে বিভূষণ, অনুকণ খুকঘুক জ্বলে। মৃক্তা প্রবাল ভারে, মাণিক্যে রচিত ছার, বাল্যল্ভাবে দোলে গলে 🕕 রিনি কোট শশধর, শো-ভে ৰূপ মনোহর, রোমাবলী কলক্ষের ভাগ ৷৷ সুধাধরে সুধালয়, তাই বিমোহিত ময়, সুরাসুর য়ক্ষ রক্ষ নাগ।। কটি অতি ক্ষিণ তর, নাভি স্থা সরোবর, মনোহর ত্রি-বলা দোপান। মূলথ অমৃত আশে, পতিতে অমৃতপাশে ঘটিল কি অপূর্ত্ত বিধান ।৷ কাম অঙ্গ দথ্যময়, অঞ্চার ममून इय, नुद्रानम निलित मिनिएछ। अन्दल-निलि मिलि, धुनप्रके। घन निलि, दिनामावली घटन क्रिएक।। उत अनुकम्ला शारत, 'तिकेन धना म॰ मारत, बाल ७१ সকলি অলীক ৷ পুনি য়ারে হওবাম, লক্ষীছাড়া তার নাম, नत्व जात्त्र केंद्र धिक्ँ धिक्।। जव नाम चारम्। धिन्। স্থপাত। হৈল। হরি, তব দ্যা-সুপের কারণ। বুকাহাপি পুজা হয়, ইদি ভার লক্ষ্মী রয়, বিধি কৈলা বিধি নিজ श्व ॥

शृक्षयांक्रम वन्त्रना । जिल्लाना ।। समा नरभाक्षणवाच, मूलका वनार माच, क्रामा थल्

निटा नित्रक्षन। कानीय वद्य हुए।, , नजन जनम घए।, বুক্ষরপ ওঁকার গঠন।। সদারত্বদীশাজে, মণিম্যা-मनमार्क, উপবিষ্ট ভাছে ভগৰাম। চরণ রাজীবরাজে, সুবর্ণনূপুর বাজে, নীলকান্তি পুরুষ প্রধান ৷৷ বছরত্ন श्रिशाल, ललाएँ मानिका बुत्न, नकत कूछन कर्न শোভে। চন্দন চর্চিত কাঁয, নৌরভ উপজে বায, মধু বুঁত ভূমে মধ্নোভে।। পরিধান পীতবাস, দিকদশ পর কাশ,মুখে মৃদু মৃদু মধুছাস। হেরি পুনঃ রাজবেশ,সেরপ बार्भित्र त्मय, निद्र मिन किती है दिनाम ।। शब्हक भना যুদ্ধ, সুশোভিত চত্তভুদ্ধ, কথন অকর ভাবে রও। কে পায তোমার মর্মা, কেজানে তোমার ধর্মা, করহীনে সুখে কর লও।। দার বুদ্ধ ভাবানিভ, বিফুপঞ্জরে নি-र्भिज, हे नापूर्य गूर्छ ध्यकानिना। भौहेना व्यश्वस्यत, বাহল্য বলা বিফল, ছেলে অন্ন বুলা নানাইলা।। মনো-হর পুরিখানি, রথ। সি । ছারে জামি, দারিবাত্রবাপি হনু মান। জগতের কোনভার, সম্বন্ধে নাহিক তার, তথা षाति नर्सनकियान।। উৎकन थएखत्र मृष्, नीनात वि-ন্তার য়ত, কত কব সে মত বিস্তার। কৃতৃ হও বিষ্তান্দা কভুটভরবাৰ ত৲শ, সাক্ষি শক্তি বিমল। তাহার।। শুনহে नीलमाधन, बना खन कि विভव, अमारमज वामना जाना है। चल्छात्र (थरको नर्यामा, चल्डत इउना कमा, चारल प्रान उ **छत्रण शाह्या** 

#### श्रीताच वन्त्रना। विश्रमी।।

রাঘবাষ নলোনমঃ, পরাৎপর নিরপম, কৌশল্যা मन्म कनार्षान । नवमूर्वापन नाम, कानकी कीर्यनदान, গুণধান সভা সনাতন ৷৷ রঘুবংশ অবতংশ, পূর্বুজা নচ ष्य- था, ष्य दर्शानी नखन द्रभाषायः।। क्यक्ति रनुमान, সুগুলিদি জামুবান, নিত্য সর্থা বুরিবে কে মাযা।। পরি ধান শ্বেতাম্বর, অথিলের ননোহর, চন্দ্ন কেশর দিবী কাষ। বে শোভা কছিব কাষ, কহিবারে নাজ্যায, বুঝা জায বুঝান না জায।। চরণ রাজীব রাজে, রতন নূপুর বাজে, ভুমর গুঞ্জর স্বর তায়ণ ভাবাইতে ছেন ভাব, ভক্ত জনে ভাবিভাব, মনঃ মধুবুতে দাঁপে প।য ।! গলায হীরক হার, দীপ্তি অতি চুমংকার, সিরে মণি কিরীটি উছুল। উজ্ল কুণ্ডল কর্ণে, কিবা দুর্জাদল বর্ণে, কেত্র মাজে न्था र संख्ना। कमन म्वान जूक, कत्रजन कृतायूक, কোদও শাযক ধৃত ভাষ'৷ বদন অস্থ্ররাজে, মৃগমদ্বিদ नाष्ट्र, পুভরীকে কর্শিকার প্রায়ণ হরধন ভঙ্গকৈলা, সীতারে সংশ্রুতি লৈলা, পথে বিমু য়াসদগ্নি সহ। করি তাহা নিবারণ, অয়োধ্যায় আগমন, অনাসে সহিলা নে দুঃসহ্যা পরে অরণ্যে গমন, ভরতে রাজ্য অপণ, খরদুষ-ণাদি বিনাশণ।মারীচের নিপাতন,সীতাসভার হরণ,দশা নন কুর সংহারণ।। ইত্যাদি কতেক আর, কহিব লীলা विखात, विथा क दान्ति को तागयण । श्रजान उभन जारम, विवि व नम्नाजातम्, व्याद्य द्याम पिष्ठ जीवद्रद्यु ॥

## वीमन् (थम् नन्दना।। जिन्हो।।

ন্মোপ্রেম মহাজন, পরাৎপর পুরাতন, অখিল বুন্ধাণ্ড নিকেতন। সকল ভোমাতে হ্য, সকল ভোমাতে লয়, সৃষ্টিস্থিতি সং হার কারণ ৷৷ নিগৃঢ় ভাবের ভাব, প্রক তিতে আত্মা ভাব, ঘটনাম মৃফির বিন্যাস। এতাৰত। প্রেনজন্য, জগত প্রকট গণ্য, নত্বাতে৷ সকলি আকাশ ॥ কৈ বুঝে তোমার কর্ম, কে বুঝে তোমার মর্ম, কেজানে তোমার ধর্ম য়ত। তব অনুগত গ্লেই, সৎসার সাগরদেই, পার হ্য পতক্ষের মত।। পুরাণে প্রমাণ জানি, তব ভা-বে বজুপাণি, অয়োগ্য নয়ন স্মুক্ত হৈলা। তব ভাবে মুর অরি, নিত্যধান পরিহরি, বৃদ্যবনে লীলা রসে রৈল।।। তোশার করণা রারে, শেজন মান্য স্পারে, সকলের হ্য প্রিয়জন। ত্নি য়ারে হও বাম, অর্নিক তার নাম, ধিক ধিক তাহার জীবন।। অপার মহানা তব,বিস্তারিযে কতক্ৰ, অসাধ্য কি সাধিবারে পারি। ক্ষণে হযে অনুকূল কর ইত্রসমত্ল, কণে কর নাচের ভিক্রারি । কাৰ কর नर्सनाम, कांबकक लीयमान, कांब हार्टें ध्रतिन उ है। दर काकन्थ प्रमथ्कात, काकन्ध्य श्रांतावात, म्शाल कुक्त (मर्थ कॅं। दम्।। व्याङ् (श्रम मया भय, এই मन्न वेंक्षि) इस, নাছি চাছি বৈভব মুম্পাদ। হরি প্রেম দি এমনে, মত হযে :म्हतंत्न, व्यञ्ज (त्रन भारे हतिशह।।

# শ্রীজগদীশ্বরায় নমঃ ॥ নমো ধর্মায় মহতে॥

# গুছকারের আভাস।। অথবাভূমীকা।।

কোন প্রস্থরচনাকালে জগদীখরের ক্ষরণ মনন
চিন্তন পরে মহাকবিগণকে নমকার পূর্কক থেকণ গুস্থ
ভাহার সার মর্মাৎশ অগুভাগে বর্ণন করণ রীতি ভদনুভারে নিবেদন য়ে নিত্যানন্দ নির্লেপ নিপ্তাণ সজিদানন্দ
য়িনি ভূভূ বিশ্বাদিতে সবিতা রশ্মিরপে ব্যাপক তন্ত্রপ
মহাশুন্য, মহাশুন্যভারা শুন্য, শুন্যভারা বাযু, বাযুদ্ধারা
ভেজ, ভেজদারা জন, জলদারা ক্ষিতি, এই পঞ্চ ভূতোভূত ক্রনে এই বিশ্বস্তরা ভূলোক তদপরি উপযুর্য গরিরপে
স্থর্গ সংজ্ঞায ভূবলোক ও ন্বর্লোক ও মহ্লোক ও জনলোক ও তপলোকও সভ্যলোক নিম্নে পাতালাখ্যায় শত
ল ও বিভল্ও মুতল ও তলাতল ও মহাতলও রসাতল ও
পাতালও মদনদী সাগর কুলাচল নহারণ্য লরবাদ্র পশু

পাক্ষ প্রেত রক্ষরক নাগাদি, অনন্ত প্রেচর ভূচর জলচর ইত্যাদির সৃষ্টি বাহল্য ক্রমে মহাশুন্য ভাগে নাদ শব্দ ওঁ কার নষগু পুমান্শক্তিদারা উচ্চার্যমানে জগৎব্যাপ্ত মতে সর্বভূতান্তরে বিরাজিত হুইল তাহার প্রত্যক প্রমাণ বক্ষমান বিতকের বিরোধাভাব য়থ৷ স্বীয়শুব্ৰে অজ্লিদানে মননে সহসা প্রণবধুনিং অবিরোধে হুদোধ হইবেক সুতরাণ বিতর্ক কি তদন্তে ঐ নাদৰূপ দারা য়াব-দীয় শব্দ শাস্ত্র প্রচার তদ্বিস্তার নাদের দ্বি একৃতি প্রথমা অকৃতি দ্বিতীয়া সুকৃতি সা অকৃতি ধ্ন্যাত্মিকা, সাস্কৃতি वर्गाञ्चिका, धून्माञ्चिका विधादाय विভূক्তा नार्थ उथा नार्थ নার্থা, আঘাতেও পতনে অর্থহীনশন্ধ বোধ মাত্র, मार्थ इथ। वामामित वर्गन समक् समक् सा सा सा सा বর্ণাত্মিকা য়থা, নিরাকার প্রতিমৃত্তি পঞাশদ্ রূপ হর হল আগ্নিকায় সৰ্ব্বশাস্ত্ৰ প্ৰকাশ তৰাখ্যে সঙ্গিত শাস্ত্ৰ অভি সুক্ঠিন য়াহার মর্মবোধে উক্ত শাস্ত্রকণ অপার পার:-वीर्त्र निमन्न मकाय, नत्रकृती ७ व्यम्तारिं कृता, जूकी क्रम्पव · ধারণ করিতেছেন ৷৷ তংসঞ্চিতশাস্ত্র প্রকাশক সোমেশ্বর প্রথমতঃ সপ্তসরেরস্টি করিলেন মুথা, খনজ, রিমভ, शाकात, मधाम, शक्षम, रेथवंड, निथान ॥ थ्र वा मयुत्रमारका **পম খ্রজ্মর, ড়েক বা চাতক বাগোরবাকার রিথভম্বর,** গাৰিৰা অজাশক সদৃশ গান্ধারম্বর, কোকিল বা ক্রৌঞ শ্বনোপন মধ্যমন্বর, কুসুম কাল কালীন কোক্তিল কাকলী कुलि जिल्लाम्बर, व्यवन न्याम् देशव करत, कुछ बर्त हुन।

নিযাদস্বর, ঐসপ্তয়রের সোর্ত্নামানিজীগণ যুগা, খরজের চারিন্ত্রী, কমোদতী, মন্দা, ছন্দবতীন দঘাবতী॥ বিষডের তিন, রঞ্জনী, রতীকা, ৰাদ্রা ।। গান্ধারের দৃই,ক্রোধা, বীজ त्त्रथा।। यदारमत हाति, श्रमःतिनी, शास्त्रकी, मार्ड्डनी, श्रही।। शक्षस्यत्र हाति, त्रका, जिन्मशर्नी, **भानाश**नी, मन्द्रजी॥ देश्वराज्यिन, जवत्वा ताहिनी तस्य।। नियापत पूरे, কো ভনী,উপু।।। সপ্তস্থরের পুত্রগণ রথা, খরজেরপুত্র ভৈরব রাগ, রিষ্ডের পুত্র মালকৌশ, পাঁন্ধারের পুত্র হিণ্ডোল, मरात्मत প্রদীপক, পঞ্চমের প্র মেঘ, বৈধ্বতের পূত্র শ্রীরাগ, নিয়াদ নিঃসন্তান। লিখিত ওষট্রাগের প্র-ভ্যেকের ষট্পত্নী য়থা, ভৈরব রাগের রাগিনী, ভৈরবী, विज्ञाती, मधमाध, वृक्षाली, तामकली, आहिती॥ माल-কোশ রাগের রাগিনী, চৌড়ি,গৌরী, খাস্বাযতী, কোকৰ, भुषताहै, श्रीतमात्रम ।। हिट्छान बारमत तामिनी, ननज, रवनायन, शहमक्षती, शुक्रती, शुक्रया, विनयन ॥ मीशक ब्रालित ब्रागिनी, एम्मी, कारमाप, क्यात्रा, काफी, वंजन शनानी, भाने में।। भीतारशत ताशिनी, वन छ, धना में, আশামরী, ক্ষর্মন্তী, পরন্ধ, মরস্বতী ৷৷ মেঘরাগের ब्राभिनी, रेष्ड्रबी, जुलाली, नबाबी, रम्नकाब, भाइक, সোরটী।। অপর সক্ষিতশাজে গ্রামতাষ্ রথা, উদারা, स्माता, जाता।। मृष्ट्रना वक विश्वां प्रथा, शीशी, विखातिनी, कमनी, वातामिमी, वानाभी, वयका, अत्या रिनी, भारकारि, विद्धातिनी, निर्मिती, कामिनी, खुनाशी,

निथंता, रिप्तांपिनी, जड्डा, चाथांद्रिनी; (कांग्रजी, विभा मिमी, जाननी, मीर्च, जारमामिनी ।। जनशामरधा ত্রয বিশ্পতি প্রসিদ্ধ গমক য়থা, নিষ্পত, জান্দোলত, পুরাহত, আহত, কম্পিত, করতুরি, প্রস্থাহত, শাস্ত, তুরত, ধর্ষণ, অসপুরাহত, আঘুর্ষণ, ছাওত, মুদ্রা, মো মস্থান, অত্তাহত, ঢাল, পুঢালা, করসোমস্থান।। অপর পদ্ধিত শাস্ত্রমতে তান্, মৃচ্ছ্নালক্ষার, আলাপ চারি, वापि, बिराषि, अनुराधि, भश्चापि, ठीए, शृङ्, रिष्किंड, তিওর, কমল, শুদ্ধ, শালম্ব, বিনাশ, লঘু, গুৰু, দ্ৰুত, অলোপনইত্যাদি বহুবিধন্ধপ্রদাধনাদি কুত্রগুছের বাহল্য ভূমিকা অয়ৌক্তিকজন্য লেখনীকে অবকাশ দানেই আ-श्रृ इहेनाय তবে नाता भा नानि चित्त अन्य उज्जन। शृक्र शाहा निथिত इहेन उपिक आदी किकिश निथिउना য়থা, সোনেশরকৃত ষট্রাগ ঘট্ত্রিৎশত্ রুগ্গনীর অঞ প্রত্যঙ্গ অপশাপশ মিলনে চোমান্নকোটি, ছ্বলক্ষ, ছ্য সহসু, হ্যশত, হ্য,রাগ্রাগিনীর পরিমান সেকল দে শীনামে বিখ্যাত অর্থাৎ সোমেশ্বর কৃত রাগলৈগর্ অন্য লাযকাদি গায়ক কৃত রাগ দেশী তাহা ভাগত্রে বিভুক্ত মুখা, সপ্তম্বর বিশিষ্টরাগ সম্পূরণ, বট্যর বিশিষ্টরাগ খা ড়ব, পঞ্চম্বর বিশিষ্ট রাগ গুড়ব, তম্মধ্যে প্রচলিত শতা-ধিক ষড়বি শভি ভদ্বিস্তারার্থ অশীতি সম্পরণ রাগ अशिवेशिष विथि उवा ३था। श्रीतात्र, मीलकं, यानकीन, গৌড়, মালোধা, বিভাষ, দেশকার, বেলামলী, ধনা 🗐,

ৰসন্ত, গুজরী, গোরা, কুমারী, শক্করাভরণ, অজ্ন, টোড়ি मूबंछि, बाबायनी, जायकनी, नामबायकब, मुचबाहै, िक्जी, म्बाक, कार्यानो, भाशीकारमानी, नाब्रङ्ग, म्बन्धाव, দেওগিরী, আশাষরী, মনোহর, দেবয়তী, বরারেকা, बजाती, श्वत्र बजाती, यट्नाटवाधि बजाती, नाग्वजाती, বিরাগ্ররারী, প্রতাপবরারী, বিষোগ বরারী, কল্যান্ বরারী, খট্, টস্ক, সৌদামিনী, উরঙ্গ, ত্রিবেণী, পুরবী; পুরবীসার্ত্ন, সামস্ত, মৃকুন্দ, মাঝ; কল্যান্, আভিরা, বড় হ্পন, शहे मक्षती, शासात्रशीत, क्लांहेशीत, व्यनख शीत, नातायगरशीत, नहे नातायग, नहे, मानक्षनहे, हाश नहे, कात्मापनहे, व्याचितिनहे, कन्यान्नहे, शासातनहे, বরারিনট্, সিন্ধোরী, লীলামী, ভথারী, ভৈরবী, দেশী, भावक, जानकटें उत्तर, भक्षत्रानक, गावदी, त्राक्षरानी, जुत मत्रो, वयताणि, मान्यी, इंडि ॥

অথ ত্রিং শংল খাড়ন রাগ রাগিন্যাদি রথা, বরা শাল রাগ, কলহু স, ধনাঞ্জী, নালফ্লী, রক্তহু স, উত্রা গুজ্জরী, ফুলমতী, তারকটোড়ি, গুণকলী, সুরটি, কঙ্গল, ঐরাহৎ, তারক হিস্তোল, প্রাণ, বেহাগ, খায়াযতী, কুল কপ্প, বাহারি, চক্রধর, শালগ্রন্ট, মঞ্জুঘোষা, মালব গৌড়, কলুতক্ল, মল্লারী, ললত, মেঘনাদ, আশাযরী, মনোহরা, নালকোশ, সুরটা, ইতি । অথ যুষ্ঠাদশ ঔড়ব রাগরাগিণ্যাদি রথা, ভৈরবরাগ, ভূপালা, বঙ্গালী, ধনাঞ্জী, মধ্মাধ, রেওযা, ছাষাটোড়ি, হু স, রত্বাবলী, হিস্তোল,

কোকিল, জযেতগৌরী, গৌরসারত্ন, মেঘ, পঞ্ম, কে দারী, ইতি। অপর লিখিত রাগাদির কিযুত্ পরিমাণ নামান্তরে ব্যবহার হইবায গায়কগণ সন্নিধানে তাহাই ব্যবহার্য তদ্বিস্তার বহুবাহ্ন্য শঙ্কাষ লিখিতে শঙ্কিত হইলাম কল য়াহ। ব্যবহার তদনু সারেই সাধন। নির্বাহ ক্রিতে ছইবেক ৷৷ অপর গাঁন বিস্তার য়থা, প্রবন্ধ পুর্ र्णम् वा (थात् शक् म जिल्ला द्वावायी (थम्ही दिश्वा इन रहाक् বিষ্পদ খ্যাল কওল তারানা কালবানা মস্কগুল টপ্পা চোত্কলা বারেয়া জক্রী কড়খা শাওড়া ডোমড়া কবি।। বাদ্যবিস্তার য়থা, আনদ্ধ, শুধির, ঘণ, তত, চতুর্বিধ দারা, নানাৰূপ বিস্তার য়থা, চর্মা নির্মিত আনদ্ধ হইতে দুন্ধি, ভেরি মঙ্গল, করট্, ঢোল, ডুম্ক, মৃদঙ্গ, তাশা, एका, बक्क; घট, উक्का, जिवनी, शर्टेंश, प्रशामा, नियान উकाती, जूब्की, ठव्ना, ঢোলক, फक्क, शाथ्उराज माता, টেকারা, नकाता, गामल, थक्षनी, ইতি॥ ফুত্কার 'ঘটিত' শুষির হইতে বংশী, মুরলী, মুধুকরী, রণশিঙ্গা, कारहाला, जब, तन्, ভाরङ, जतनाह, नकंति, जात-গিন, রামসিঙ্গা, বাঁক, ভমুর, বিঙ্গা, ইত্যাদি ॥ আঘা তো থিতঘণ হইতে মন্দিরা, কাণস, ঘণ্টা, কর্মান্ডক্তি, পদাদ্য, জযঘণী, করতাল, নুপুর, যুস্কুর, খট্তাল, ঘটি কা, সপ্তমরা, জলতরঙ্গ, ইত্যাদি।। তন্ত্রজড়িত ততহইতে बीना, जानाशिनी, একতত্ত্বি, षिठछी, मञ्चरकी, जूबूदा, त्रवाव, अक्छाता, (माछात्रा, (मछात्रा, नाहकी, (व श्व

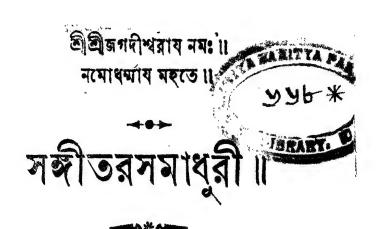
গেটার, পিযান্পোট, সোরোদ, বরবত, এরগনু, ইত্যা-দি ৷৷ ভালবিস্তার য়থা, হ্রপাকাতীর নৃত্যধারা ভালের সৃষ্টি বিশেষতঃ, ছরের নৃত্যের নাম তাগুব পার্কতীর ম্তেরনাম লাস সেই উভবের আদ্যবর্গুছলে তালা, শব্দ উত্পন্ন বটে কিন্তু মহাক্বি নাযক গায়কেরা তাল আখ্যাষ বিখ্যাত করিলেন তচ্চ বছবিধ ৰূপ এছকিঞ্ন কৃত শব্দকম্প তরঙ্গিনী অভিধানের ১৭৭ স্পৃষ্ঠায় দ্রন্তীয় অপর নাযক,গন্ধর্ম, গুণকার, কালাওত, কও্যাল, আতাই, ঢাভ়ি, ভাঁড় ইত্যাদি গায়ক লক্ষ্য, ও গায়কের দোষগুৰ, ও রাগ রাগিণীর সময কাল ঋতু অধিকার, লিখিতে বহুবাছল্যের সম্ভাবনা তবেসগ্গিত সান্তানুসারে কতিপ্য বিধি সম্বেণে লিখ্নিতব্য য়থা, কখন রাগরাগিণীও কখন রাণিণী রাগেরনামে উক্লার্য মানহ্য ফলতঃ রাগ রাণি-नी छेडवाक बानवनाय पाय विवर्धाः , पिरत्या कान সম্যের রাগ সর্কান্যেই গান করায়াইতে পারে রাত্রীর ওঐবপ বিশেষতঃ শ্রোভার ইচ্ছাই সময তাহাতে অহ রছের বিরোধাভাব আরকোন গানশক্তি শুনা ব্যক্তি স্থিত সাম্বে পঞ্চ হইটো তাঁহাকেও স্থিত পণ্ডিত বলায়াইতে পারে অপর এতদেশে অনেকে বেতালা গান য়েবলেন তাহ। মহ চীভুম য়েহেতু তালকাও নৃত্যের কারণ शास्त्र क्रमान्य তবে তालप वाक्तित। भारनत महुन मह्म অনুগত ছইতে শক্তছওয়াতে আধুনিক গায়কেরা গানের সহ তালের ব্যবহার করিয়াছেন সতরাং গান্তালানগত

নভেয়ে বেতালা হইবেক অধিকন্তু প্রমান নারদ মহাদেব প্রভৃতির গানের সময় তালের প্রদত্ত্ব থাকেনাই রেগা-নের নিমিত্ত তালের সৃষ্টি হইষাছে এতাবতা গীতানুগত ভাল তাহার অন্যথা কি তালসঃ মাইবেক বলিয়া তালদ গণের নাম নঙ্গত জপেবিখানত জার আধুনিক এক রীতিরে দুইকি তিন রাগ একত্রিকৃতে এক এক রাগবলেন ও কোন কোন আধুনিককত ক (সইরাগে সংগীত রচনা করাও ছই যাছে তাহাসতি নিন্দনীয় সঙ্গিত প**্তিতেরা ঐরুপ ক্রি**যা-কে জারজ ক্রিয়া কছেনইত্যাদি।। (অপরঞ্ এই সঞ্চিত শা-জ্রের য়থার্থ বোধ হিন্দুজাতীতেই জগদীশ্বর অর্পণ করেন বটে কিন্তু য়বনেরাও দামান্য নছে প্রায় হিন্দুজাতির সম जुल गग्रह्रेयाहिल कल जारा हिन्दू अध्याभाकत अभाषा छ নিছুবা আরবস্তান কারস্তান প্রভৃতি স্থানে অদ্য পর্যান্ত ভকেবল পারসিক রাগ অহৎ রই অ্ন্যকিছ্ চলিত নাই-অনুস্কান করিলে বিশেষ জানিতে পারিবেন তাহাও कानकारन এইদেশ इट्रें शिया हिन मुल्लु जिला मित জন্মভূমি বঙ্গরাজ্যে সঞ্চিত শাস্ত্র, প্রচার করণের মূলাধার মহাকবি ৺ প্রাপ্ত রাধামোহ্ন সেন মহাশম তাঁহার কৃত স্কিত তর্প গুৰু প্রস্তু হওনের পূর্ব এতদেশের লোক ভুষরাকে তান্পুরা কছিতেন একণে অনেককে আতাই কাল্বভ্লকণে লক্ষণাক্রান্ত দেখা রায় সুতরাণ সং ক্রীন্দ্র সেন মহাশ্যের গুণ এতদেশের জন্পদের হৃদ্যে শিলাক প্রায় অক্টিত রহিষাছে। জলক্লাভরেও বিকা

রণ হইবার নহে. এতাবতা ভাঁহাকে এবং অপরাপর কবি কোবিদ মহাশ্যগণকে নমক্ষার পূর্যক করপুটে নিবেদন য়ে এঅকিঞ্চন ১৪ চতুদ শ বর্ষ বযঃক্রমাবধি ত্রিৎশত্বর্ষ পর্যান্ত য়ে সকল সঞ্চিত রচনা করিয়াছিল তাহা মুদ্রাঞ্গকালে একের সহিত অপরের ভাবের ঐক্যতা এব প্রাচীন কোন কোন কবিতার ভাব এবং বিন্যাস অন্মদকৃত কৰিতায় পজিতদ্যেই তথা বিজ্ঞাতে প্রায় চতুর্থাৎশের তৃতীয়াৎশপরিত্যাগে একাৎশপ্রকাশ করিলাম ইহাতেও য়দি ভুমাধীন প্রাচীন কবিতার বিন্যা न रेमव वर्भावः পोकजः कान मङ्गीरक পতिত इहेगां, थारक তদ্তে এ অকিঞ্নের প্রতি দোষারোপ না করেন কা-রণ কবিতা রচনার স্বভাবধর্ম এমনি একখানি আছে য়ে য়ে কবিতা কখন কর্ণেস্থান পায়নাই শুনা য়ায়নাই তা-হার ভাব বিন্যাস রচনা্কালে সহসা আসিয়। উপস্থিত হ্য কবি ও কোবিদ মহাশ্যেরা এক্থারমর্মভাল বুঝিতে পারিবেন , অন্যপকে বন্ধ্যার গভবেদনানায় অনির্বোধ নীযতবে কুচক্রীনিন্দুকগণের স্বভাব য়েনিন্দার অনুগামী সে नकलात नानि निकाय प्राय विदंश कातन छाड़ाता निका ব্যতীত নান্দী রীতি পদ্ধতী আদে৷ জ্ঞাত নহে সুতরাৎ সে अल करनद कथाय कि चाहरत याय नांखिकता निक्रमः-नामत অভিত্তের বিরোধ জ্যাইলে কি ঈশর নশ্ব হই বেন এমত নহেঁ, অপর ইহগ্রন্থের স্থানে হানে অক্ষদ স্ব কান্দের অভাবে মেজগুদ্ধ ও শব্দের উলুতঃ পুলতঃ রহিল

তাহার বোধার্থ অন্যকোন রীতি নাক্রিয়া দ্বিতীয় বার মুদ্রাহ্মণ করণ স্থির করিলাম সেপুত্তে ইহপুত্ মুদ্রাহ্মিত इउत्तत अञास्तत कारन स्म मकन मिष्ठ श्रेयु च इहेगाह তাছাও থাকিবেক, আর গানের সময কথক গুলীন বিফল শব্দ দ্বরের বিশ্রান জন্য উচ্চারণ করণ য়ে রীতি **हिल ज चा**ह् जर्था थ यह मिथ महे चात है। दि है छा। मि প্রিত,নুগত বাক্য গাযকেরা ভালজ্ঞাত আছেন বলিষা বি-ন্তার করিলামনা সম্যানুসারে সমাধা হইবেক অধুনাগুণি গণদমাপে নিবেদনয়ে ইহসঞ্চিতরসমাধুরীগুল্থে য়দি কোন অশুদ্ধ কৃম রচনা বিন্যাস হইযাথাকে তাহা স্বীয স্বীযশুদ্ধ বৃদ্ধি গাখ্যে পরিশোধিতে শুদ্ধ পাঠে কৃতার্থকরিতে অনু কম্পারাখিবেন য়েমন অঙ্গারের মলীনত্ব অনলয়োগে নিরাকরণও পরিশোধিত ও পরিহার দেখিতেছিতেমনি ज्वित्रन अमारम अमारमत चंडात कि चन दिखातन ।।

> অকিঞ্চন ভীজগুলাথ প্রসাদ বৈসো মল্লিকস্য নিবেদন মিতি



# আজানা বাহার অনুরাণিণ্যা ।। মধ্যমান্ তালেনণী্যতে ।।

त्राग जन्ताग जाजननः, रेवंतागानहेर्य। धुः ॥ अठ जिन्नान किन, श्रम उरहेरय ॥ \* ॥ जना जाव श्रम, जूर्य कित्र व इत्र , जानना जारत कि लाव, जीवन इतिर्य ॥ ऽ ॥ नायाशास्त्र वस्त इर्स, केलज मन्त्रीम नर्स, जूर्य जाह घूमाहेर्य, मिन काणिहेरय ॥ \* ॥ जावना कार्णत जाना, केंद्र जानाश्रद जाना, मिश्रिवर केंद्र मृष्ट, तिहर्द शिष्ट्र या। २ ॥ मिर्क् जाव पड्रजान, मिर्छ मस नायामान, महानिजा जानारत्रं, मिरव लूणेहेरय ॥ \* ॥ मनरत्र व्याह त्रक, जरबार इत्र मठ, धर्मत काहिनी हाता, मास्त्र स्निर्य ॥ ० ॥ बिष्ट खान खाल माना, जूनना जूनना ११ धु॰ ११ तय विष्म नय, काथा, वनना वनना ११ ऋ ११ एवमन कावनजात कार्मा (महेन्य)। कर्वद्र मर्क्त काथा मीदि कीत क्या ख-म्ट चम्डमय, जवाय शद्दा इय, विज्कि विज्कनय, कानना कानना ११ २ ११

नयन जतिनात्म, তात्नकानील छेश्पल ॥ धुं ॥ छे कृल कङ्गल भरक्ष, हेकि विघरेन। श्राण, ज्याखारम वृद्धह्र कल ॥ ॥ ॥ तम भरक्ष ममरनायात्र वताह छे ठिल । मम कृषि जूथातरा श्र श्राण कित्रल ॥ (य क्रिल मान ममूह जमूरल निर्माल श्राण कित्रल जाहा जकल ॥ > ॥ निवात मध्य ज्यात विलयनाच्य । किकानि भरत्र छ भरत कि श्रमाम इय ॥ कात्रण ज्यात्र ज्यात ज्यात ज्यात ज्यात ज्यात ज्यात ज्यात व्यात व्य

क्ष्मात श्रम श्रांग, इत्य वन मस् विक ॥ द्वः ॥ ज्ञि । ज्ञि । ज्ञि क्ष्मां , त्रम्थनिशि श्रांग, त्र्यदिक विभवीक॥ मा। भारत्य श्रमिखन बद्धमां भारत्य । त्रांभन कात्र मनश्रा- महिलान । नाकानि त्रांभि महिला क्ष्मां कि क्षांनि कि श्रम् । ज्ञांनि क्षांनि कि श्रम् । ज्ञांनि क्षांनि कि श्रम् । ज्ञांनि क्षांनि कि श्रम् । ज्ञांने क्षांनि कि श्रम् । ज्ञांने क्षांनि कि श्रम् । ज्ञांने क्षित्र क्षांनि । विश्वं कि कि विवास में क्षांत्रकात्र ।। व्यव्यव क्षांत्र विश्वं नि विश्वं । श्रम् । ज्ञांने । ज्ञांने । ज्ञांने विश्वं नि विश्वं । श्रम् । ज्ञांने ज्ञांनि । ज्ञांनि ज्ञांनि । ज्ञांनि विश्वं । ज्ञांनि । ज्ञ

মূল নির্মূল করিযে, প্রাণ, সম্মান কর রোপিত।। ২।।

বিরহিবধিতে সখী, নাধব ঋত উদয় । ধুণ ৷৷ বিচারি কার্য্য কারণ, বুঝ হ্য কিনা হয় ৷৷ \* ৷৷ মল্যার সমী-রণ, মন্দ মন্দ বহে ঘন, বলে আয় বিরহিগণ, দক্ষিণে রাবি নিশ্চ্য ৷৷ ১ ৷৷ বন প্রিয় প্রিয়রণ, অনর্থ কারণ সব, কুল কুল মর্মা কব, অনুক্ষণ কুল্ময় ৷৷ \* ৷৷ পল্লবিত তরু কুল, বিপল্লব তরুকুল, বুঝাতে বসন্তমূল, স্থাবে কুল এ সময়, অথবা, কুলহান এসময় ৷৷ ২ ৷৷

মহামোহ মাধাবসে, মহীতে কেন মোছীতে 11ধু-11
বিহিত বিহিত জান, বৃঞ্জিতে থাক বঞ্চিতে 11 \* 11 বিষয়
বিভব সব, উৎস্থে সাধ উৎসব, সেশব য়ে শবেসব,
ভাবিতে হবে ভাবিতে 11 > 11 দিব্য নেত্র নির্ঞ্জন, সদা
হও নির্ঞ্জন, অঞ্জনে কর রঞ্জন, বাবিতে রবে বাধিতে

।। \*।। 

भक्ष भाष्ठि निखांत, বিস্তারি কি কব তার, মো
भक्ष त्रणांतरः 

।। ২।।

#### 金の金の

व्यानाहाहेंगा, व्यथवा व्यानाहेंगा, धून्।।
कन एकाना। बिना बिना क्रांग केंगा, खनधाना
कान एकाना। बिना बिना क्रांग क्रांग, खनधाना
कान किता। क्रांग क्रां

আছে গিরি নাছেরিযে, মুথ তনষার।। ধ্রু ।। কেমন করিছে প্রাণ, নহে কহিবার ।। ঋটনতি য়ামাতার পুন, কপালে বুলে আগুন, তিনি নাকি নির্গুণ, শ্রাণানে বিহার।। ১ ।। বিভূতি বিভূতি ছাই, উমারে মাথান ভাই, কিরপে বালাই ছাই, মাথে মা আমার ।। \*।। কন্যা সেতো ধন্যা মান্যা, মম্মন্য সদা দন্যা, পোড়াভাগ্যে, প্রড়ে হলো, পোড়ার সংসার।। ২ ।।

য়াহ গিরি হরপুরে, গৌরী আলিবারে ।। ধুনা হেরেছি
অপন প্রাণ, কাঁদে কহিবারে ।। া। রামাতাতো দিপমর,
কৈলাশ শাশান ঘর, ভূত ভৈরবের ডর, সহিতে কে পারে
।। ১ ।। বেছে ঘুচে কুলমান, তন্যা করেছ দান, নকুল হরের
কুল, দুংখ কব কারে ।। \* ।। তন্য ভুবেছে জলে, কন্যা
জন্য প্রাণ জুলে, দিলে য়েন ফেলে জলে, সোণার উমারে
।। ২ ।।

এমন আশা হইতে,না আশা ভালতো প্রাণ ।। ধুং।।
আশা,নাত্র আশার্গার, নহে আশা সমাধান ।। \* ।। রে
মন জীবন ক্ষয়, হইবে বিষম ভয়, মরণ হইলে; নম, মরণ
স্থাতনা জান ।। সা৷ বরঞ্জ অন্তরে রব, মনোদুংখ মনে সব,
দ্যি দক্ষ কেন হব, রবধরি তবধ্যান ।। \* ।। আনি হরি
ষেতে সুখে, দেখে মরি মনোদুংগে,তুমি থাক অধ্যানুধে,
বল একোন বিধান ।। ২ ।।

खात, मनः कालीशाम, किन मजना ॥ धु॰ ॥ ज्ञांन खन्दाश्वल, किन्निना ॥ \* ॥ विषय (म वियमय, काल इय काल नय, याटि इटव लयंडोद्ध, जूटल ३ मिथनो ॥ ॥ भागामानश खश्चलश, किनाश किन्दिक्षश, काम द्विश्र द्य द्वाश्वल, कारमाड महाना ॥ स्था नवीन नीत्रमद्वल्म, स्थाटि इत क्षिप्तल्म, इद्ध इद्ध इद्ध इद्ध इद्ध व्यक्ष वामना ॥ ७॥

नयन मस्तान उर्व, नांशताक ममद्दति ।। धुः ॥ प्र-निम स्पर्य पानि, विषय अञ्चलय पिति ॥ ३,॥ माति माति शक्त हैय, कान इय क्वांभय, जाशित विवदत मिन, भाषाश्रीय मानिकिति ॥ ३ ॥ धरनक मतनकृत्व, भतनमय कित्रत्व, श्रीन अस्तत मन, म्रांशित विवदत ॥ ३॥ पाइरा अयमकास, स्पर्य लोह निष्तांस, जाक्र्य कित प्राम, विस्वार्भ अमुद्धित ॥ २॥ ভাস্তমন আর কেন, থাকরে ভুলিবে ৷৷ ধ্রু ৷৷ কাল
কামিনী কালী, নাহি ভাবিয়ে ॥ \*৷৷ জাননা মাষের পতি,
বিধিতে কাল মূঢ়মতি, ল কারে ঈ কার অনি, আছেল
ধরিষে ৷৷ ১ ৷৷ শান্ত হও ত্যজে কর্ম, দার্চ্যধর্মে রেথেমর্ম,
ঘুচিবে জন্ম রন্ত্রনা, য়াইবে তরিষে ৷৷ \* ৷৷ সংহর অনিত্য
আশা, কাট ধর্ম কর্মফাশা, হরের মোহিনী ডাক, বদন ভরিষে ৷৷ ২ ৷৷ রদি ভাব য়ে কারণ, ধ্যানে মুধ্ব য়োপিগণ,
পাব আমি সেচরণ, কেমন করিষে ৷৷ \* ৷৷ তাহার উপা
বলি, বাসনা করিষে অলি, কালীপাদপত্মে মৃদ্ধ, লোলুপ
ছইষে ৷৷ ৩ ৷৷

চিননারে কার্য্যপ্রাণ, কেন্ডব কারণ !! ধুন। ভাষ্টে হ্যে ভুন্পথে, করিছভুনণ।।\*।। ইহাগচ্ছ ইহতিষ্ঠ,উত্তিষ্ঠ ইহোপবিই, আবাহন করিকার, কর বিস্কুলন ।। > ।। সদাকর্মকাণ্ডেমজ, নিছে দেব দেবীভঙ্গ, চিত্রিত গ্রম কভু, করে কি ভোজন !। \* ।। এমতে অচিন্তধন, চিন্তমনো অনুক্ষণ, কেন জলসেঁচে মর, করিয়ে তপ্ণ।। ২ ।।

किशान अंगन हरन, बंच गारधन शिविष्ट ।। धु ।। दिलक निरम्ह म हरन, उद्ध्य हरणा काँमिरण। \*।। भाष्ट्री हनर्ना जाति, जकनि वृथिष्ठ शानि, वृथिन कि इस्त मानि, जात उठिक कित्रिण।। ১।।

खाशिन इहेल होत, नर्कल छाद राजन !! धुन ।। जाञ्चवमनऽ विश्व जानना कि श्रांवसन ।। \* ।। होद्रार्छ हुती म्रथन, कदत मिनी छथन, पिवटन इति ज्ञान, हित ल छन कमन ।। ।। जामात्र नयनवान, जामाद्र कदत नकान, कमटन इन विश्वान, विश्वयद्ध श्रियक्षन ।। \* ।। मान्यविश्व उवहन, (इद्ध हिहदह मनः, मदन। विदन कि कथन, है किय कार्य्य कार्या कार्या। र ।।

इत कत जनमित शाह हिमानय। धुरं।। जनक जननी वित्न विमीर्ग हिम्य । ॥ अङ्गाला कि जातन जनगी, जाभि मात अक्रमां, किया किन पिनजनगी, तर शिजानय। > 1 स्ट्रह भगिति लिया, मस्मी अतिभाद्य, जानित किनाम हिम्या। ॥ जानि मा स्मिनाक् (थरम, जन्म इत्ना, निमी जिम्य।। ॥ जानि मा स्मिनाक् (थरम, जन्म इत्ना (कॅरम कॅरम, मरतिह कि जाहि (वॅरम, इरलह निभय।। २।!

সংশার অরণ্যে ভ্রান্ত কাল রাত্রি তমোময !। ধুং ।।
তাহে পঞ্চত দেহ মহীরুহ সম হয ।।\*।। সেবৃক্ষে কুসুম
মন,ভালোতো বটে জীবন, অহৎকার গন্ধমায়া, সদাগতি
সহ বয ।। ১।। য়ামিনী বাজিবে রত, ক্রমে হবে গন্ধ হত,
ত্যজিবে ষদনবন্ধু, প্রভাতে নাহি সংশ্য ।। \*।। উপায়
করহ তার, চিন্তা মায়া অনিবার, না হইবে শ্লান আর,
পূজ্য হবে সুনিশ্চয ।। ২ ।।

বিশ্ব য়ার তুমি,তার সকলি তারার ৷৷ ধুং৷৷ তবে কেন ভেবে মর আমার আমার ৷\*৷ জিদেব তারিণী তারা,তারা সংসারের সারা. সাকারা কি নিরাকারা, কে জানে বিস্তার ৷৷ ১ ৷৷ সর্বত্ত ক্যাপিনী তারা, কিন্তু অগোচরাকারা, অদিতীয়া নানারূপা, প্রমাণ তাহার ৷৷ \* ৷৷ এক বীজ ভূত-লেতে, রোপণ করি পরেতে, প্রতিকলে দেখ সেই, বীজের সঞ্চার ৷৷ ২ ৷৷ সর্ব্বপে রপমার, ঘুচাতে সংশ্যত্রি, পাত্রে পাত্রে রাথ অমৃ, মাৃবে অন্ধকার ।। \* ।। প্রতিপাত্রে প্রতি
চ্ছবি, হের একমূর্তিরবি, তেমতি নাযার মাধা, ব্যাপেছে
সংসার ।। ৩ ।।

व्यक् शिति व्यान शिर्य अथिन श्री निम्नी ॥ कुरा ।।
नजूना जािक श्री निस्य व्यान भाियनी । क्षा । ह्राति । स्व । ह्राति । स्व । ह्राति । स्व । ह्राति । स्व । ह्राति ।।
स्व भागिनिनी ।। ऽ ।। कितन द्धान कृत्यान, नकूत्व ।।
सिर्यह मान, हम्मान जम्मान, मह्म जािकनी ।। सा । ज्र जिनति ।। सा । ज्र ज्राति ।। सा । ज्र ज्राति ।। ।।

গিরিবর একিতব হৃদ্য পাষাণ।। ধুণ।। নাহেরে কেমনে, আছে তন্যা ব্যান।। \*।। নারদ ঘটকবর, আন্যা দিয়া ছিলবর, কপ্তে, বিশং দিগম্বর, নির্গুণ প্রধান।। ১।। বিভূতির সীমানাই, বিভূতিপ্রচ্র ছাই, অমঙ্গল য়ত্তাই, মঙ্গল সমান। \*। কেমনে মঙ্গলা আছে, পাগল জানাই কাছে, পাগলের পুরী নাকি, কৈলাশ শ্রশান।। ২।।

অহেগিরি শুনশুন গৌরী কিবলে ।। শুঃ ।। আপনি এসেছে উমা দুঃখিনী মাবলে । \*। তুর্মিতো পাষাণ কায, অচল অচলপ্রায়, তোমার সচল হওয়া, শিলা ভাষাজনে ।।>।। কতবার প্রবোধিয়ে, কৈলাশে সাব বলিয়ে, কোলা য়েতে ভুলাইযে, অবলা সরলে!! \*়া লজ্জাপাবে য়দিকই, ততুকরে ছিলে কই, উমানলে ও মা কই,শুনে প্রাণ
জলে।। ২।।

जनया क्लां क्लां

কেমনে হবেগো ভবে উপায় আমার । ব্রুণ । তবপদে রতিমতি অতি অসু নরে । \*! আমি দীন দুরাচার, জঠর রন্ত্রণা আর, কতসব বার বার, কালের সৎ হার । ৷ ৷ ইইযে মনে র্মত, কুকর্ম করেছি য়ত, নাজান কি অন্তর্গাম, কব কি বি-স্তার । \*!। মূনঃ না মানে বারণ, য়েন উন্মন্ত বারণ, ইহছুদে জানপাল, ভাঙ্গেদুরাচার । ৷ ২ ।। বিষয়ে নিয়তমন্ত্র, পরমার্থ গ্রুদন্ত; নাকরিসে তন্ত তন্তু, মন্ত অনিবার । ৷ \* ৷৷ ভরমা ভবের উক্তি, করতলভব মুক্তি, শক্তিঅনুরক্ত ভক্ত, শক্তি কনার ।৷ ৩ ৷৷

সুখ সাধে বিদিরাধে নিশিতে নিকুঞ্জে ।। দুং ।।
আসিবলে কালশনা গেলে কারকুঞ্জে ।। শা এলে হরি কি
কারণে, শ্রীমতীর কুঞ্জবনে, তরুণারুণ গগনে, দেখভূদ্দ
গুঞ্জে ।। ১ ।। ছিছি একি বুজরাজ, কহিতে শুনিতে লাজ,
কারমুপ্তে হানি বাজ, আল্যা মুখ পুঞ্জে ।। শ ।। যেন মণি
হারা ফণী, সারা নিশিতারা পণি, শযনে আছেন রাই,
দুঃখ নিশিভুঞ্জে ।। ৩ ।।

এসো গো প্রাণের উমা পাষাণী প্রাণ ননিনী ।। খুনা মাবলে মা এলে বুঝি আপনি জগনোহিনী। ঋপুরাকৃত প্রাক্ত প্রাক্ত কলে, অচল তন্যা হলে, কে য়ায সচল হযে, আনিতে কিবশোহিনী ॥ ১॥ শুনেছি জামাতা গুন, সিজিতে অতি নিপুন, শাশানে থাকে নিগুন, সতত লয়ে ডাকিনী ॥ ॥ ॥ কপালে আগুন জুলে, কঠজুলে হালাহলে, অমৃতভাব গরলে, ভাবেন্ নাকি মা তিনি ॥ ২ ॥ অধিকন্ত গুণবড়, নিগুণ বুজিতে দড়, জটায় ধরেন শুনি, জাহ্রীনামে সতিনী ॥ ॥ কন্যা ক্ষেপা ঘরে রয়, মার প্রাণে একিস্য, অলক্ষার ছাই ময়, সাজায়াছে পাগলিনী॥ ৩ ॥

উঠ মেনকা পাষাণী হের আসি উমাধনে ॥ ধুং ॥ বরণ করিযে লহ সুমঙ্গল আচরণে । ।। কন্যারে বিদায দিযে, ছিলে গো দৈন্যা হইষে, এখন কোলে নইষে, জুড়াও তাপিত মনে ।। ১॥ ছিছি একি মার মাযা, ভুলে কন্যা বিশ্বজাযা, অন্ন জন রোচে কিনে, জীবনধর কেমনো! \*।। শুখাব্যাছে মুখ্থাণী, কেমন্তুই নাপাষাণী, ব্যজনকর সে দেখ, শুল নীর চক্রাননে।। ২।।

क्ष्मन हिल्ल (भीति जिकाति इतत घरत । धु॰।। ত्ञि वल ना वल मा छनियाहि भरत भरत ।। \*।। भरत घरत जूनि क्ना, जामात जारभात जन्मो, जामाहे हरयह रेमना, (भरयह जिकाति वरत । >। रम नाकि भागात तय, कले कालकृष्टेमय, भाषरय जूकक्षप्रय, किष्मा भक्षा ना करत ।। \*।। भरक्षण भिगाप माम, महाभागान रेकलाम, भाषल कद्र य वाम, यथा ठाक प्रताप्तत । २। जिवक स्व स्मिन्नी, मकरलत मूर्थ छनि, ना जानि कर मा मृहस्थ, घतकत लस्यहरत । \*। ज्रत त क जारहजात, जिकाजीति जिकामात, विভृতि विভृতि गत, भूगमात मृठ्य हरत ।। ०।।

নাথের হৃদ্যে রযেএমনব্যাকুলাকেন।। ধ্রং ।। কে দেখে ছে একৌ তুক কেবা শুনিযাছে হেন। \*। দর্কুল্লপদিগন্ধ, বহি তেছে মন্দ্রমন্ধ্লোতে অলিবৃন্দ, মত্তে অন্ধহল য়েন। ১।। অসে গ্রেড ।

নাথের হৃদযে রমে ব্যাকুলাকারণ শুন 11 ধুণ 11 পোড়া মামিনীর ভাগ্যে সঁদা লাগুক আগুন 11\*11 রজনী প্রভাতো মুখে, পাম্বন সহাসুখে, প্রফুল্লভাবে আমারে, দুঃখে স্থলা বে দ্বিগ্ণ।! ১ ।। কেননা অরুণোদযে, কি স্তুতি মিনতি চযে, বঁধুরে র খিব কথে, নহিতো তাতে নিপুণ। ২ ।

### আসাযরীরাগিণী, আড়া তেতালা।

তবমায় মহামায়া বুঝিবে কি অন্যজনে 11 ধ্ৰং 1 শাশানে মশানে মৃত্যুঞ্চয়য়োগী য়েকারণে 1\*1 অপাঙ্গে করিয়ে দৃষ্টি, ক্রিছ সৃষ্টির সৃষ্টি,সাধিছ প্রলয় প্নঃ,ক্ষণ ইঙ্গিত ঈক্ষণে তা

সবেবলে প্রিষ্টাদে গগনটাদ সমান।ধুং। কিন্ত কি বিশেষ তাহা কভ্নাকরে সন্ধান।\*। কেননা শশির্টদ্য, সিতাসিত পক্ষেদ্য, অসিত অনিতে শশি, সদালুপ্তে সমাধান।। ১।। দেখ মম প্রিয়জন, ব্যাপিয়ে হদিগগন, সমুদিত অনুক্ষণ, জ্ডাতে চকোরী প্রাণ।। ২।।

মধ্যান্ । মহামাঘা মোহে নজি না দেখি নিজ নিস্তার

া ধুণা নিজ গণে তার তারা কর ভবে পারাপার । ক্ষা অহণজানী অহলারে,ভজিযাজি য়ারেতারে,কিবলে ডাকি মা
তোরে, পথক্ষে দেগো তার । ১ ৷৷ নিশ্বাস প্রশাস পাশ্,
বেঁধেছে জীবন আশ,নাহিমাত্র সাবকাশ, নাম লইতে তোমারাক্ষা বৈক্ষরী মায়তে মন্ত,পাশরিষে আজ্বতন্তু, অনিত্যে
মোহিত চিত্ত,উচিত কর উদ্ধার ৷ ২ ৷ স্কুনগো সংসার সারা,
পতিতে তারিতে তারা, কিক্ষতি তারিণী তোর্, সে নহে
বিষমভার ৷ ক্ষ ৷ ত্বংহি অতি দুরারাধ্যা,ন হরি শক্ষর বাধ্যা

কেমনে হইবা সাধ্যা, সেসাধন সাধ্যকার ৷ ৩ ৷ দিয়ে দ্বর্গুণ বোধ ক্রমা দুর্গতিরোধ, আরকি জীবন শোধ জম রে জী-বনসার ৷৷ \* ৷৷ নিজগণে হরকান্তে, রাখিয়ে চরণপ্রান্তে, প্রকাশ কলুষ্যান্ত, করি মহিমা বিস্তার ৷৷ ৪ ৷৷

## थानायवीरिंगज़ी वानिनी, जाज़ा।

র্থিয়ন্ন। পারাবার । ধুন । ভ্যেভীত চিত্তেরে অক্লপাথার । \*। কিন্তু চিন্তাপরিইরি, স্মরি চিন্তামণিচরি, কাচিন্তা কালিন্দী নীরে, কালাকর্ণধার ।। ১ ।। য়েনামে ভ্রান্দিজলে, পারহই কুত্তলে, স্বয়ন গৈ কাগুরী তায়, ভ্যু কি আ-বার ।। \*।। ইহাতে করিলেভ্য,ভার কি নিস্তারহ্য, ছলের বদন র্থা, দর্পণে সঞ্চার ।। ২ ।।

মধ্যমান্।। কালী বিনে'কেমনে মনঃকালে এড়াবি শনন ।। ধুণা। অহণ জ্ঞানে অইণ্ডাংর সদ। কররে য়তন ।। \* ।। দারাসূত বন্ধুল্য্যা,নাযাপাশে বদ্ধহ্য্যা, পাশরিলে আত্মতত্ত্ব, য়ে তত্ত্ব,পরম ধন ।। > ।।

বুঝালে য়দি না বোঝাকে তবে বুঝাৰে প্রাণা ধ্রুং ।!
ভালবাসা বেসে শেষে ও চকি হে অপমান ৷! ৠ৷৷ ভাল ভাল
বাসা তবং এয়য়ৣ৽৷ কারে কবং প্রাণে আরো কতসব,
প্রীরেতে ইকি বিধান ৷' ১ ৷৷ আমি সমচাতকিনী, তুমি ঘন
কাদিয়িনী, তবে কেন এঅধিনী প্রতিনহে বারিদান ৷৷ ২ ৷৷

## हेमन्। मध्यान्।

আপন আমুর্ল কেন ভোলো ভূলমন ৷৷ ধ্রং ৷৷ সংসার্
উপবনে ভাবয়ে মালিকারণ ৷৷ ঋ৷৷ সে অরণ্য শোভা
জন্য, বৃক্ষমধ্যে তুমিগণা, তাহাতে কুনুম ধন্য, তোমার
জীবন ৷৷ ১ ৷৷ নেত্র শ্রেত্র পাদপাণি, শাখা পত্র আদিমানী, জ্যোতিরুপ পরমাত্মা ষ্ট্রার ঘটন ৷৷ ২ ৷৷ দেখাে
দেখাে সাবধান, অহুৎজ্ঞান অভিমান, অনিবার্য্য দাবাঁ
নল নাকরে দাহন !৷ ৩ ৷৷ ভাহার উপায় শুন, সাধহ
সরসগুণ, তবে গাত্রবে সিক্ষ সদা সর্কৃক্ষণ ৷৷ ৪ ৷৷ রসনা
ম্ল সনশে, আকর্ষণ করিরসে লহু জগতের রস, চিন্তাানিরঞ্জন ৷৷ ৫ !

कित्तत ভाবনা ভাত দিন অবশেষ ।। ধ্ৰং ।। কোথাছিলে কোথাএলে কিপেলে বিশেষ ।। \*।। য়েতব কার্য্য কারণ, তারে না চিন্তহ মন, অনিভ্যে করি চিন্তন, নিভ্যে আনাবেশ।। ১।। য়খন আইলে তৃনি, অবনি মণ্ডল ভূমি, কেএনেভে তবনঙ্গে, কেবাল্যে য়াবে,।। ২।। বুঝনা এ চমংকার, য়ে এনেছে প্নর্ফার, সেল্বে প্রাণ ভোমার, হবে বিশ্লেষঃ।। ৩।। তাইবলি নির্ফিকার, নিরাধার নিরা কার, চিন্তনকর আন্থার, তরিবে সংসারভার।। ৪ । নতু-বা নাহি নিস্তার, কাল পেযে অধিকার, ঘটাইবে কের-ফার, কালেধ্বের কেশ।। ৫।।

#### আজা অথবা, জল্দ তেডালা ৷৷

রাথ না নাযের ধর্ম জন্মশোধ দেখাদিযে ।। ধ্রং ।।
রবেছে কৃতান্তদ্ত শত পুরেতে ঘেরিয়ে ।। \*।। নাযের
উচিতহ্য, নতানে পাইলেভ্য, নাতে নাতে নাতে রবে,
তগনিবারে আনিয়ে ।। ১।। নতানেরে। এইরীতি, ক্রানিনা তথাভীতি,সমযে নাগলে তাকে, তাকি জাননা জা
নিয়ে ।। \*!। জুলিছে ক্রাগ্রিকাল, মহানিদাগতকাল,
করাল কিন্ধর্যান, উগুথেশে দাঁড়াইয়ে ।। ২।।

কপেনা জপেনাভাব তাবত নাহিক য়াবে ॥ ধুং ॥ য়াল বত্নতনত্যকল রনায়াদ নাহিপাবে ॥ ॥ কারণ অ-জানেমত, হলেকি নে তত্ত , করেবল মনোমত, ভাবি-বারণ প্রভাবে ॥ ॥ য়েমন বালিকাগণ,পুত্লে করিয়তন, দেয বসনভ্যণ, আত্মমত সেবাভাবে ॥ ॥ ফলে বালা কালাগতে, পতিরস জ্ঞাতা মতে, অসার খেলাবিগতে, যামি সুখেতে বিকাবে ॥ ২ ॥

থেকোনা থেকোনা কাল বাাল, জীবির বশেতে 11 বুনা নামান রৌরক রসপাবে শেঘে বিশেষেতে 11 জাধিক আর কি বা কব, কুমতি নাগিনা তব, সংসার কৃঞ্জি সম্ভব, কালের ক্রীড়া সাথেতে 11 ১ 11 বৈরাগ্য বিষদশন, অজ্ঞানাঘাতে ভঞ্জন, মাযিকরূপ প্রম, জননের কারণেতে 11 \* .11 অভঃ উক্তি সার্ভন্ত, মহৌয্ধি খুণিমন্ত, কালানান কালীয়ন্ত্র, জপপূজ্রে মুখেতে । ২ । তবে নাগিনা পলাবে, বালি গাংশীসঙ্গোবে, তবপানে নাহিচাবে, না আসিবে নিক টেতে ৷৷ \* ৷৷ সুখেরবে সর্কক্ষণ, গৌরীগানে মজিমন, কল্যাণ পরমধ্য, পাবে আনন্দে পরেতে ৷৷ ৩ ৷৷

উচিত নাহ্য ইবে অবলা জনে বিধিতে।। ধুন ।। প্রথম মিলনে কত সাধিতে সাধে কাঁদিতে ।। \* ।। বাড়াতে স্-রাগ রাগে, নবপ্রেম অনুরাগে, বিরাগ রাগ সে রাগে, বি-রাগ ভাগ বিদিতে ।। > ।। আরকি অধিককব, বাড়াতে মানগৌরব, বচনেপীয়ূষনাথি,য়েন শশী ধরেদিতে।। ২ ।।

ইমন্ কল্যাণ অনুরাগ, জলদ তেতালা ।৷
নাল য়দি আদি তবে করপ্রিয়ে অভিমান য় বুং ৷৷ আদ ইলে বদন বাঁকা নরি এ কোন বিধান ৷৷ \* ৷৷ ভাবিতে ভা-বের ভাব, এইহ্য অনুভাব, লাভত্ব ভাবে ভাব, অভাবে তে সমাধনে ৷৷ ১ ৷৷

য়েনহে আপন সেকি পারের হইতে পারে।। খু.।। প্রেম-পারে য়াববলি ডুবালে দুঃখ অপারে ।। \* :। ভালডেবে ভালবেদে, কুলমান গেল ভেসে, এই ভালইল শেষে, তব বিরহু পাথারে ।। > ।।

কেমন আছ্ বলরে প্রাণ শুনিতে ব্যাকলচিত।। ধুণ।।

এনিলনে অভিনান অধীনে নহে উচিত ।। \*।। স্থান্বিজ্ দিনান্তরে, পেযেছি তোমারেপরে, অন্তর করিছ প্রিযে, থ য়ে অভি বিপরীত ।। ১।। আনি তব প্রেমে বাঁধা, তুমিত মনেরি সাধা, সেগাথে সাধিযেবাদ, সাথে করোনা पृश्विज ॥२॥

ইমন্ কেদার অনুরাগ; হরিতাল । ঁএকেমন অভিমান বলনারে প্রাণপ্রিয়ে।। ধুং ।। অসে। মুখে মৃদুছাসি • গুধুই কিলাগিযে ।। \*।। কথান্তরে ভা-

বাস্তরে, কেমনে ভাবঅস্তরে, রাছে নিরস্তর্মম, অন্তর

श्रायमिक्ट्य !। >।।

তোমার ভাব প্রভাবে মনেহল ভাবোদয।। ধু॰।। আ মার এভাব হেরি কেনছলে নিরদ্য ।। 🕸 !। ভাবুকজনার ভাব, কভুনহে ভিন্নভাব, প্রিয়েত্তব ভাবাভাব, স্বভাবে अভाव इय । । ।।

. প্রাণনাথ বিনেপ্রাণ দহিহে জগতপ্রাণ ॥ধু∿ 🛭 রাতে মানিনীর মান থাকে কর সে বিধান ।। 🗱 ।। কাননে প্রফল্ল कूल, मिलकार्तात्रकृत, मथुरलाएं यानिकृत, खरक्ष भूरि ধাৰমান ॥ ১॥ তাহে জীবনব্যাকৃল, কেমনে পাইবক্ল, ব্রিবা ভাস্যে ক্ল, যুড়াবার নাহিস্থান। ২।।

কল্যাণ অনুরাগ! হরিতালবা তেওট ।।

কি মনে তাবিয়ে প্রিয়ে রহিলে অধাবদনে ॥ শু. ।।

বিচলিত ভাব কেন স্বভাবে ভাবিলে মনে ।। \*।। হেরিয়ে
বদন তব,এই করি অনুভব, অভাব ভাব প্রভাবে, ভাবিলে
য়েন এজনে ।। ১।। বিরস ও মুখ্থানি, নিরীক্ষণে দুঃখ
মানি, ভাবি ব্রি এইবার, হারালেন প্রেমধনে ।। ২ ।।

#### অসেগভর ।

কি তাপে তাপিত হযে এত অনুতাপ প্রাণ !। প্রণ ।। মেহেতু বদন অধঃ ওনহ তার সক্ষাণ ।। জন সনস্ধি নরোবরে, কমল কলি সঞ্চরে, প্রক্র না হ্য ার, কারণ গারণ ধ্যান।। ১। বুচকলি বিকশিত,না হ্যেরবে মুদিত, এবিধাযেন্থরাকা, দেখাইতে অগ্যোত্তান।। ২ ।।

ভारतीटा अञ्चल श्रांत या शिवा साजना वां जाता । शुःषा स्मारन मानित्व नारम समारन दाशा हां साता । अ।। श्रिममृश्यान, ना नाशि सकत्म, व्याप्त स्मारन, व्यक्त कृता हां नारन ॥ऽ॥ यहार समान मानि स्मारन समान ।। ।। ना, किनिकारन व्यक्तां, स्मारत श्रांत कृताता ॥२॥

পিরিতে কতই মান য়েমার্নে নেইতো নানে।। ধুং।। প্রেমি বিনে প্রেম যুকুর ছের্ঘে কাণে।। \*।। উভ্যে য়তনে, য়াদ্ প্রেমধনে, রাখে আকিঞ্জনে তবে, কনক শোভে রসানে ।। ১।। সাধের পিরিতি ভাল রাখিলে অতি, র তলে ।। এত ।।
তৃমি য়ে আমার নহ আমি না জানি স্থপনে ।। ॥।। কত
না ভুলাযে, আমারে নজাযে, ভাবান্তরে তাবান্তর,
অন্তরে প্রেম রতনে ।। ১ ।। কেমনে কেমন, হরে প্রাণ
ধন,না হেরে হারাতে য়ারে,না হের তারে নয়নে ।। ২ ।।

কি কব স্থা উদ্ধব কে আলো। আজ বুজহতে ।। এ°।।
কাঁদালিনী বেশ কিন্তু কথা কহে কতমতে ।। ৪।। না জানি
কার লিখন, করিতে কৃষ্ণে অপ্ন, শ্রীরাধা শ্রীরাধা বলে,
নুধা হরি মূচ্চাগতে ।। ১ ।। অনুভবে বুঝিভাব, ভাবি
বুজাধনা ভাব, উপজিল ভৈদভাব, রাধা ভাব অনুগতে
।। ৪। হকু তাহে হানি নাই, পর্মা প্রকৃতি রাইন্ কলে
আমি অংশ চাই, চন্তুল দান ধন্যবৃতে ।। ২ ।।

#### জनम (उठाना !

ভালবানা য়ে বেসেছে সে জৈনেছে ভাল বাসা । প্রা। ভালপলে ভাল ছলে ভালভো পূরালে আশা । জাপ্রান তরুপরে, সুখ পক্ষবরে, শীলতা শাখাতে স্থা, ন লিজে খুড্দে বাসা ।। ১ !। য়তনে রাখিতে, যদি ছে পিলিজে, ভবে কি হইত এতো, য়াতনা সাগরে ভাসা ।। ২ ।।

আমি কি কখন তারে অন্তরে রাখিতে পারি ॥ ্রণ্য তিলেক অন্তরে য়ার ধৈরয় ধরিতে নারি ॥ \*।। নলে 🗟 রে প্রেমধার, কেমনে শুধিব আর, নে আমার আমি তার, প্রাণান্তে হবো তাহারি॥ >॥

## काको द्राणिशे। मध्यमान्।

মজিলে পিরিতে মনঃ ধিক্তার লোক লাজে ।। শুং।। থেনা চাছে প্রেমর লোকলাজ তারে সাজে !। \* ।। লোকের গঞ্জনা পাকে, ঠেকেছি বিপাক পাকে, সতত্ত্বাহেরে তাকে, দুঃখশেল বুকে বাজে ।। ১ ।। কি করে গঞ্জনা আর, আমি তার সে আমার, শোভিব হৃদ্য হৃদ্, রোপিযে রাজীবরাজে ।। ২ ।।

হৃদি কারাগারে ঘোরে বেঁধেছি জীবন ডোরে।। ধুংা।
প্রহরি রেখেছি প্রাণ মদ্যপি হারাই চোরে।। \*।। তুনি
তা নাহিক জান, দেহে প্রাণ স্বস্থান, য়েমন তেমনে
প্রাণ, বন্ধন করেছি তোমে।। ১।।

## <del>ेकं</del>र क्ल

## ় কাফি সিন্ধু। মধ্যমান্।।

मृश्यिभीदेत मृश्यिभीदि श्रांग कि मृश्य्य ভागात्व ।। धुः ।। व्यापानि ना मिक श्रांप व्यवनाः मकात्व ।। ३ ।। ভावश्रे मन्द्रे, राजावरे कांक्र महे, अम्रज्ञगो कांद्र करें, अक्रांम कांपात्व ।। १। मयत्म स्राप्त याकि, मंगाश्याग वर्त्त जांकि, मत्नामुश्य मत्नद्राचि, मानना कांनात्व ।। ३ ।। अकिक्षांवा

অকশাৎ, বিনামেঘে বজুঘাত, মুখের গাঁসের ভাত, হরি যে জুলালে ॥ ২ ॥

দেহ য়ে যাতনা রে পুনি নহে দৃঃথের কারণ !। শু॰ ।।
তোমারে নিদ্য বলে এইতাপে দহে মন ।। \*।। তবিরহে
তে মরি, তাতেখেদ নাহিকরি, এজালাকিসে সমরি, কলঙ্ক
তোমায অর্পন ।। ১।। অধিকন্ত এইদুঃখ, কেমনে দেখাব
মুখ, তবসুখে মমসুখ, জানেসবে প্রিয়জন ।। \*!। পাছে-লোকে ইহাবলে, অভাগির কর্মফলে, ফলেছে বিযোপফল,
তাহতে ভাল মরণ।। ২ ।। '

পাপি না থাকিলে তারা তোরে তারা কে জানিত ॥ ধুং 1।
কেননে অয়স্ বিহুনে পরশ মান্য হইত ॥ \* ॥ বিশেষ
বিশ্ববিধান, সকলে হলে সমান, মানির কে রেখে মান,
বিশেষেতরে গণিত ॥ ১॥ তেমনি আমি শঙ্করি, সঙ্কটে
কেমলে তরি,এভয়ে দিবাস্ক্রী,ব্যাকুল হলে নিশ্চিত ॥ \*॥
সহসামনে উদয্,মাভৈ মাভৈ কিবাভয়, মাআমার পরশ
ময়, আমিঅয়স তুলিত ॥ ৩॥

## कारमाद वाणिगो। मध्यमान्।।

কিবা তব ভালবাদা আশাতে প্রাণ অবশেষ।। ধুং।।
নাপুরিল মন আশা বিপক্ষ হইলদেশ।। \*।। নুখেবল ভা-

লবাসি, মনেঅন্য অভিলামী, নংছ কেন সুখন।শি দিতেছ ভাতনা শেষ।। ১।।

মানী বিরম্পনে নিরপ্তানে কে ভাসালে।। ধুং।। অতি
নিস্তান্ত্র হাতা ছেনজপ কে দেখালো। ধ্বং। হা মুখে নিবত
হাসি, সেনুখা নলিনরাশি, নাশিয়ে স্থাপশুরাশি, চকো
রিণী কে কাঁদালে।! > 11 ভালো বলে ভালত্ল, য়ে ভাল ভাবে সে মল, শেষে হল এইভাল, ভাল অভাবে ভাবালে
।। \*।। আহা আহা মরিমরি, আরকি উপায়করি, অনূল পাথার ক্লে, নিরাকুলে কেডুবালে।। > 11

## কালা ছা অনুরাগ। জলদ তেতালা।।

চিত্রকার)। ১ বাসন্থানেরি ভ্রানে তোরে প্রাণেকাপিঞাল। গুটু। নামবারা। ২ নানেতে আপদ্ধ এত আগেতে নাছিল জ্লান।। সূলদ্রী । ২ সুথেদুঃথদান ৪ প্রাণ, এইতোত্র বিপান, থানেতে বাড়াতেমান, সুদ্যহলোস্থান।। ১।)

কেবল তোমার ভালো আসিতে ভালবাসনা ।। ধুং ।।
দুজনে দিনতহলে প্রেম কিরবে বলনা ।। \*।। আমিভাবি ও ব্যান, সতত হেরিবপ্রাণ, তুমিমনে ভাবিআন,
প্রভাবেভুলেভাবনা ।। ১।। এসে বল শ্লাইয়াই, সেকথা
প্রাণেদুধাই, প্রাণবলে ক্রিতাই, স্বারিসম্মন্ত্রণ।।। ২।।

পরিতে কলঙ্ক জানি তবু প্রেমে ভাল বাসি গাধুনা।
বিরহ শশাক্ষ হীনে, কভু নহি অভিলাসী ৷৷ পীরিতি
পক্ষজ প্রায়, পক্ষে জন্মে জেনে তায়, কেবা করে অনাদর, ক্যয়ে হীন সহবাসী ৷৷ ১ ৷৷ বিচ্ছেদ সন গরল, কাল
কৃট হলাহল, রহ্লাকরজাত বলে, কে হয় তার প্রয়াসী
৷৷ ২ ৷৷ তেমতি প্রেমবিচ্ছেদ, বুঝে দেখ ভেদাভেদ, বাস
প্রেমে পরিচ্ছেদ, কলক্ষ সাগরে ভাসী ৷৷ ৩ ৷৷

#### हिब्कावा नाम वामा नुनम्त्री।

- ১ बामनो ग्रमिना जान जारकत्थम नाहि कति ॥ धुर ॥
- र प्रात्त अर्थभान इहे, এই उन मना स्वति॥
  - ৩ সু, ধপ্রেম অনুমানি,
  - ৪ ন,ব ভাবেস্থমানি,
  - व म, हिरत आंद्रश कि कानि,
  - ७ ती, जि कि क्वामाता मति॥ ১॥ •

मा धरम जानिए वन धरम (इति जन अन्। पुरा ।। कि कम वनरत थान, धरम जाना कात्रम ।। \* ।। रहितम सम वयान, शिक उपक्रिय मान, जामर्गन मूर्विधान, इन महरक धर्मन ।। > ।। ठाइात कांत्रमं मून, जामर्गन उव धन, मरन इर्य महर्थन, कत्रय मनत्र ज्ञन ।। > ।। राज्ञन जाना धन, ज्ञा कांत्रमं क्रिक, ज्ञा जामात्र कांत्रमं ।। राज्ञन जाना धन, ज्ञा कांत्रमं १।। राज्ञन जामात्र एकन ।। > ।।

তোমার পীরিতে প্রাণ কিঞ্চিত মাছিক সুখা। ধ্রু^।
আন্তরে অন্তর জ্লে, হেরিলে উথলে দুঃখা।
ক্লান মান হতাশনে,
ক্লিন মান হতাশনে,
হেরিতে আমার মুখা। ১।। ভাছাতে উপায় রাছা,
আনাধ্য সাধন তাহা, সাধিতে বাড়যে মান, বিধাতা
প্রকি বিমুখা। ২।।

কহিতে বিদরে বুক না কহিলে নয়, দুঃখা। ধুং।। ভালে। বেশে অবশেষে, ভাল উপজিল সূথ।। \* ।। আমি করি তব আশ, তুমি কর উপহাস, থাক পর অভিলাষে, চাহিযে পরের মুখ ।! ১।।

তোমার এভালবাসা মনের সহিত নয়। শুং । মনের সহিত হলে, কভু কি য়য়ণা রয়। # ৷৷ মুখেবল ভাল বাসি, অন্তরে গরল রাশি, কেননা বারেক আসি, জুড়াতে বল কি হয় ।৷ ১ ৷৷ ব্থাযে করি য়তন, ব্থা মম 'আকি শ্বন, তোমার তেমন মন, এখন নাহি নিশ্চয় ।৷ ২ ৷৷ এলাঞ্ছনা কারে কই, স্ব বুকপেতে সই, পাষাণে নিশিত হলে, বিদীণ হতোঁ হৃদ্য ৷! ৩ ৷৷

भीतित्व मझारय त्मरय अहे कि छेठित इय । दुः ।। क्टिय त्व ठाँममूथ, ठरकात आत्म न भय।। \*।। मूर्थ वस जान वानि, कथा श्रम मुधातानि, उद्योधत धना हानि, चारुत राज्यन नय।। >!। नमजादन ज्ञानंश्तन, कि मूथ कानान नातन, राज्यन शाय कि मातन, धानाराख आक तय।। २।। कीयराख डेज्य थाम, डेज्य माहिंज ज्ञाम, उन्न नात इनकारम, फ्रांट्स नुकालाराज नय।। ७।।

ष्यस्य जान ना वात्र ग्रंथ वहाना जानवात्री।। पुर ।।
पान पान कारन आग, ज्ञि मम पानिना ।। ॥। अगरय
पहेला तथ, रम जाव साजात मूथ, रम जावितन जात मूथ्य,
रमहे श्रम म्थतानि ।। ১।। ज्ञि जािक रम विधान,
मारन कर प्रभान, पानि मान जाित श्राव, तरि किछ
तांक हाित ।। २।। शीतिर्जत वहें धाता, शीतिर्ज ममाय
जाता, ना मिल्ल मर्ज साता, तय शितवार काित ।। ७।।

তিক কার্য। ১ বা, সনামনেরিঙসাংধ দতত হেরি ভোঁমারে।। ধুং
নামবামা । ২ মা, নের সম্পদ ৫ য়ত রীথিয়ে অন্তরাগারে।।
সুনদরি । ৩ সু, থী নহি মান ৪ লযে, অপমান রব স্থে।
ত্থিতে সদ্য হযে, বাসিবে ভাল আমারে।। ১।।

सोधित धमन थान सन जूमिला चानाति । क्रा ।।
इत्तर त्राक्ष पित्य, करन क क किकाति ।। \*।। तथा
क मुश्मिम, नय इतन कत इय, भत्तताम्य स्मय, धज्ञानाः
महित्य माति ॥ ।। करन पि थ धित्र होम, करन नाथ
भित्र माति ॥ ।। करन पि थ धित्र होम, करन नाथ
भित्र वाम, दिवन वानित वाम, भीति विव्यार माति ॥ ।।।

হকু তাহে হানি নাই, তব রেহ নাহি চাই, অস্তরে রা-হারে পাই, অভরে বানি তাহারি ।। ২।।

ध्यम शीविक मिश्र युक्त द्वार्थ कि इरव।। युक्त ।। स्त्र क्षरम विवर প্রতি, বিবर नाहि मसुद्व।। ॥। शाहि इय छान मन्म, (ভবেতা করিনে चन्मू, তবু ঘটে निद्रानम्म, धरूठ कि खीवन वदा।। >।। मिह्ह ভযে कवि ভय, श्रम वय कि ना वय, উভय मक्करमय, भव स्मिट्ट मव मदि।। >।। छाहे वनि किन चांत्र, विह्रिय ভূতের ভার, আমি ভাবি चांशनवह, स्म আমার वन कदि।। >।।

তুমি য়ে ভাল বাসনা তাতে কিছু ক্ষতি নাই।। ধুং।।
আমিতো বৃদি হে ভালো, ভালোর কারণতাই ।। ॥।।
জুমি হে ভাল বাসিলে, জুড়াতো আঁথি চাহিলে, ভালো
নাবাসি হইলে, হুদে উ । য সদাই ।। ১।। য়ে জন অন্তরে
রম,বাহেদ্ য়দি সেন। হ্য, তাতে কি হ্য সংশ্য, আমি
সদা তাই চাই।। ২ ।। বিশেষ কারণ শুন, বুঝিবে হলে
নিপুণ, প্রত্যক্ষ অসিদ্ধ গুণ, অনুমানে সিদ্ধি পাই।। ৩।।

পীরিতি কিরীতি প্রাণ তুমি নাকি, তা জাননা ।। খ্র. ।।

সবেবলে পরপুণ, ঘণাগু কভু মাননা ।। \*।। য়ে মানে তোমার মান, তারি কর অপমান, তবপ্রেনে এবিধান, মানিনী

মানরাখনা ।। ১।৷ য়েভাল বাবে তোমারে, তুমি না বাসহ

ভারে, বাসিলে ভালতাহারে, দেহ বিশেষ য়ত্ত্রণা । ২।। য়ে তোমার মুখচায, তুমিনাহি চাহ তাব,রাখ সদা য়ত্ত্রণায়, একিছে ভাব বলনা ।। ২।। য়ে তবসুখের সুখী, তব দুংখে হয় দুঃখী, ভাবনা তাহার দুঃখ, বলনা একি চলনা ।। ৩।।

তপন সমান প্রাণ হই তব প্রেমলাগি ।। ধ্রং ।। কো
থায় মিলন কিন্তু, সদা থাক হৃদে জাগি।। \*।। কেবুঝিৰে
একৌতুক, কহিতে বিদরে বুক, অলিকরে মধুপান, অৱশ কলক্ষ ভাগি।। ১ !। তুমি য়েরাখনামান, অন্যে তাজানেনা প্রাণ,লোকে য়েন বলে তুমি,মম প্রেম অনুরাগি।। ২ !।
কর্মে হ্য কি না হ্য, সে আমার ভাগ্যোদ্য, প্রকাশেতে
মুখরেথো,এইমাত্র ভিকামাগি।। ৩ ।।

কুদ্দে তুষার লেশ লোকেএকে বলে আর ।। খুন্। কেন নে জানিবে অন্যে, য়ে না জানেকেরফার ।। ।। ।। হেরে বিরহি কামিনী, য়ামিনী হযে দুঃখিনী, অবিরত, কাঁদে নিসি, নযন জল নীহার ।। ১ ।। তাহার কারণ এই, দজাতির দুঃখ য়েই, সজাতি বিশেষ জানে, অপরে কিধারে ধার ।। ২ ।। কখন শশিবিচ্ছেদে, ভাষে নিশি অতি খেদে, তাই বিরহিণী দুঃখে দুঃখের সঞ্চার তার ।। ৩ ।। য়েমন গৃহ দাহনে, দকা হলে ধেনুপাণে, হেরিযে রক্তিনা ঘনে, ঘটে তার চমৎকার ।। ৪ ।। তেমতি বিরহ ভযে, নিতান্ত ব্যাকুলা হ্যে, বিযোগি বিযোগে করে, রামিনী মন বিদার ।। ৫ ।। कांजूबी कांशांद शांग वनना कित्म मञ्चत ।। धुर ।। किल स्वत या व्यवत, निव्वत थार्न वत्त ।! \* ।! हिन इति स्नाना प्राय, चकार्त ना भाष्या ग्राय, व्यक्ति कीवन ग्राय, इनना केंकि कर्त ।: \* ।। व्याम क्व श्र्याधीन, क्वश्रम निश्चि दिन, विद्यानन स्वादन भीन, व्यन्धा श्रयह कर्त्त ।। २ ।। ग्रम विश्व क्यानन, इत्विह्य श्रियक्षन, मस्य प्रकृत श्राम मन, क्रमामक शीवत्त ।। ७।।

তোমার বিরহে মরি তাহে খেদ নাহিকরি ।। ধুন ।। এই মনে ভয় নারি,রাখিতে নারি-সম্বরি ।। \*।। বলি তা তোমার কাছে, লোকে ইছা বলে পাছে, অভাগীর দোষ আছে, সে দুঃখে কিরপে তরি ।। ১ ।।

মা যোগেন্দ্র বন্দিনী, তারা তার গো দীনে।। ধুং।। তাপিতে তারিতে তারা, কে আছে তারিণী বিনে।। # ।। বিতাপে তাপিত প্রাণ, ক্পা করি ক্পাদান, করিয়ে কর গো ত্রাণ, ভঙ্গ বিহীনে।। ১ ।।

শক্ষরী করণাকর কিছরে কেন বঞ্চন। । ধুং ।। কামনা পূরাতে কালী, কণ্ণলতিকা কণ্ণানা ।। \* ।। অতি অসাধ্য সাধন, বিনাশিতে দশানন, পূজি জানকী জীবন, পূরিল মন, বাদনা ।। ১ ।। গোকুলে গোপীনীয়ত, করে কাত্যামনীবৃত,দিয়ে নারাষণ ধন, ঘুচালে বুজ ভাবনা ॥ ২ ।। শুদ্র নিশুদ্রের রণে, রণ শায়ী দৈত্যগণে, শবেরে শিব্দ দিলে, নাশিতে যুম যুদ্রণা ৷৷ ৩ ৷৷

শক্রী কিক্সরে কেন কর মা এত বঞ্চনা ৷৷ খ্রা ডাবিতে অসম্ভাবনা, ভবে ভবের ভাবনা ৷৷ ঝানি অবনী
মগুলে, জাবন মীনে কৌশলে, জড়াইযে মাযাজালে,
ভ্লালি গর্ভ যন্ত্রণা ৷৷ ১ ৷৷ দিয়ে জান মহানিধি, জাপিতে
ক্যযেছ বিধি,পুরতঃ অন্তক দূত, কিরপে জাপিবলনা ৷৷ ২ ৷৷
অদূর হইলকাল, কিসেরায় এজ্ঞাল, সন্তানে শক্ষার
কালে, মাব্যলে ডাকে জাননা ৷৷ ৩ ৷!

नक्ष क्षिमान उर क्षम्य क्ष्म भाषान ।। धूर् ।। दृक्षि भा विश्वादा, करत्र इस् दिशान ।। \*।। प्रथ् मूथ भक्ष-क्षिनी, दिशो हाङ्गान क्षिमि, कत्रप्रूग ज्ञान नि, नथम्थार अन्यान ।। >।। जञ्जूनि हम्भक क्षि, हम्भक्षि ज्ञान ।। >।। जञ्जूनि हम्भक क्षि, हम्भक्षि जञ्ज नक्षि, नयरमने रहावनी, ज्यत्र विश्विका व्यान ।। >।। नामाजिल कृत नामि, वहन भीशृम द्वामि, मूर्थ मधू माथाशिन, ज्ञामि मूथ नक्षान ।। >।।

কেদারা রাগিনী। তাল জলদ তেতালা। অন্তরে অন্তর দহে তাই নিরন্তর আলি ।১২°।। নতুবা নহিতো প্রাণ, অন্যসুখ অভিলানী।। \*।। কিতর বিশেষ পুণ, কৰিতে নহি নিপুণ, বিধুনুখে নধুহাসি, হেন্তে সুথ সা-থে ভাসি ।। ১ ।।

नारहरत ज्यस्त परङ् जाहेर जा जातिरत श्रान ॥ धुः ।। जाहार वित्रम सूथ, वन धःकान विधान ॥ # ॥ नहेर ज जातिरन श्रिय, वत्रथ जानारत पिरम, क्रूड़ाव जाशिड श्रान, क्रिय जीवन मान ॥ > ॥

श्चिमचार्म बहाउनः क्मान तर वनना ॥ ५० ॥ उपनि कानिक श्वान, बनव उव इनना ॥ ३० ॥ मान मिक वहत कहरम, श्वान कि श्वान कहरम, श्वान कहरम कहरम कहरम कहरम कहरम काना ॥ ३॥

मून मून नक्षनीति विवह काल। गरह ना। ५० !। वितम खान गूनमानि, क्षीयन प्रत्ह तरह ना।। ३० ।। व्यक व्यवना मन्द्रना, जारह कृत बानायना, कछ याथ। यूचि जारत, बुबारय कह करहान।।।।।। जूनि मथि वितिया, भात्र जारक तूबा-हरा, बमन कित्र सन, विभारक क्षूपरह ना।। २ ।।

नयन जलात कारत कारत कमतन्त्राधित थान।। धुरा। इस्त मूथनरह मू॰थ, प्राय ग्राय कून मान।। # ।। प्रित्य स्टालत, जन्मरह मजालत, यरतभरति भक्षम, किन जाजतन जान।। )।। ভাল বাসি ব্যলে আসি নিয়ত দেখিতে প্রাণ ৷৷ ধুণ ৷৷
নহি অন্য অভিলাসি, তুমিতে: তা নাহি মান ৷৷ \* ৷৷ হলে
মাত্র দরশন, হেরি বিরস বদন, য়েন নইতে কিখন, করিযাছি সুসন্ধান ৷৷ ১ ৷৷ ভাল হল ভালবাসা, না পুরিল মন
আশা, য়ত ভাল বাসি কিরে, তত সব অপমান ৷৷ ২ ৷৷

शृनिन उज़्द्र गृत्न किया स्नांछ। स्थ्य महै।। धुः ।। द्रायह जिड्छ ह्राय, निवंदं (एस अहै।। ॥। शीठवारम धड़ा कित्र, वनमाना शत्न श्रित्र, रमख्डर द्रा अश्वाश, कि किश्वाल कहे ।। ।। वाङ्का ह्य त्नांकनारक, श्रित्र हित शृह् कार्क, हित ह्राव विरम्प, अनि ह्राय तहे, ।। ॥। धिक कि विषम ख्रान।, मत्न श्राविमान काना, स्र दिवम ख्रान। मत्न श्राविमान काना, स्र दिवम ख्रान। वहे।। २।।

मितिक मार्गामित क्षेत्र, क्षेत्र विकार ॥ द्वा । या प्र् विकार क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र ॥ क्षेत्र निक्च नवचन ठन्, मिथि श्रेष्ठ मञ्च्यम्, शीठवाम क्षेत्र क्षेत्र

मिथ (त, वृद्धविव थाक। इन माय ॥ धुः ॥ मारं वान

শ্যাম সোহা, গিনী এরাধায়। । ॥ মরি সখি এই ক্লেদে,
পাপলোকে ভেদাভেদে, অভেদ দেহেতে ভেদে, প্রভেদ ঘটা
য ।। ১।৷ শ্যাম জগতের পতি, ভাঁরে বলে উপপতি, এদুর্মতি
পারহতে, আছে কি উপায়।। \*।। বামন ইইযে চাঁদ, সহিতে
সাধ্যে বাদ, ধরিতে বাড়ায় হাত্, দুঃখ কবকায়।। ২ ।।

ননের বাসনা রত সেয়দি কিছু জানিত ৷৷ ধ্রু ৷৷ তবে কি য়াভনা নীরে, কভু ভাষিতে হইত ৷৷ \* !৷ তার সহ আলাপন, নিষত আমার মৃন্, সে হলে তেমন জেন, সুযাগে হেম গলিত ৷: ১ ৷!

### কোকব্রাগিন্যা ।। ় জলদ তেতালা তালেনগীয়তে।।

ষভাবে বাসনা বাস শুনিতে সদ। বাসনা ।। ধ্রু ।। য়া বল তা বল ফলে, ছলে পুরাব কামনা ।। \*।। সতত মনের আশা, শুনিব মধুর ভাষা, তব ভাব কিন্তু কিন্তু, আমি কি ভাবি ভাবনা ।। ১।! এত য়ে দিতেছ দুঃখ, তাহাতে মানিরেস্খ, কি জানি হারাই পাছে, অতি সাধের সাধনা ।। \*।। এমত না জানি আধে, দংশিবে বিরাগ নাগে, অব্যা হতি পীরিতে কি, য়তনে ঘটে য়াতদা।। ২।।

ভূলাল নয়ন মনঃ শুন স্থি কি বিধানে।। ধুং।।
মোহিতকপে ন্যন, সনোমত গুণগালে।। ঋ।। গুণে ভূলেম্নঃ,

कार्था छ नयन, इतित नयन मन, कठक्य छ । छात्न ।। > ।। द्रिति श्रिक्य, किया तमकृष, चनूषमा गूनगात्न, मनवाक्षा मना थात्न ।। \* ।! कार्ष्य विषय, नाहि भित्न भून, छेछ्रय मभ्याशिक्यन, मूदर्न श्रिन तमात्म ।। २ ।।

কোথাযে বঞ্চিলে নিশি বঞ্চিয়ে অধিনী জনে ॥ ধুং ॥
প্রেম পরিচ্ছেদে এত, অনুচিত কি কারণে ॥ ※। হল্পাণ
নহি দুঃখি, তুমি য়ে হযেছ সুখী,সেই সুখে মম সুখ, বর্ণিয়ে
কব কেমনে ॥ ১। য়থাদীপ্ত হুতাশ্বন, করে পতঙ্গ দহন
তৃপ্ত পতঙ্গিনী মন, পাধ্যা মনোমত ধনে ॥ ২ ॥

### খট্ অনুরাগেণ।। আড়া তেতালা তালেনগীয়তা∿ ।।

छक्रण यक्षण परः छेरच रहे क्यांनि ।। दुः ।। यासिनीत कांगतरण नयन जलन, श्राप्, अल्लंकोत जिलानाणि ।। ३ ।। पातानिण कात कू छा हिल्ल मूथवरण, मानिनी. श्रीतार्थ कांचि वितर वितरण, दिथे निमर्गन जात खाल र निकृत, कााम्, व श्री बाद्य त्र श्री श्री ।। ३।। बाल् थालं श्री जथजा खत्म हत्व मूथायार् छ छोधत मनिन वसन, जव जारं (हरत मन' क्रम्य विमीर्ग, श्री स्, हरला मू३थं जात त्रांगि ।। २ ।।

জানকী জীবন রাম. নবদুর্ব্বাদল শ্যাম।। ধ্রুং। অধ্য ভারক তব বিলে কে পুরাবে ) আর্, অধ্যের মনক্ষাম, চাপ্তালে তোমার প্রেম তার নিদ শন, গুহক চপ্তালে সুখে
দিলে আলিঙ্গন, তেমতি আমিও কর্ম চাপ্তাল সমান, রাম্
তবে কেন হবে বাম !! ১ !! জানিহে পাষাণে তব অপ্রমিত
স্মেহ, অহল্যা পাষাণী পাষ মানবিনী দেহ, অতএব আমিও
হে বোধেতে পাষাণ, প্রায্, সাধিতে তোমার নাম !! ২ !!
কপিকুল লযে সদা তব বাবহার, হি চাহিত জ্ঞান কপি সম
এজনার, উপাস্য সদৃশ উপাসক মানিলাম, শ্যাম, র্য
য়েন পরিণাম !! ৩ !!

তারণ কারণ ধন. পূর্ণ ক্লাভন । ধুণ। ভবাদি
তরক্লরক্ল অপার আ তক্ষ ) রাম্কিসে হবে নিবারণ ৷৷ \* !৷
উদ্ধি বন্ধন তব সাধর্ম স্বভাব, অজ্ঞান সাগর মন কিতার
অভাব,তবেকেন সে সাগর নাযার শলিলে, নয্, বোধ সেতুর
বন্ধন ১১ ৷৷ দশানন বিনাশনে বাসনা তোমার, তব নিন্দা
ভাষে দশ বদন আমার, পুরস্থ পাইযে বধ্য বধনা করিষে,
তায্, দূরে ভাজ কি কারণ ৷৷ ২ ৷৷ রাম নাম দ্যক্ষর তারক
ব্লুনাম, বিন্দুচ্যত হলে তবেবাখানিব বাম, তুমি বাম
আনি বিন্দু আমার সমুক্ষে, বাম, রহিবে করি কেন্ন ৷৷ ৩ ৷৷

অরুণ নয়ন রাগে,মলিন বিধ্বদন ।। ধুং ।। কেশপাশ নিশিসম ছিল্ল ভিল্ল ভাবে, প্রাণ্, অস্থির ভাব এখন।। \*।। আশা সলোবরে মম ক্মুদিনী মনঃ, তপনে ছেরিয়ে তাপে মলিন বরণ, নির্থি হুদি সার্সি মৃগাঞ্চ বিধুবদন্, সরস নয্কদাচন ।। ১ ।। জীবন চ্কোর আর প্রাণ চক্রবাক্, উভবেমনের দৃঃখে অজ্ঞান অবাক্,চকোর তপ্র চক্রবাক্ চন্দ্রে চায্যে, প্রাণ্, দোঁহেতে দুঃখিত্মন ।। ২ ।।

নিশিতে কোথাবে ছিলে,মম গনোরঞ্জন । ধুৎ ।। নিশা নাথ অন্তে নাথ, এলেহে দুঃখ ভঞ্জন ।। \* ।। আমারে ভা-বাযে দুঃখে, ছিলে পরকীয়া সুখে, সিন্দুরের বিন্দুভালে, অধ্রে ধরে অঞ্জন ।। ১।। নিজবাস পরিহরি, এলেকার বাস পরি, অপরূপ হেরে মরি, আমরি দলিতাঞ্জন ।। ২ ।।

খামাজ অনুরাগো। মধ্যমান্তালেনগীযতে।।
ভোগিবে কেপাপ পূনা আর ।। ধুং ।। বুঝিযাছিলার,
তারিতে রাখিতে হরি, স্থ হিনুলাধার।। \* ।। রথাযে
তথাযে রই, বিশ্বভাগু ছাড়ানই, জানি বিশ্বন্য বিষ্ণৃ,
বুক্ষাগুতোমার।। > ।।

জানামি ধর্মণ্ নচ নে প্রবৃত্তি। জ্নোনা প্রমণ নচমে নিবৃত্তিঃ ।! ত্বাছ্যীকেশ হু দৃত্তি তন । য়থা নিযুক্তো নি তথাক্রোনি ।। ধর্মেতে নাহিক মতি, অধর্মেতে রতিঅতি, রাকরাও তাইক্রি, হুদিস্থ আনার ।। ২ ।।

আনেকেজানে করুণা তব গঙ্গে !। ধুং।। তরলতরজে, বিহুর হুরশির্সি, সদাভবভ্যভঙ্গে !। \*।। ঘুটিল জগোর ক্রিযে, ইয়ৎগঙ্গা অহৎমিুয়ে, পুনর্জনাপদসব, চলিল আমারসঙ্গে ।। ১ i।

ইদ ংহিগাঙ্গ প্ত জ তামিহাঙ্গ । পুনন্চাঙ্গ ,
য়দিবৈহিচাঙ্গ । করেরথাঙ্গ , শ্যনে ভুজঙ্গ ।
য়ানেবিহঙ্গ , চরণায়ুগাঙ্গ ।।
য়িদ্যা হযতবে, শ্যনে ভূজঙ্গ হবে,বাহ্নে বিহন্তরবে,
পদেমা রহিবি রঙ্গে ।। ২ ।।

সংসারে ভরস। নাছি আর ।। ধুং ।। সকলি অসার, জীবন কমলদল, জল বিষের আকার ।। \* ।। এইবাঞ্চ। করি হরি, ওপদ পিঞ্জরকরি, রাখ এমানসহংস, দিয়ে বিমৃক্ত আহার ।। ১ ।।

কৃষ্ণ ব্রীয়পদপঙ্কজ পিঞ্জরাস্তে। অদ্যৈবনে বিশ তুমানস রাজহৎসং।। প্রাণ প্রযাণসমযে ককবাত পিত্তিঃ। কঠাব রেরধন বিধৌন্মরণৎ কৃতস্তে।। ককবাত পিত্রেয়বে, কালেক ঠ রোধহবে, করেকে শ্রিক্ষনাম, ছেড়ে তেড়ে ধরাভার।। ২,।।

কেবলে জননী ভোরে গজে 11 ধুন 11 কারণ তরজে, প্রসৃতি সদৃশগুণ, নাহিমা তোমার অংজ।\*৷ তবগর্ভাশ্রিত জন, নাকরে জন্মগুহণ, য়দিজন্ম অপালন, হেতুদুরে ত্যে রজে 11 ১ 11

उप्गर्जाश्रिया नक्त्रान्डर्ड क्षाया नर्डिं-

পিয়ং! তসা ত্ব-প্রতিপালনাদিকমপি ক্রোড়ে কৃত-দুরতঃ।। কাকোলানি গলে কৃশাণুমলিকে স্কেভুজসাবলি। নতা রোহসি তচ্ছিরে ধ্যম-হো মাতাসি গঙ্গে কথা ।।

তবুক্ষন্ত নহকালে, গলে বিষ বহ্নিভালে, দিয়ে উঠ শির-তালে, অপিয়ে অঙ্গে ভুজঙ্গে ।। ২ ।।

মাবলে মা ক্রগক্ষেকায়।। ধুন ।! বিনেগোতোমায়, কেআর ক্রণাকরা, কালেকাল য়ন্ত্রণায়।। \* ।। য়বে ত্র-জিবে স্বঙ্গন, পিতামাতা বন্ধুগন, পথিকে আহিরিক্বে, তবেকি হবেউপায়।। ১।।

য়য়ৢয়ৢ৽ জননী গণৈ য়৾দিপিন স্ই \*সু হছা জবৈঃ।
য়৾দয় য় পাছদিপ স্তরাল পতিত প তৈঃ কার্যতে
জীহরিঃ ।। অক্ষেন্যস্য তদীদৃশপ বপুর পিষণী
য়তেপুরুষঃ । তক্ষার কিঞ্গপেরায়ণপরামাতাসি ভাগীরথি।।

বেদাগনে আহেব্যক্ত, হলে জগতের ত্যক্ত, কোলে নযে তরাইবা, তরঙ্গে ভাষাযে কায়'৷৷ ২ :৷

বিচিত্র চরিত্র মা তোমার !! গ্রা মহিনা অপার,কে-পারে তরিতেপার,অপার সেপারাবার ৷৷ \*! ষ্য^শনি ল ৰাশিণী, কিন্তু দাহন কারিণা, স্পর্শনে কলুম্ধুৎস, সংশ্য কিআছেতার ৷ > ৷৷ প্যস্থ লোকানা দুছি সদুরিত স্পর্শবিধিনা।

স্বাথ নিমুণ গত্রী তদপিজগদূর্জ্ব গম্যসিনা

স্বাথ জাতা বিক্ষোংকতিকতিত বিষ্ণুন্জন্যসি।

অহোনাতগলে কিনপিচরিত তেবিজ্যতে ।।

স্বাহনীত গানিজ্যে, তরাও বিশ্বোর্জেন্যে, বিষ্ণুজাতা
ভ্যেকত, বিষ্ণুজন্ম দেও আবার !। ২ ।।

আরকিছেত্বাসনা তীর্থেমন ॥ ধুণ ॥ কর অনুক্ষণ, কিকরে সন্যাসধর্মে, গ্যাপিগু কিকারণ ॥ \*।। অন্তর তীর্থকরিয়ে, অন্তর তীর্থ ভাজিয়ে, চিন্তানবীন নীরদ, শ্যামা ইশানী চরণ॥ ১॥

অল গ্র্যাল গ্রাণি গুদানৈ। রল শ্কাশিক।
বাসসল্লাস্থলৈ । নবীনক্ষুর্নীরদ শ্যাম
কাষা । সনাযাতি চেতো য়দীশান জাষা ।।
ভ্যেমুক্তিঅভিলাষি, শিছে হবে কাশী বাসি, উণোচানে দুনো আশা, ভরস কেন এমন ॥ ২ ॥

কেজানে মহিমা মা তোমার ।। ধ্র ।। তুলনাহি য়ার,অপার সেপারাবার, হ্যেছেনা হবে আর ।। \*।। শক্তিঅনুরক্তশাক্ত, বৈঞ্ব বিষ্ণুভাবংক্ত, শিব উপাসক সৈব, অখিল বিশ্ব প্রচার ।। ১।।

শাক্তঃশক্তি নিষেবগাৎ ত্রিপথগো শৈবঃ শিবো পাসনাত্। বিঞোঃসেবন্যাচ বৈঞ্ব ইতি প্রাবঃ পৃথিব্যাশ প্রথা। বৃদ্ভক্তান্ত্রপান্ত্রিপথনেখ্যাতাদি ভাগীরথী। নেদৃক্দেরক বত্সলব্ধ মভবত্নোবাভবেত্ ভাবিবা।। তুমিগঙ্গে ভক্তাধীনা, ভক্তভাবে ভ্রেভ্নিনা, বিকালে ভক্তের নামে, স্বাক্ষী ভাগীরথী তার।। ২ ।।

তারিতে মহিমান্য তোমার ।। ধ্রং ।। পুণ্যআছে স্নার, শিকপুণ্যে কড়ীভূত, তারপকে কি অন্তুত,তরিবে হকর্মে ভূত, করণা কি মার ।। ১ ।।

সুরধুনি মুনিকন্যে তার্থেঃ পুণ্যবস্ত । সত রতি নিজপুণ্যৈ স্তত্ত্বিত্তে মহত্ব ।। মদিচ গতি কিহানি তার্থেঃ পাপিন মা । তদ্পি তব মহত্ব তন্মহত্ব মহত্ব ।।

আমি গতি ভক্তিহীন, নাহিডাবি অনুদিন, তার তবে জানিগঙ্গে, মহন্ত্র অপার।। ২ ।।

জলদ তেতালা!! দৈহ দুক্ল মুরারি, ছিছি কিরক
করিলে ।। ধ্রু । রমুনা পুলিনে নিতি আদিয়াই, একি
খেলা খেলিলে ।। \*।। সদাক্ষ প্রাণা গোপান্ধনাং বাঁধা
পাদপজেতাই, এবাদ পাধিলে ।। ১।। য়ত বুজনারী,
বুঝিবারে নারি, তবতন্ত হরি, বাস কেন নাদিলে ।। \*।।
অসংখ্য বসনদিলে, ডৌপদী লজ্জা রাখিলে, আজু নিজ
হাতে হরি, বসনহরিলে ।। ২।।

## थायाक टिव्रवी ॥ मध्यमान् ॥

অরে, তোরে কিবলিব প্রাণ ।। ধুং ।। আপণ করমফলে, 
য়ত্রণাবিধান ।। \* ।। তবলাগি মমমন, ব্যাকুলতা অনুক্ষণ,
তবেকেন তবমন. হেরিছে জিনি পাষাণ ।। ১।। বুঝিভাবে প্রিয়জন, তবজন্য প্রযোজন, হ্যেছে ভাবেএখন,
অমনি হ্য সন্ধান ।। ২ ।।

কেমনঃ এতআকিঞ্চন, কর অকারণ ।। ধুণ ।। কোথা ছিলে কোথাএলে,কোথাবা হবেগমন ।। \* ।। প্রপঞ্জভূত পঞ্চ, ভূমেতে তাছাতে বঞ্চ, নাহিভাব তঞ্চতঞ্চ,বঞ্চনা বলকেমন ।। ১ ।। অতিথন আশাকর, লক্ষণেলে কোটি-ধর,কিন্তু তাছাকোথ। রবে,পাবেরে সবে পাঁচ্পণ।। ২ ।।

क्रिंशिंग श्रम्य गंगरन, ११ धुः ११ व्यस्त कृष्ट छ हिल्ल, व्यस्त गंगिरन ११ %।। व्यक्त व्यक्त विधि, नि-नाहेना छननिधि, वारता व्यक्तिन विधि, नाह्य स्थरन ।।ऽ। विनाठवंद्र ज्यानन, कृत्र ममझीवन, श्रमूपिठ व्यक्तिन, म-निन वत्र १। २।। व्याष्ट्र श्रम्ति श्रम्न, ठार्ट्ड ह्राय व्यधि केन, कत्र मूथ मूक्षानान, हरकातिनी स्राम् ।। ७।।

জগদয়ে বিলয় কি আর ।। ধুণ ।। রযেছি না নিরাল যে,নাদেখি নিস্তার ।। \*।। নাবুঝিযে তবমর্ম,করেছি গো মৃতকর্ম, অগ্লারে হ্বনমাত্র, পগুশুমসার ।। ১।। রেখেছো অজ্ঞান ঘারে, বেঁধেছে৷ অলকডোঁরে, বিশৃত প্রহরী দেয়, রব্রণা অপার ৷! ২ ৷৷ এহি এহি ত্বরাকরি, তরাও জগ দীশ্বরি, কফবাত পিত্তেক্ত, রোধের আকার ৷৷ ৩ ৷৷

# চিত্রকাব্য নাম, জগন্নাথপুসাদ বসু।। পদাদ্য ভক্তব্য !।

- ), क्रमस्य विवयकि आत !। धु॰ ।।
- ২, গতি হীনে ত্রমিগতি,ঙরুসা তোমার ।।
- ৩, নহি ধর্ম কর্মোরত,
- ৪, নাহিজ্ঞান সদসত,
- e, থরথর অবিরত, অথবা, থর**থর হুদিপম্**,
- ७, প্रভাবে মাযার।। ১॥
- १, সার উপদেশ তারা,
- ৮, मक्रमू जा नाता धनाता,
- ৯, विकाल मा उवस्रातन,
  - >•, जूरथद्गः विद्यात ॥ २ ॥

কৃপাহীনা কেনহলে প্রাণ ।। ধু-।। শরণাগতেরে একি, এত অপানান ।। \* ।। নহি কোন অপারাধী, মনান্তে নরণ সাধি,নিবেদন রাখপ্রাণ, ত্যক অভিমান ।।১।।

আড়া তেতালা!৷ কিশুনেছ কিকরেছি, কৈনকর

चित्राम्। पुं्रां चामि माकि विवजूमि, ভालर्वरम्हरत्न প্রাণ।। ₩ ।। प्रति कत्त्रथाकि দোষ, উচিত করিতে রোষ, বিনাঅপরাথে কিরে, সাজে এতো অপমান।। >।।

তোমার বিরহ সযে, বাঁচি য়দি দেখাহবে ।। ধুন।। হেন জ্ঞান হয় প্রিয়ে, য়েন প্রাণ নাছিরবে ।। \*।। কারণ প্রনয়জ্ঞান, পলকে নিশ্চিতপ্রাণ, অবশ্য অন্তর্তনে, প্রনয় হইবে তবে ।। ১।। কিন্তু তাহে ক্ষতি দাই, আমিমাত্র ইহাচাই, তুমি সুখে থাক্মম, শবদেহে সবসবে।। ২।।

কিফল ছইবে তব, আমারে হইলেবাম!। ধু: ।। য়ত কর অয়তন, তত জপি তবনাম।। \*।। ভূমিধ্যান তুনি জান, তুমিমান তুমিপ্রাণ, তুমিসুখ তুমিদু:খ, তুমি আদ্য পরিণাম।। >।।

নাথের গমন বলে, নযনে নহে রোদন ।। ধু: ।। অঞ্ন সহাস্থারা, শুন তাহার কারণ ।। \*!। পতিবিরহ করা তে, মানস নন্দনাঘাতে, বিদারিরে এতন্তার, হেডুতে সূত্র পাতন ।। ১।।

शाक्षात अनुतारभा।। कशक्তात्वन भीयठाः।।
कमत्व कमत्वास्त्र, उर विमन वर्यात्न।। धुः।। जुमन
जामान्नमः, नमास्टक्क जात्नास्त्रात्न ।। \*।। कृत्वकृत

বিকশিত, যদ্যপি অসম্ভাবিত, তোমার ৰূপে বিদিত, ফুলেফুল কেনামানে ।৷ ১ ৷৷ ফুল্লকমল বদন, নিন্দীন্দীবরমমন, অরবিন্দ সমশোভা,শোভিল আননস্থানে ৷৷ ২ ৷৷

বরঞ্চ বিচ্ছেদভাল, প্রেমপরিচ্ছেদহতে !! ব্রুপ ৷৷ স্বভাবি বে ভেদভাবনা, অভেদ অভাবনতে ৷৷ \* !! পারিতে সতত আশা, হবে প্রিয়জন আসা, আসা আশো সুখনাশে, তাপেতে তনুমহতে ৷৷ ১ ৷৷ বিচ্ছেদ হইলে পরে, নাভেবে মাথেরিতরে, শশিমুখ নিরস্তর, রহে অত্র অনুসতে ৷৷ ২ ৷৷

#### গারা অনুরাগ।। জলদ তেতালা।।

अनुकम्भी विजयता, त्कम था क्षाना ।। धु ।। वाक्षा भाव कलपात्म, इरवरहा भा कण्याला ।। ॥। अप्र निखरम्ब यता, जातिराज प्रमाम भारत्य भिवयपिता, श्री क्षाप्त करूना ।। ।। जेपि भय्मकार्ता, इनाइरन परक्कारता, भारत वाजात्मात्म, शिक्षक्य उपाणा ।। ।। त्माम काय मार् काय मार्च अध्याज जिका ।। ।। अभाव अर्थताकरम, करताना मा कृष्टिन्जा ।। ७।।

গারাভৈরবী । জলদ তেতালা ।।
মানে অপমান য়দি, হ্যেছিলতার ।। ধু৲ !। সাধিলে
দা কেন,স্থি একোন বিচার ।। \*।। কেমন করিযে, আ
ছগো ভূলিয়ে,ত্যজিলে সেপ্রিয়ন্ত্র, কিহ্বে তোমার ।। ১

না হেরিলে কেঁদেমরি, ছেরে যুড়ায জীবন।। ধু-।। কি জানি কি করেছ প্রাণ, সতত ব্যাক্লমন।। \*।। য়িদ প্রেমে মজাইলে, ক্ষতিকি হে দেখাদিলে, পুঝিযে অনন্য গতি, দেহকি এতয়াতন।। ১।।

कहिर वाथांत्रकथा, उत्य श्रकानित्व नाति ।। थु॰ ॥ जुलि ल अखतानल, नयन कत्ल निवाति ॥ \*।। त्रम्विधि श्रिक कन, द्राति उ ठ खानन, कि जानि इय किमन, जुल्म जुलि जिनाभाति ॥ ১॥

পীরিতি নাছতে কেন,বিরহদেয় য়াতন । ধুণ ।। পতন নাছতে তনু,আগে হইল দাহন ।। \* ।। তবমনো মমপ্রতি, হেরেছি সদয়অতি, তবৈকি করমদোষে, বল নাহ্য মিলন ।। '১ ।।

প্রমের শপথ প্রিযে, বলকারে ভালবাস ॥ ধুং ॥

मুধাইলে নুধামুখি,সুধুই ঈষদহাস ॥ \* ॥ তুমি মম প্রাণ

ধন, তবআছে কতজন, আমি করি ত্রধ্যান, তুমিকর
কার আশা।। ১॥

### সুজ্জরী রাগিণী ॥ আড়াত্তোলা ॥

ক্মনে তরিব তারা, মাষা ভব সিন্ধুপার ।। ধুন ।। সেনদী বিষম অতি, হেরি অকুল পাথার ।। \* !। মাষা জলধির রঙ্গ, পাষ্যা আশা বাষ্সঙ্গ, বাড়িল মোছ তরঙ্গ, অহণ আতক্ষ অপার ।। ১।। অতএব জগদমে, কিকল আর বিলমে, অনুকম্পা অবলয়ে,করি সুবাষু বিস্তার ।। ২।। পরে দিযে পদতরি, নহপারাপার করি, তবে এশক্ষটে তরি, নতুবা নাহি নিস্তার ।। ৩।।

তুমিছে সুজন জানিয়ে আমার মনঃরতন সাপিলাম তোমারে ॥ ধুং ॥ প্রথমে নাজানি এমন স্জন মানস রঞ্জন, নিদ্যে প্রাণসংহারে ॥ \*।। তোমার তুষিতেমন, আছে কতশতজন, জেনেছি প্রাণ তব্যাবহার, কিক্ৰ আর, মনধন দিলে কারে ॥ ১ ॥

গোঁড় অনুরাগেণ।। মধ্যমান্তালেন গীয়তে।।

धिक् धिक् धिक् मनः, रकन ভোলে। आता। धु॰।।
काल जानि घनाईल, रककरत निखात ।। \*।। रमिथरक
रमिथरक मिन, मिन मिन इरला मीन, उन् अहरकरह कीन,
किहरव रकामात ।। ১।। मण्णरम विश्वमञ्जान, व्याश्यम
मण्णममान, जृलिय कालोत धान, जाविष्ठ किहात ।। \*।।
प्रमिवल कालीशूत, किरम ग़ारव श्रथमृत, नामना कत्रह
जित्न, व्यक्षां कर्श्यात ।। २।।

জনদ তেতালা। কেমনেরে প্রাণধন, আমার মনো হরিলে ৷৷ ধ্রু ৷৷ বিশ্বের অগম্যস্থানে, বলকিরপে পশিলে ৷৷ \*৷৷ রক্ষাকারি দুইজন,শ্রবণ আরন্যন,তথাগমনাগমন, কোনপথেতে করিলে ৷৷ ১ ৷৷

য়েমনে আমার মন, হরেছিলে প্রাণধন ৷৷ ধু ৷৷
নেমন কাহারে তুমি, করিযাছ বিতরণ ৷৷ \* ৷৷ মনতুলে
ত্লে মন, ছিল সমতূল মন, ভারহতেছে এখন, তব্মন
তিন মন ৷৷ ১ ৷৷

একতালা। মনেমনে রেরপেতে, হ্যেছে মিলন
!। ধুং ।। শুনতবে প্রাণধন, তাহার কারণ ।। ৠ। তব্মন
কান্তকান্ত, অষশ কান্ত নিতাত, অযশ আমারনন, দোঁহে
দোঁহার আরুর্যন । ১।

(गाँष्मलात व्यनुतान।। जिखे जान।।

छेमय वित्र मानी, मम इनयं ननाता। धुः।। नृथं निना
लूका हेन, मृश्यं प्रक्रभी व्याहेन, विधित्व व्यवना कार्य।। ॥।

रमानी नामानान्य, मानिना कलझमय, भकाभक होन
हय।। ॥। পূर्व छ। दि वियोग जातका दिखे त्वेनहें, विता
किन्न श्रान्तिना हुन। ।। हुन। मार्थ मानि श्रान्ता नाका नामिन विल्ली हुद्द श्रान्त्रहें, कीवन तद क्रम्पन ।। ६।। क्वित्व तमनी नय, महत्वत छ्डाण्न ११ दुर ११ इति छात द्वालीला बल्खन व्यक्तिगर,हेक्कन श्राद्य कामिक क्षम वृत्वित्य (एथहकत, हयिक नय व्यन्त, ग्राद्य कामिक क्षम ११ \* ११ प्रच्या हरन करत, मन्त्रण व्यात रहोतन, वादा व्यक्ति माधात्रन ११ १। भूनः भूनः बहेक्न, नरहर्द्या छात्र विक्रम, उद्दर्श काहिन्द्रन ११ \* १। ह्यामारस्र प्रक्रिनामान, ध्रानक्कान ममाधान, व्यक्तिश्रान स्नीतन १। २ १।

তব অপরপরপ, হেরি তিন ভাবময় ৷৷ ধ্রুণ ৷৷ জাগুত
সুস্প্তিআলো অপন অবস্থাপ্রাণ, দেখহয় কি নাহ্য ৷৷
প্রথমে জাগুত সম, রূপদরশন ক্রম, ধ্যান জ্ঞান স্থির
রয় ৷৷ ৠ ৷৷ মধ্যেতে সুস্প্তিকাল সুখ মিলন উপম, মিছত মোহিতোদ্য ৷৷ ১ ৷৷ অস্তেতে অপন প্রায়, বিচ্ছেদ বলি
য়াহায়, হেরিতে দহে হৃদ্য ৷৷ ৠ ৷৷ কভু দীন কভূহীন
বভূহুাৰ কভুনাশ, তাহার কিবা নিশ্চয় ৷৷ ২ ৷৷

কুলশীল লোকলাজ, কলন্ধ লাঞ্চনাভ্য ।। ধুন ।। বিনাতৰ ভৰপ্ৰাণ কথিত য়াৰত ভ্য, কখন আনার নম ।। \* ।। একজ্বালা অতিশ্য, রখন য়াহার হ্য, অন্যান্য জ্বালা সংশ্য ।। ১।। মুখা কালের রন্ত্রণা উপনীত হলে প্রাণ, আরোগ্য জাগতে ক্য ।। ২ ।।

প্রেমরপ পাপচবে,কিরপে পাইব তাণ গাঁধুনা আখ-

সুধ শেষেদৃঃধ কৃন্য লক্ষ্ণপ্রায়, ঘটিল সেই বিধান

। \* ।। এপাপের প্রায়শ্যিক, জাবন যৌবন বিত্ত, চিত্র

যোগে করিদান ।। \* ।। প্রথমে চরেছে য়াহা, বলকিলে পাব

তাহা, করিষে কিবা সজান ।। ১ ।। তবে হইতে নিজ্পাপ,
বলমাত্র অনুতাপ, নামজপ রূপধ্যান, ।। \* ।। শেষে
শক্তি অনুসারে, প্রাণ্ বিস্কর্তন তারে, দক্ষিণা দানপ্রমান ।। ২ ।।

উদয বিরহ घन, मूम इत्य शश्रात ।। धुः ।। अपूर्णन इंडाम्बन महाल প্রতাপে महे, मूझन घन मघत ।! ॥।। एम घन প্রযোজন, সৌদানিনী ব্রিষণ, ক্রকারো সমী রণে ।।॥।। ক্ষণপ্রভার প্রভাব, নিয়ত চমক ভাব, ব্যাক্ল ভাবজীবনে ।। ১ ।। ব্রিষণ সমস্থি, আঁথির নীর নির্থি, নির্বধি নির্পেণে ।। ॥। ধারাধ্রধারাপ্রায বহে বক্ষঃ ধ্রাশনে, মোহিত ক্রকাশনে ।। ২ ।।

আমার পারিতি স্থি, সুধা শশু স্মান্হ্য ।। ধুন ।।
বিরহ্ রাহ্রপ্রায় গুলিল, আসি নিশ্চম, ইইতে পূর্ণ উদ্ধা।
শশিতে শশাক্ষ য়থা, পাদিতে কলক্ষতথা, নিষত মিলিত
রয়।। \*।। আলিক্ষন সমসুধা জীবন চকোর তায়, সতত
মোহিত ময়।। ১।। পরে গুহুণের সৃষ্টি, মত্ত্বে পাণগুহু
দৃষ্টি, জ্যোতিষ শাসনে ক্য় ।। \*।। জানিবা কুজনশনি
খ্রদৃষ্টি, ভাবেম্ম, প্রেমশশির সংশ্য ।। ২ ।। অর্থাৎ

শশিষেমা, পূর্ণ ব্যতীত কখন, রাক্ত আচ্চাদিতন্য । \* ৷ তেনতি মমপীরিতি ছইতে পূর্ণ উদয়, বিরহ রাজ্ গুশিষ ৷ ৩ ৷৷

পারিতি বিশিনে স্থা, ভূগিতে সংযোগফল ।। ধুং।।
মানস বিহুলনা ক্রাবে অতি আকুল, গেল হুইঘেচঞ্চল
।। \*।। কেজানে আছি তথায়, ক্রন নিযাদকায়, করকাষ হাব হাব ।। \*।। ভেদিল বিহুল বুক বিরহ্ শাষকে
হাব, লিপ্তবিবোগ গ্রল ।। ১।। তাহাতে মোহ ঘটিল,
অধৈয়ত জ্বালা বাজিল, অস্থির ভাবজনিল ।। \*।। উন্নন্ন।
মালিন্য কেদ বিষাদ য়ন্ত্রণাতাপ, জীবনপ্রাণ বিকল
।। ২ ।। সম্পুতি উপায়সই, তোমারে রিশেষ্কই, ন্তে

পুরে সারাছই ।। ক্লা সুমিলন মহৌষধি লাথেরে আনিষে য়দি, নিবার তাপ অনল !। অথবা, নিবার তাপ গরল।। ৩।।

णानवाना जानशिक जाय, मितिक जान वितर । । ५०।।
वितर जनन नय, जिल्लक भी जनस्य, जलन जाना ज्यवभारत ।। ३ ।। नाम जाला जालावाना, जारे कितनाम
जाना, पूर्वाट जार्जि शिशामा ।। ३ ।। जियि के विज्ञाम
शोनिक नोतर नरे, पर्ट (पर पृश्यादिष्ण ।। )।। इत्य
(श्रमज्यानिक, रह्द मिनन् घरनापिक, श्रमक मान श्रिक
।। ३ ।। कक्ष्म भानन काथ। वित्रिक हर्दमरे, पृश्य रक्ष्म
क्रिएएण ।। २ ।।

किरयन्त्र श्रां व वां श्रां, नहेट जाहां न मनः ॥ धुः ॥ वां मना পढ़िए मिल क्षेत्र किर्मिक तिर्देश, मिल तां श्रि रममन ॥ स्ट्रेट वृति (माधिक, नव शोदन कर्मिक, विमो ज्ञान क्षेत्र का त्रां ॥ ज्ञात श्रि श्री क्षेत्र क्षेत्र कर्मान क्षेत्र क्षेत्र व्यक्त क्षेत्र क्षेत्र व्यक्त क्षेत्र क्षेत्र व्यक्त क्षेत्र व्यक्त क्षेत्र व्यक्त क्षेत्र विभाग किर्मा क्षेत्र विभाग किर्मा क्षेत्र विभाग किर्मा क्षेत्र विभाग किर्मा क्षेत्र विभाग क

ৰাহিদুংখ মরিয়দি,তার বিরহদহনে । ধুং ।। এই ভন্ন অভিশ্য পাছের্য প্রাণস্ট,কলক্ষ জুড়িভুবনে ।। #11 কলস্ক কারণ শুন, পারিতি ৰূপ অরুণ, মনোরথ আরোহণে !! \*.!! অবিরত বিরাজিত হৃদয় গগনেসই, অন্তনহে অনুক্ষণে !! > !! সম্পুতি বিরহানল, অন্তরেহলো
প্রবল, নাথ নিরাশ! কারণে !! \* !! অতএব সবমতে
হিতে বিপরীতসই, এজালাঘুচে কেমনে !! ২ !! অর্থাৎ
প্রেমতপন, তাপেমনঃ বাসিজন, লুপ্ত গুপ্ত মনেমনে !! \*!!
পুনশ্চ বিরহানল মেঅকে দহিবেসই, অন্তরে রাখি মে
জনে !! ৩ !!

পীরিতি সুধাৎ শুন্থি, বিরহ্ রাহ্গ্রাশিল ।। ধুণ।। ছিতিন্য ন্যান্ত, একি বিঘট ঘটন, নিয়ত ঘেরি রহিল।। \*।। হুদ্য প্রন্নমন, প্রথ্য শশির সন, সংপূর্ণ ভাষ হেরিল।। \*।। কুজন শনির দৃটি প্রিয়ন্তন জিতিগতে, ছাযানপে আচ্ছাদিল।। ১।। এখন তাহতেম্ক্তি, এইতে। বিহিত মুক্তি, নিশ্চিভোদীত হুইল।। ই।। বুলক্ষ্য নহামন্ত্র পুরুষ্চরতেনেসই, য়দি বিশ্বনা জিনিল।। ২।।

বাসনা হার্য নাজে, নিয়ত রাখিতোমারে ।। প্রত্থার রারলাগি অনুরাগি সর্বাতাগি কেমনেরে, অন্তরে তাজি তাহারে ।। \*।। অন্তর হইলেহ্য, অন্তরচিন্তিতময়, তাঙ্গে নিকটে থাকিলে ।! \*।। অন্তর হইবে ভাবি অন্তর ব্যাক্ল প্রাণ, অধৈয়া অন্তির ভারে ।। ১।। য়দ্যপি এমত্কহ, আমার

অবশ নহ, তথাপিত সদাতায় !! \*!! আশাপথ নিরী কণে অস্থ্যত্তশাপ্র। সুখিয়ে ঘুচাতেপারে।।,২।।

কেবলে তোনার হৃদে, রোনাবলি রলি থান ।। ধুন ।। য়েজানে য়েমন কবে অথচ নাজানেতার; কিবা নিগুঢ় সন্ধান । %।। গুানিবারে বিশ্বর, ত্যজ্জিয়ে নাভি বিবর, উঠে ভূজক্ষ ভূধর।। %।। তাহাতে নানিকা খন, পতিভয়ে নত কায়, করে কুচ শন্ত্র্যান।। ১!।

পুরুষ জীবনমীন, পুাসিতে মীনকেনন । ধ্রং । সংসার
সাগরনীরে কান্নিনী বড়িশকায়, কামনা সূত্রগণন । \* ।।
আগেনি ধীবরপ্রায়, অনজ্বপো তথায়, বিরাজে কে দেখে
তায়, কর্ষে সূর্থারণ ৷৷ ১ ৷৷ পুরুষ কুণ্ডিত চিত্র নাবৃধি
ষেহিতাহিত, নোহিতে গাবে নিশ্চিত, অধ্রামিষ মশন
!৷ \* ৷৷ অইকালে কান্মণ, ত্ণ বাণ সম্মোহন, কামরাগ
ছতাশন, জালি পাক্ আ্যোজন ৷৷ ২ ৷৷

মধ্যমান্। কেবলে বরিষ্া—কাল, বিরহিজনার কাল ৷৷ ধুং ৷৷ বিনেগুণনি সিখি বেড়িল বিপক্ষ জাল ৷৷ \*৷৷ ঘনঘন করেঘন, ঘন ঘোরগরজন, চপলাচনকে ঘন, শুনিতে অতি করাল ৷৷ > ৷৷ নিকটে থাকিলেপতি, দুঃখে হতে৷ সুখ অতি, য়েমন বামাজে সতী, শুণ্ডাণ্ড চিরকাল ৷ ২ ৷৷

জনদ তে তালা।। কিছলো স্থিরে ঘন, বরিষে বরিষে।। ধ্রু।। প্রকুল ক্লন্ত্রিষে ইরিষে।। \*।। यम घात ভাবের্ছে, মালতী মাক্লতবছে, বিরহিণী স্থির । নহে, ধরিষে বরিষে॥ ১॥ মন্দ মন্দ ঘদরব, সংযোগি পাক্ষেউৎসব, ভাক্ষে বিযোগিসব,মরিষে মরিষে॥ ২॥

> পোঁড় বা পোরসারস্বরাগেণ।। মধ্যমান্ তালেন গী্যতা ১।।

মনোহর প্রেমপুরী, হইলপতন ! পু. ৷৷ বিরহ নিখাঘতাপে নিরাশননিরদকরে, দুঃখধারা বরিষণ ৷৷\*.৷মালি
ন্য অনিলবছে, অচল সুন্থিরনছে, করিষে কেমন ৷৷ \*!৷
শানস নির্মিতপুরী স্বভাবেরছিবেসই, ভেবেদারা অনুক্ষণ
৷৷ ১ ৷৷ বিষাদ করকাঘন, ঘনবরিষ্থেঘন, সহেলা প্রথন
৷৷ ২ ৷৷ নোহবজু হৃতানন সুথ বিহুজ্বে বাসা, দেখ
করিছে দাহন ৷৷ ২ ৷৷

শযন সাগর তবং বিচিত্র গঠন ।। ধ্রু ।। স্রাস্থা বারিবিষবাড়বানল সঞ্চার, একত্রে হ্যমিলন।।।। প্রথমে কটাক্ষয়ারে, মহকর স্রাধারে, হরিষে চেতন ।। ।।।। পরেতে মিলন দূটে স্থাবরবিষেপ্রাণ, করমোহের বা-রণ।। ১,।। সমঘে মাণিনাছলে, যেজলে মানজনলে, তা-হার কারণ।। ।। নমন শলিলেনান জনলনিবাষেপ্রাণ-বাঁচাও প্রেমিকজন ।। ২।। অবশেষে হৃতস্তে, দহিতে প্রেমিক দেহে, বিষদরশন ।। ।।। অমনি সেঅনুরাগে বিরহ বাড়বানল, দহেশরীর ভ্রন।। ৩।। खार जनाथ। जर, खार मीनंन।। धुः।। श्राय श्रायात्र प्रश्नित ।। ३।। यस्त भीनन्द्रत वाक्ति श्राव भावत ।। ३।। इत्त भावत्र प्रश्नित प्र

সুরার সাগর ছেরি, লাবনা তোমার ।। ধুং ।। গুণ পরিনামে বুঝ হ্যন্য সমপ্রাণ, ত্রিগুণ ভাব দোহার ।। \*।। প্রথমে আদন্দেদ্য, দ্বিতীয়ে মোহিতম্য, সাধ্র সুরার ।। \*।। তৃতীয়ে বিগুণগুণ কিক্র বিশেষঃ আরু, বৈকুল্ল ভাবস্ঞার ।। ১॥ তথাতব দর্শন, অগ্রে সুখ সমর্পন, মধ্যেতে তাহার ।। \*।। ধ্যানধ্টে মোহ্ম্য শেরে মীল নার্থেপ্রাণ, ব্যাকুলতা অনিবার ।। ২ ।।

समार महास्वावत्, सिक्न धर्यन ॥ धुः ॥ तिकिनय चित्रमय मृश्यमय श्रापनहे, तिलूशास्ट हयकन ॥ \* ॥ लि-त्रीिक भिन्न श्राप, विभन कल माडाय, हिनकवकाय !! \*॥ वित्रह स्थितान चित्र निज्ञामा हायार जनहे, त्रास्थ भीनन स्वन ॥ >॥ हडाम महाक्रकाय, मृश्य हेन्सोवत्रश्याय, বিরাজে তাহায় !! \*!৷ কেদ কুমুদিনী তথা মোহ কোকনদসই, হেলঞ্চ ব্যাকুলমনঃ !! ২ !৷ করিতে প্রকল্পেবে
কেজানে এমনহরে, সদাকালরবে !৷ \*!৷ চিস্তারবি
ধ্যানশশি অধৈর্গ সুমেরুবেড়ি, অস্তোদ্য প্রতিক্ষণাংশ।
এরপেতে প্রাণসই, য়িদ কিছুদিনরই, কিছবেতাকই

!৷ \*!৷ পিরিতা প্যশুখাবে, লাঞ্ছনা পক্ষসারহবে, মজিবে মীনজীবন !! ৪ !৷

মনদেহ কিতিওলে, হইল বপন ৷৷ ধুং ৷৷ অসহ
বিরহ বৃক্ষ দুঃখ পল্লব সহিত, মুকুলিত নোহমনঃ ৷৷ ৄ ৷৷
লাঞ্ছনা পশ্ধচ্ছেদিযে, মূলেতে বেদি বাঁধিযে, তায়অনুক্ষণ ৷৷ ৄ ৷৷ গঞ্জনা ৰূপশলিলে,জিহু৷ সেচনি সং য়োগে,
গুরুজনার সিঞ্চন ৷৷ ১ ৷৷ তাছাতে ফলিলফল, নিয়ত
মনঃবিকল, একি অনুক্তণ ৷৷ ৄ ৷৷ কর্মভোগত্বকে আহা
তাহা আছোদনসই, কুল্কয় আয়াদন ৷! ২ ৷৷

নিশিকার প্রেম স্থি, একই লক্ষণ 11 ধুন 11 কহিছে
বিদরেকায দুই দুথিতেরসই, দুংখ সমান গণন 11 \* 11
রক্ষনীর তমোময,প্রভাতে য়েমনহ্য, বিনাশকারণ 11 \* 11
প্রেমসাধ নিশি স্থি বিরহ প্রভাতাতপে,নিষত তাপিতমনঃ 11> !! নিশিতে শশিরুদ্য,বিনাকুমুদিনীন্য,প্রফুল
আনন্যা\*! প্রেম নিশি সুখ শশি বিনে আনন্দ কুমুদী,
প্রমুদিত অনুক্ষণ 11২ !! নিশিতে ক্ষলবন, সমুদিত অনু-

ক্ষণ, জানিবাতেমন।। # ।। পিরীতি নিশিতে কুলকমল কাহারোসই, প্রফুল্ল নছেকখন।। ৩ ।। '

বিরহ বিকারে তনু, হইল পতন !! খু. \ ৷ গ্রেছ বসস্ত তায অনল সদৃশকায়, দহে মানস নজন ৷৷ \* ৷৷ রোগের কিবা নিদান, সাধিতে তারসন্ধান, উপজে বিধান ৷৷ \* ৷৷ যৌবন চাঞ্চলামন, সকলি অলীকপ্রাণ, শুন নিগৃত কারণ ৷৷ ১৷৷ রথা উক্ত নরাক্ষিত, নহে কভু অনুচিত, জগতবিদিত ৷৷ \* ৷৷ দেখ নিদর্শন্তার, কোকিলে করে হুক্কার, তুঃহিতুঃহি প্রিয়জন ৷৷ ২ ৷৷

लिती जि लत्र मण्ड, जिल्ल गम्य ।। दुः ।। मज्र क्षण्य । क्षित लगित् ज्ञादिन है, नियं ज्ञाद है प्रयं ।। सः।। मज्ञ खर्गाल मण्डले, लियं ज्ञाल प्रयोग ।। सः।। मज्ञ खर्गाल मण्डले, लात्र लग्न मण्डले, श्रम् प्रवेग ।। सः।। त्र क्षित लग्न मण्डले, व्या मण्डले याद्या ।। व्या प्रवेश मण्डले कर्षा ।। व्या प्रवेश मण्डले कर्षा ।। व्या प्रवेश मण्डले प्रवेश मण्डले विक्र क्षण्य ।। प्रविच्य प्रवेश प्रवेश मण्डले प्रवेश प

গোরী রাগিণী।। আড়া তেতালা।। বিরহে হযেতি আমি, মদন অস্তকপ্রায়, কিপোড়া হাবহাব ।। ধুন ।। দুঃখ জটাজুটভার, মন্তকে শোভে
আমার, য়ন্ত্রণা অনন্তকার্য।। ১ ।। মালিন্য বিভৃতিমুখে
নিষত শোভিছে। বিষাদ অনল ভালো ভালেতে জুলি-ছে ।। \*\*।। মোহবিষ কঠাগত, মোহিত করে নিষত,
এলালা কহিবকাষ ।। ২ ।। বৈকুল্যতা বাঘাম্বর শোভে
অঙ্গময । শোকতাপ পিণাক ডমুক্ল ভাবের্য ।। \*\*।।
শিরে আসা সুধামন্দ, তেকারণে নহেধুন্দ, জীবন
নাহিক য়ায়।। ৩ ।।

ভাবসেই পরাৎপরে জীবের জীবন, মনঃ, অখিল নিকেতন।। শুং ।। কিবা মহিমা প্রভাব, সর্কভূতে সম-ভাব, বিভুবিশ্বের নয়ন ।। ১।। অব্যয় অভয় নিরাম্য নিরঞ্জন। উপমারহিত সর্কাহিতসনাতন ।। \*।। তপ্র প্রনগণ, মাঁরবংশ অনুক্ষণ, নিয়ত করেভূমণ।। ২ ।। জ্ন-লী জঠর মধ্যে য়ক্ষন-নঞ্চার। তক্ষন আহারদেন কিবা চমংকার।। \*।। পরেতে ভূমিগ্রুলে, রসরক্ত ক্লেদেখনে, মধ্র দৃশ্বটন।। ৩।।

ভলনা ভূলনা ভূমে প্রভাব তাঁহার, মনঃ,সে অতিচনৎ কার | শুন | প্রচণ্ড রবি কিরণ, পরক্ষণে বিনাশন, অমণি ঘণ সঞ্চার । ৷ \* | শা স্থাবর জন্তমআদি স্নার্মেনিয়ম । কারসাধ্য করে কেবা তারঅতিক্রম ৷৷ \* ৷ ৷ সকলে নিয-মমত, স্কার্ম্য সাধনেরত, পুনঃপুনঃ বারবার ৷৷ ২ ৷৷ कोवज्ञ ज्ञु ज्ञानन शांवज्ञ नात । সকলে আহার দেন য়েমন য়ালার ।। \*।। তাহেনাহি ভুমলেশ, কি মদেশ কি বিদেশ, দেখচচিচ্যে বিস্তার ।। ২ ।।

মধ্যমান্। অধর্মে হেরিযে সৃথ, তাহাতে মজোনামন

াাধুং া শ্রেষতব ধর্মপথে, য়থাকালেতে ভোজন ।। \*।।

মেধবি রোগিয়েমন, নহে আনন্দ ভাজন, আরোগ্যে
অপুউদেহ, সেতোস্থের কারণ !।>।। আরো কুলবধুগণা,
নানারত্নে বিভূষণা, বারাঙ্কনা দেখিযে কি, দেযকলে

বিষজ্জন ।। \* ।। অতথ্ব বলিমনং, কিণ্দিনের কারণ,
কেন্থত আকিঞ্ণ, অর্থাশে প্রপীড়ন ।। ২ ।।

কম্পনা করছ কার, একিভূল ভূলমনঃ ।। ধুন !। কক্ষেতে রাখিয়ে সূত, নগরে কেন ভূমন ।। \* ।। আপন দেছে-তেতব, পরমাত্মার সম্ভব, ধিক ধিক কিবা কব, ভোলো তাছাকিকারণ ।। ১ ।। সর্কর, ভারয়েমন, বছ্যে গ্রয়ণণ, নাজানে ঘাদকেমন, তুমিরে হলে তেমন ।। \* ।। অথবা দুখাসহিত, হেমন ঘৃত মিশ্রিত, তাহার গুণ বিহিত, গ্র্ম কুলে গোপন ।। বা, নাজানে গ্রয়ণণ।। ২ ।।

ছায়ানট্ অনুরাগ। জলদ তেতালা।। ভালবাসি বাসভাল, এইতো মনবাসনা।। ধুনা। কিজানি কিভাল ভেবে, ভাল পূরালে কামনা।। \*।। ভাল ভাল ভালহল, য়েভাল ভাবে নেমল, ইকি য়াহা বাসি-ভাল, তুমিতা ভালবাসনা। । ১।।

মধ্যান্।। সদায়াহ। ভাবি ভাল, তুমি তা ভালভাবনা।। ধুনা। কেমনি কপাল দোষ, নাছি ঘটিল ভাবনা।: \*!। কতসাধ করিপ্রাণ, হেরিতে বিধুব্যান, তুমিথাক অন্ন ভাবে, একি হেভাব বলন।।। ১।।

বরঞ্চ বিচ্ছেদভাল, প্রেমপরিচ্ছেদহতে ।। ধু॰ ।।
পিরিতে যক্তনা নানা, ঘটে সখি বিধিমতে ।। \* ।। তিল
ভাধ নাহেরিলে, ভাষি নয়ন শলিলে, পুনঃ সে মুখহেরিলে, জ্লিমান অনুগতে ।। ১ ।।

### बयबयडो श्राणिनऽा ।। बनराज्ञानाञालन गीयाञ्॥

विरयान अरळ् मम, प्रथ नव आर्याकन ॥ शुं ॥ छे ए सानि सक नव का न्य नाथन का तन ॥ ४॥ द्या मकू छ जिला हो ए ज्या का तन ॥ ४॥ द्या मकू छ जिला हो ए ज्या है विर्या में, वित्र स्थ न न कृ तन कृ त्या है निर्या में, वित्र स्थ न न कृ त्या है निर्या में, न वित्र स्थ न न न स्थ है न न न कि न स्थ है न न स्थ है न न स्थ है न स्थ

শাস্তিতোয়লযে, পরময়াজিকছযে, জুগিতে হইবেফল, য়থা অকাল মরণ ।৷ ৩ ৷৷

কোথাছিলে কোথাএলে, কেদেখালে এসংসার

11 খুং ৷৷ কোথাযে য়াইবেপুনঃ, ভাবনা কি চমৎকার

11 \* !! য়াঁহার প্রভাববলে, পেলে অবনিমোগুলে, ভাঁরে
নাহিভাব ছলে, একিভুল বুঝিবার ৷৷ ১ ৷ জননী জঠরে

য়বে, গতভাব অসম্ভবে, বলদেখি কেবাতবে, নিত্যদিযে

ছে আহার ৷৷ \* ৷৷ বলিসত্য হওরত, নীচগাসঙ্গমনত,
সাগর শলিলেনত, অপারয়ে পারাবার ৷৷ ২ ৷৷

তবসহদরশণ, য়িদ কথন কখন । শুণ । তাহাতে
নহিতদুঃখি, সেয়ে সুখের কারণ । া \* ৷৷ কেননা করিয়তন, রাবত অমূল্যখন, হয়িদ সদাঘটন, অন্যথা নয়
কদাচন ৷৷ ১ ৷৷ দেখনিদর্শনিতার, দেহে জীবন স্থার,
তথাপি নহেতোকার, গোচর গুছান্যন ৷৷ \* ৷৷ আখার
খেয সম্বন্ধ, নিত্যদরশনে সন্দ, কেমন করিয়েপাব, পারের
প্রাণ য়েজন ৷৷ ২ ৷৷

বিকটিরাগেণ । একতালাতালেনগাযতা ।।
মনেকরি নাহিছেরি,নাহেরে হেরিতে চাই ।। ধুন ।।
হেরিলেগে চাঁদমুখ, সহদুঃখ ভুলেজাই ॥ \* ।। কিজানিকি
হলোসই, কাটেবুক য়াদকই,সই তোমারি দোহাই ।। ১ ।।

শকবারননেকরি, ক্লমান পরিহরি, য়োগিনী ছইযেস্থে, ভারে নইযে পলাই।। ২।।

আপন ভাবিরে য়ারে, সে ভাবে আপন পরে । ধুন ।। য়েপ্রাণ সমান সেই, হস্তারক প্রাণপরে ।। \* ।। মুখে মধু মাথ। হাসি, অন্তরে গরল রাশি, ভাগিয়দি আঁথিনীরে, হাসি উপহাসকরে ।। > ।।

সইং, আপণ হইলেপর, পরেকি য়তনকরে।। ধু ।।
নয়ন বিবাদিহয়ে, প্রকাশিল ঘরেপরে।। \*।। য়তরাখি
সম্বিয়ে, তত্তঠে উথলিয়ে, ন্নানল তাপেঘণ, রূপে
বির্ষণ ভরে।। ১।।

সেখানার হটবে কেন, য়েনছে আপণ।। ধুং।। আননার য়েননমনঃ, তারকি,স্থিতেমন।। \*।। আপন আপন করে, সরমেতে থাকিমরে, শেষেঃ কিনা ঘরেপরে, সার হইল গঞ্জন।। ১।।

বিনোদ বিগিনেশ্যাম, রসরক্ষেকর রাস । খুণ ।। বোড়স বোড়সিনঙ্গে, করিহাস পরিহাস ।। ৠ ৷৷ নিবীড় নিকুঞ্জরাজে, স্থিপুঞ্জ ফুলমাজে, বিহর হইবে হরি,নীল কর্মল প্রকাশ ।৷ ১ ৷৷ মবজলধরকায, কিবাশোভাপায় ভাষ, তড়িতজড়িতহায়, হেন্মানিপীতবাশ ৷৷ ২ ৷৷ শ্রীরাধা সুবর্ণলতা, বামেছলে উপগতা, মরিকিছইবেশোভা, শুধাৎশুয়ামিনীপাশ।। ৩।।

কিকথাক হৈলে প্রান,কুচয়ুগ গিরিবরে ।। ধুন ।। ভেদিল অন্ত:র তব, থাকিষেমমঅন্তরে ।। \* ।। তান্য কারণগুন, অসতের এইগুন, নাভাবে আপনপর, সকলেরি মন্দ করে ।। ১।। তেমতি একুচবরে, য়তনেরাখিঅন্তরে, তবু ভেদকরিউঠে, সুহু কি ভেদিতে পরে ।। ২।।

অপরে অন্তরে রাখ, অন্তরে রাখি আপন।। ধুন।।
একেমন ভাবতব, বলদেখি প্রাণধন।। \*।। তুমি কিন্ত করমন, আমি কিন্তু অনুক্ষণ, চিন্তাকরি ওবদন, কি শ্যন কিন্তুপন।। ১।।

ङ्बिटल आभाव मन, वल क्षित्य क्मन ।। शु. ।। क्मरन छाविव मरन, जामात विध्वमन ।। ॥। हरव धहे मूर्विधान, शाविल छ। कत्रश्रान, मनः क्षित्व एम् मरम, वध अक्षी क्षीवन ।। > ।।

তবঃ ভাবের ভাবনা ভাবি, ভাবনাবিভবসার ।। ধু।।
ভাবেয়ে ভাবনাপ্রাণ, সেভাবনা নাহিমার ।। \*।। তুমি
হভাবে ভাবনা, ভাবি মভাব ভাবনা, ভাবিয়ে ভাবনা
তব, পরেছি ভাবনাহার ।। ১।।

कमल कानन शिर्य, किराल कमलमारक ।। क्ष्रा ।। क्ष्रा (प्रथम ।। क्ष्रा विश्व ।। क्ष्रा ।। नयन कमल ।। क्ष्रा कमल कमल , दहन क्ष्रा कमल कमल ।। क्ष्रा क्ष्रा कमल कमल ।। क्ष्रा क्ष्रा कमल कमल ।। क्ष्रा कमल कमल ।। क्ष्रा क्ष्रा कमल कमल । क्ष्रा कमल कमल ।। क्ष्रा कमल कमल ।। क्ष्रा कमल कमल । क्ष्रा कमल । क्ष्रा कमल कमल । क्ष्रा कमल । क्ष्रा कमल । क्ष्रा कमल कमल । क्ष्रा कमल । क्ष्र

তুমিয়ে এমনহবে, নাজানি স্থপনে প্রাণ ।! ধুণ।।
প্রথম পিরিতে কত, য়তনেরাখিতে মান ।। \* ।৷ ফুরাল
কেনসেভাব, নাহি হয় অনুভাব, ভাবিলে তোমারভাব,
শভাব ভাব বিধান ।৷ ১ ৷ ৷

অন্তরেরান্তরতারে, কেমনে করিবসই । । ধুন ।। তেরে সুখি নিরন্তর, সতন্তরে মরেরই ।। \* ।। মতান্তর ভাবান্তর ভাবেকরি কথান্তর, অন্তর হইলেপুনঃ, আমি য়েন আমিনই ।। ১ ।। '

এমন মিলনছতে, বিচ্ছেদ ভালতোপ্রাণ ।। ধুন ।।
দরশনে উভযেরি, উপজ্যে অভিনান ।। \*।। রুমণির
অভিনানে, কেনাসাথে আতিমানে, তুমিতোতানাহিমান, মানে একোন বিধান ।। > ।।

ভালবাস,নাহিবাস, দেখাদিতে ক্তিনাই ।। ধুন।। হেরেডব শুধ:হাসি, শবদেহে প্রাণপাই ।। \*।। হলেকণ সতম্ভর, আকুল হয অন্তর, ভারিয়েন দেহান্তর, তাই-তোহেরিতেচাই ।৷ ১ ৷৷

নাএনে আসিতে বল, এলে বিরস ব্যান ।। ধুং ।। একেমন ভালবাসা, বুঝিতে না পারিপ্রাণ ।। \* ।। হেরে তব চন্দ্রানন, যুড়ায তাপিত্যনঃ, তাইআসি বলেকিরে, এতো কর অপ্যান ।। ১ ।।

য়ারলাগি অনুরাগি, সে করিলে অয়তন ।। ধ্রুণ ।।
কেআছে এমন আর, করিবেরে সম্ভাষণ।। \* ।। তবতরে
যরেপরে, পরভেবেছে অপরে, য়থায তথাযগেলে, নাহি
করে আলাপন ।। ১।।

চকিতে দেখিতেতোরে, নৌভাগ্য সঞ্চরমানি !। ধুন ।। কারণ অমূল্যধন, নিয়ত দুজ্পাপ্যজানি ।। \* ।। য়েমন দেহে জীবন, অথিলে অমূল্যধন, গোচর নহে কথন, তেমনি তব মুখ খানি ।।>।। আর আননে ন্যন, মহারত্ন মহাধন, তাহাবিনা আদেশন, স্দা গোপণ বাখানি ।।২।।

তোমার ঈষদৃহাদি, সেকি সুখের কারণ । ধ্রু ।।
পীয়ূষাভিশিক্ত বিষ, দেহ সংহারে য়েমন ।। \* ।। বিধুমুখে মধুহাদি, হৃদযে গরলরাশি, তাহা য়েন শানিতাদি
নাশিতে প্রেমিকজন ।। ১ ৷৷ সুধামাখা কথাগুলি, য়েয়াম

তাহাতেভূলি, ছ্দৰ্য ভেদিতেশূলি, হ্য অমৃত মৃক্ষণ ॥২॥ কথায় জুড়াওপ্ৰাণ, ইক্লিতে ইন্দ্ৰদান, ব্যবহারে বধ-প্ৰাণ, জ্ঞানহত অনুক্ষণ ॥ ৩॥

কিকল আপনি কয়ে, আপনার মনদুঃখা গুড়া রাহার কারণে দৃঃখ, দে কহিলে তবেস্খ! \*!! য়ুবতা ক্চয়েমন, সকরে হলে দলন, নহে সুখের কারণ, সেয়ে অহিপুচ্ছমুখ ।৷ ১ ৷৷

তোমার বিরহে মরি,এখন মন বাসনা ।। খুন ।। কিন্তু ভাবি কারেরাখি, ভাবিতে তবভাবনা ।। \* ।। পিরিতে লাঞ্চনায়ত, সহিবেরে কে নিয়ত, মমমনে অবিরত,উদি-ত এইয়ন্ত্রনা ।। ১ ।। রমণি করিলেমান, তুমি না সাধিবে প্রাণ, সেমাধিবে এবিধান, কেমনে রবে বলনা ।। ২ ।। রমণি বলিলেহিত, তুমিকবে অনোচিত, পিরিতে এবিপা রীত, প্রাপণ অসম্ভাবনা ।। ৩ ।।

পাইব তোমারমনঃ, সেঅতি ভাগ্যেরফল 11 ব্রুমান নাপাই মনের কথা, রেজন্য প্রাণ বিকল 11 # 11 য়েমন দারিত্রখন, অতিদ্যতি ঘটন, তবু আশা নিবারণ, নছে নিযত প্রবল 1! ১ 11 কিকব মর্মের কথা, উচ্চতরু ফল য়থা, বামনের আশাতথা, ভাবিও মুখ বিমল 11 ২ 11 বাঞ্ছা সৃদা আসিয়াই, কিন্তু আসিতে নাপাই, ঘটে কৃষ্টনতাই, জ্লেমনে দুঃখানল !! ৩ 11

মধ্যমান্।। তোরে কোথা রাখিপ্রাশ ।। ব্রুণ ।। রেছিল হৃদ্য বিরহ্ দহনে, দেখনা দেখিযেহল, অঙ্গার সমান ।। \*।। মনোহর মনোরথ তবয়োগ্যস্থান । হরিযে নযেছ তাহা করিকি বিধান ।। ১।। প্রাণ পুরি স্থপেহ দুঃখ বাযুসন্থ নিয়ত কম্পিত সেতে। এই তাররন্ধ।। কিজানি সহসায়দি হ্য তাহা ভঙ্গ, এমতে কেমনে তায়, হবে অধিষ্ঠান ।। ২।।

থকতালা।। সেমতি সৌভাগ্য-স্থি, আমি পাবতার
মনঃ।। ধুং ।। নাপাই মনের কথা, করি অনাধ্য নাধন
।। \*।। নিয়ত য়তনেয়ত, হইতার অনুগত, সেহ্য তত
বিরত, সাধি সদা আকিঞ্চন ।। ১।। সম্পুতি বিহিত্যই,
সদাসতন্তরেরই, কিন্তুভ্যে ভিতাহই, দুষিবেবিশ্বভূবন
।। ২।। কহি:ব আনারিদোষ, সেসঠে রবেসন্তোষ, তারে
নহে কার্রোষ, কিণ্ডণ জানেকেন্ন।। ১।।

ि किरमाय रमरथह वन, किया कि भूरनह्थान ।। ५ ।। ना रमिश ना भूनि हेकि, किन बृठं अखिमान ।। ६ ।। नरह थ्राज्ञ नयन, উर्प्तामरक्ट कथन, माहन इय खरन, रमशहेल रममान ।। ১ ।। भूवन शाहन नय, निर्फारित म्खह्य, उर्दिकन तमस्य, मनखारमा उम्विधान ।। २ ॥ निर्ह्हल हनकत्र, विनारमारय रमायधत्र, हेन्दरम कल्ला ह्न, ताथि उ ।थ्रा

প্রকো প্রদেশ প্রাণধন, রাখি হৃদ্য উপরে । ধুন। হইল সৃদরশন, বহুদিন দিনান্তরে !! \* ।। য়াবতছিলে অন্তরে, থাকি অন্তর অন্তরে, তুমিতব অগোচরে, ভুমিতে মমঅন্তরে।। ১।। ইবেগোচর ন্যন, হুইলেরে প্রাণধন, আছেহাদি সিম্হাসন, অপূর্ক তোমারতরে।। ২।। তানহেবসি প্রিয়জন, করস্থ উদ্দীপন, মৃত্রুক কুচক্রিজন, মনের বেদন। ভরে।। ৩!।

ষায়রাবে কুলতায়, ভয়কি আছে আমার ।। ধুণ ।। রখ ল পেয়েছি প্রাণ, দরশন হৈ তোমার ।। ঋ।। সবেবলে কলঙ্কিনী, কুলটাদের হরিণী, আমি কিন্তু মনেজানি, কল ফ সে অলঙ্কার ।। অথবা, কলঙ্ক গলারহার ।। ১।। লোকে ক্য গেলকুল, মুলেতে হলো নির্মূল, আমিভাবি এলো কুল,ছিল অকুল পাথার ।। ২ ।।

जनमृहत्थं मित्र श्रांग, नृत्य क्षिम नानू वित्व ।। श्रु॰ ।। तकमत्न कानां न जत्त, त्क्षत्म प्राप्त ना क्षानित्य ।। # ।। म॰ मिल
विज्ञहनात्म, छेिक ना क्षिल क्षात्म, मक्षाहेत्क (श्रमजात्म,
मत्क प्रमिना मिक्स्ति ।। ।। शिक्षित्व क्षिकि के क्षित्र के क्षित्र के विविद्य के क्षित्र के क्षत्र के क्षित्र के क्षित्र के क्षित्र के क्षित्र के क्षित्र के क्षत्र के क्षत्

নারির বদন চাঁদে, লোকেবলে একে আর !! ধুন। না জানে ব্ধিতে নরে, বিধির ফাঁদবিস্তার i। \*।। কেশজাল জালপ্রায়, নযনকণা তাহায়, কাকপক্ষ শোভাপায়, আ-কর্ষণে গুণতার ৷৷ ১ !৷ বা, গুণ সমান তাহার ৷৷ ১ !৷ ভা-বেতে ভাববুঝিবে, য়াদনে কণাহেরিবে, লোভেতে জালে পড়িবে, নিযাদ অনম্ব য়ার ৷৷ ২ ৷৷ সেজালে পড়িলে তবে, কদাচ নামুক্তহ্বে, মোহিত পিঞ্জাররবে, য়াবত প্রাণ তোমার ৷৷ ৩ ৷৷ '

আমারে হেরিতে তব, কেন বিরস ব্যান ।। ধ॰ ।। বল হ কারণ তার, বুঝিব কিবা সন্ধান ।। ১।। অনুমানে জ্ঞান করি, ন্যেছ যেমনঃহরি, পাছে দিতে হ্যফিরি, তাই হেন ভাবপ্রাণ ।। ১।। অর্থাৎ চোরেরমনঃ, স্থিরনহে এক কণ, হেরিলে সেনাধুজন, অ্মান য়েহ্য দ্লান ।। ২ ।। হকু মমপ্রিযজন, মনকিবা অতিধন, তুমিচাহিলে জীবন, অ-নাযাসে করিদান ।। ৩।।

मात्मार्क मिल्रिक्य, तिहाद कि ना तिहाद ।। धूर्।।
माधिरक (म्राया कथा, किहाद किनाकिहरत ।। \* ए ना तित्र
इहेरलमान, वाक्न नातत्रश्चान, किछ (म छन विधान, वा,
किछ मंग श्चियक्रन, महिर्द कि ना महिर्द ।। ऽ।। हेइ।
छावि क्रेंख्रहरे, मानना वाफ़ाइमहें, किजानि मरनत्रमक,
इहेरद कि नाइहेरद ।। वा, विहरद किना विहर्द ।। र ।।

অধনসরস তব, ছেরেছি বিধ্বদন।। ধুনা: তবেকি এমন ছলো, বিরস তা কিকারণ।। \*।। হাসিতে হাসিতে প্রাণ,পলকে পলকে মান, কহিতে কহিতে ধ্যান, একে আর প্রতিক্ষণ।। ১।। দেখিতে দেখিতে হ্য,শুনিতে সুনী ত নয,চাহিতে চাহিতে ভয়, জুড়াই হলে মরণ।। ২।।

কুলের কলঞ্কভষ, তাহার নাহিক হয় ।। ধু, !। প্রেম রুগে য়ারমন, নিয়ত অবশর্য ।। \* !। চন্দন সহিত বাস, নিয়ত য়ারপ্রধাশ, ভুল্ল সঙ্গততার, য়াতনাকারণ নয় ।। ১৷ রক্তনেরতী সুগন্ধ,জন্মায য়ার্আনন্দ,কণ্টক দুঃপ্রের হেতু, সেকিগে। কথন কয় ।। ২ ।।

কোনলংয্যা কিৰপে, ভেদিলে কমলে । ধু ।।
সেদ্বালা বিষমদ্বালা, নাজায় জলেতে দ্বলে ।। \*।
পিনোনত প্যোধর, য়েনযুগা শ্লুবর, ভেদিল মনঅন্তর,
নানাছলে কুতুহলে ।। ১ ।। অসেয়ভর ।।

स्वर्धा कहिला थान, कष्ट्रण अनाथन्त्र ॥ धु.॥
समज्ञनस्यत्रथन, नमस्य आंभारत्रम्द्र ॥ ॥ ग्रःष्ट्र कृष्यताधरत, त्राथि अखत अखरत, छन् । । कृत्रि । ।
सहनात्रह ॥ ।।

হ যতে আমার মন, তব এচরণ চোর !! ধ্রা লিছ্বি

যে সাযাপ্রাচীরে দিয়ে ভক্তিড়োর ।। \*। ভাঙ্গিয়ে জজানদার, মহামোহ অন্ধকার, তরেছে চৈত্তনাভাবে
করিযে কঠোর ।। ১।। অতএব খারে চোরে, বাঁধিযে সৌভাগ্যডোরে, রেখেমুক্তি কারাগারে, নিশিকর ভোর
।। ২।। প্রভাতে নিবাতে ক্লুধা, দিয়ে মা কৈবলা শুধা,
তন্ময করাতে কারো, চোরের বিখোর ।। ৩।।

পিরিতে বিচ্ছেদ য়েন, ঘটে 'কথন কথন।। ধ্রু ।। ন। ছইলে সমভাবে, উভযে কালয়াপন।। \*।। য়েজানে পি-রিভিরিতি, সেজানেকি রীতিনীতি, মিলনের অচেতন, বিরছে করেচেতন।। ১।। অধিকন্ত সুখস্থি, বিরছে দুঃখ নির্থি, দুঃখ ভযে উভ্যেতে, উভযে সদা য়তন।। ২ ।।

য়েগুণে ভুলালেমন, সেগুণ কি গুণমণি ।। ধুন ।। স্বদ্য-পি শিক্ষাতে পার, আমিও হ্বতেমনি ।। \* ।। নির্দ্ধ দুঃশীলভ্য, সকলি করিবক্ষয়, অন্যে অচৈতন্যম্য, ঘটাব ভাবএমনি ৷৷ ১ ৷৷ অন্তরেতে নিরন্তর, দহিবেপ্রাণ অন্তর হেরিতে আঁশিকাতর, হবেদিবস রজনী ৷৷ ২ ৷৷ \*

ন্যন সন্ধান তোর, চোর্ছ্যে সাধুধরে ৷৷ ধু ৷৷ প্রকাশ নাছ্যে বলো, সংগোপনে কিনা করে ৷৷ \* ৷৷ সদ।
সচঞ্চলম্য, খঞ্জন গঞ্জমে র্য, সরল ছইলেচোর, তারি
ঘরে চুরিকরে ৷৷ ১ ৷৷

প্রতয়ে য়ন্ত্রনা দেছ, পাশরি হেরে বদন ॥ ধুং । প্রযোজন নাথাকিলে, হতে কিহে প্রিযজন ।। \*!। য়থাদেখ ছতাশন, কর্যে গৃহদাহন, তব্তারে অনুক্ষণ, আনিক্রিয়ে য়তন।। ১।। তেমতি তবলাঞ্ন, ঘরেপরেরি গঞ্জন, ভাবিন্যন অঞ্জন, কিজানি হ্যকেমন।। ২।।

আসিতে নিষেধ কর, ব্যলেকিরে আসিবনা ।। ধুন।।
তুনিবাস নাহিবাস, আমিতে। বাসি বাসনা ।। \*।। রথাপ্রিয়ে হতাশন, দাহন করেভবন, কিন্তু পরে গৃহিজন,
করেসে বহ্লিকামনা ।। ১:।।

चाड़ा। किरव जनकल कल, तमनीत कर्लब्य ।। ५९॥ चथरत धरत मधूत, अपय शतकमय ।! \*।। धकात्र माधा तन, करत ज्ञथत ह्यन, करत अपरयघाउन, कृष्यू श निरत मय।। ३॥ ডাকিলে আদর বাড়ে, নাডাকিলে .অভিনান ।। ধুণ ।।
কিৰপে এদুঃখ সখি,ছবেবল সমাধান ।। \* ।। জানতোসে
নিদর্শন, দাযেকুয়াণ্ড য়েমন, উদ্ধেঅধে বিদারণ, তেমতি আমারপ্রাণ ।। ১ ।। আরোশত্থের করাত,বিদার্থে
গতাযাত, সমান উত্তাপবাত, একি অবিধি বিধান ।। ২ ।।

শিখরে সম্ভবেলতা, সবেক্য মিথ্যান্য ।। ধুং ।। রমন নীর রূপে কিবা, তারবিপারীত হয় ।। \*।। অঙ্কমর্ণলতা প্রায়, সুবর্ণ বিবর্ণতায়, কুচ্মুগ গিরিহায়, ব্যক্তর্য কি নার্য ।। ১ !।

বিরহ রাতনা স্থি, আগে কে জানে এমন । ধুন ।।
কোনমতে নাহিস্থ, কিশ্যন কিম্বপন ।। \* ৷৷ মহীতে
নোহিতেথাকি,তবুপ্রাণ ব্যলেডাকি, নাথাকি কভূএকাকি,
হুদেদেখি সেবদন ৷৷ ১ ৷৷ রেদিকে র্থনচাই, সেরপ দেখিতেপাই, ধরিতে নিকটেনাই, অমণি হই অচেতন
৷৷ ২ ৷৷ সেই শশ্রক্তমান, সেইদাপ সমস্তান সেইরি
বিদ্যমান, অথচ তমভূবন ৷৷ ৩ ৷৷

তোমার বদনশন্ধি, ক্ষণঅবলোকন । ধু,।। নাকরি অন্মনিথাকি, সেতো সুথের কারণ।। \* ।। কুচিতেহ্য দরশনন, চাকতে নাত্র মিলন, তাহে সঙ্কোচিত্যনঃ, হেরিত্ব অনুক্ষণ।। ১।। নাহেরিলে সুখোদ্য, আশার আশায়ে

রয়, ছেরিতে বিচ্ছেদময়, তাহতে ভালমরণ।। ২ ।। আ-শামাত্র প্রাণধর্ন, আশা নহে নিবারণ, বিন্দুজীবনে কর্থ-দ, তৃষা কিহ্য বারণ।। ৩ ।।

মনয়ারে ভালবাদে, কিকরে ভাছারদোষে ।। ধুন ।। সেকরিলে অভিরোম, সন্তোম বাসি সেরোয়ে।। ৠ ।। নয ন অন্তরেরম, অন্তরে উদযহ্য, উদযে বিচ্ছেদভ্য, বি-চ্ছেদেমরি আক্রোশে ।। > ।। মনেছ্য কেনকরি, এদুংখে কিরূপেতরি, নাঘটে এমনয়িদ, থাকি আগে দোষে তোষে ।! ২ ।।

পूरुष मक्कान एड्जू, उर किंगि के किन ॥ धु. ॥ मूमु कि बर्षे एडा उन्हां न्या के स्थन ॥ अ। मरक्कर भ मध्य जात, विखाद जात अजान; निमर्गन कृत्रवधु, आतकू निहा स्म्रमन ॥ >॥ कृत्रवधुकू द्वत्रयं, मन्ड शाह्य त्या, प्रशिष्ट मानम्य, कृति। न्या एडा एका । २ ॥ क्राट्य वह हे हे हे, मानम्य, जाहे भिक्के, कृक्षा य ज्यां य प्रथा, सन्त्र छहन कीवन ॥ ७ ॥

## কিকটি গারারাগেণ।। ধিষ্যতেভালা ভালেনগীয়তে।।

ধিরে ধিরে য়ায কেগো, হাদিতে হাদিতে । ধুং।।
নষন মগন প্রায়, ভাষিতে ভাষিতে ।। \*।। ওরপাগার

প্রায়, হাসিতরঙ্গ ভাহায়, মম আঁথি ভূলেয়ায়, চাহি-তে চাহিতে ৷৷ ১ ৷৷ সম্পৃতি তর্ম ঘোরে, বাঁথিলে প্রবােধডোরে, প্রাণাস্ত হইবেকুলে, আসিতে আসিতে ৷৷ ২ ৷৷ তবেকুল লাভহ্য, অনুকূল বাযুব্য, তর্ম্ববাকুলম্য, না
শিতে নাশিতে ৷৷ ৩ ৷৷

প্রাণত্মি ভাবিলেনা, আমার ভাবনা 11 ধুন 11 ঐতাপেমরিমানি, জেনেতা জাননা 11 \* 1! ভালবাস
কিনাবাস,করিনে তাহার মাশ, দুঃখেকর উপহাস,এমতি
য়ত্তনা।। ১ ৷৷ লোকেক্য আমিসুথী, কিন্তু মনসমদুঃখি,
নাদেখি শুধান শুমুখি, বুঝে তাবুঝনা 11 ২ ৷৷ সবেবলে
ভালবাস, সুধাইলে সুধুইহাস, বাসকিমা নাহিবাস,
ভেঙ্গে চাবলনা।। ৩ ৷৷

মনেরমানসপূর্ণ, হ্যকিনাহ্য ।। খুন ।। এতাপে কাবন সথি, র্যকি নার্য ।! \* ।। মনেমান জন্ময়ত, প্র-কাশনা করিতত, এইভ্য অবিরত, স্যক্নিশ্য।। ১।। কভুমান করিতা:র, বা, কভুমানেমজিতারে, ভেবেমরি শে আমারে, সাধিতে উচিতকথা, ক্যকিনাক্ষ ।। ২।।

টো।ড়রাগিণ্যা। মধ্যমান্তালেন্গীয়তা ।। মারবুঝে দেখননঃ, সকলিপ্রবঞ্চ ।। ধুং ।। য়েনাবুকে ধিক্থিক থিক্তঞ্চঞ্চ। \* ।। কারণের কার্য্যসব, অনিত্য বিশ্ববৈত্তব, মহাশূন্য আবিভাবে, শূন্য আদিপঞ্ ।। ১।। কিতি অপতেজবায়, ব্যোমাদি ভূতের আযু, গ্নিনিত্য নিরঞ্জন, তাঁরিভাবেবঞ্।। \* ।। এয়ুক্তি বিশ্বাসকর, মম উপদেশধর, অয়ক্ত ব্যহ্মার, শ্রুত্যাদিবরঞ্চ ।। ২ ।।

অরে অবোধনন, ভুনকেন অকারণ । ধুন ।। চিন্তঅচিন্ত চিন্নয়, অদিতীয় নিরঞ্জন ।। \* ।। ফুরালো অজপাহণন, রিনিসোহণকারো অংশ, য়দিহবেপরমহণস, তাঁরেকর নিরপন ।। ১ ।। মাযাপাশ পরিহরি,বাছেন্ত্রীয় রোধ
করি, একনাদ ব্যোমপরি, হতেছে বিনাকারণ ।। \* ।।
সেশক অপূর্বেধৃনি, য়াহারে প্রণবগণি, চিন্তিলে তুমিঅমনি, হবেওঁ কারে মীলন ।। ২ ।।

কেমনে ডাকিব তোরে, মা, সদা শিব সিমস্তিনী । ধুণ ।। ওঁকারা কারিনী ।। \*।। সে শক্তি প্রশক্তিনাশ, কঠে তবমীযাকাশ, অনর্থ নাদার্থ আশ্ব, ত্রিগুণা রজ্জুক্রিনি ।। ১।৷ নিজ্ঞণে কর্ত্রান, দেহিনেজানক্পান, চ্ছেদ্নার্থ সুনিধান, বন্ধন তবেতারিনী ।। ২ ।। নতুরা নাহি নিজ্ঞার, বারবার এইবার, জানিব কৃততোমার, দ্যাজগত জননী ।। ২ ।।

কেন ন তরিব ভবে, মা, মহেশ মন মোহিনী ।। ধুং।।

ভিতাপনাশিনী। । । । । । । ভিত্তিশ্র দ্বালেশ, আছেন। ত্রেষা ধ্রেষ, সদাসংসারে নিবেশ, কর্যেমাযামন্ত্রিনী। । ।। তবচিন্তা প্রতিমতি, উপাযদেখি সংগ্রতি, কিন্তু বিষম মমপ্রতি, শুন শিব সিমন্ত্রিনী।। ২।। ত্রিদেবের দ্বোগা গম্যা-কিসেহবে খ্যানরম্যা-শিরো নান্তিশিরঃপীড়া ঘটে কিবুক্ত ক্পিনী।। ৩।।

প্রপঞ্চ জগদাধারে, মা, ভূতপঞ্চ স্বর্জাপ্রনাণিনী ৷৷ ধ্বং ৷৷
বুক্ষাপ্রব্যালিনী ৷৷ \* ৷৷ তুমিশৃক্ষু তুমিসূল, জংহি ত্রিলোকের মূল, দুর্কোধ বৃদ্ধিরভূল, পরমানু প্রস্বিদী ৷! ১ ৷৷
তুমিগো যোডশীকাষা, অথচত্রিলোকজাষা, কেজানে
মাষার মাষা,ত্রিদেব ধ্যান ধ্যাযিনী ৷৷ ২ ৷৷ তুমিবিশ্ব প্রকাশিনী, অথচ বিশ্ব রূপিনী, জীবরূপা নঞ্চারিনী, নজীব
ধ্যান ধারিনী ৷৷ ৩ ৷৷

আঁড়াতেতালা ! হেরিভেওৰপদাথে,কতনাসাধিয়তন । ধুণ । যেভাব ডিজিমাছদে, গ্রহণকরেদর্পণ ।। \*।। কিবাঅপরান, রূপ রসক্প, আমারি হেরিযেতাপ, শ্যন স্থান ।। ১ ।। সদাসাধ্যনে, সাধিব কেননে, বিধি অনু-কূল বিনে, গুণনিধি প্রিযজন। ২ ।।

প্রিক সম্পদেকর, এবিপদেপার ।। ধুণ্ ।। তুমিছরি ভবতরি বারেকর্ণধার ।। \*।। তাপপাপ পরিহরি, অ। নকরি রাথছরি, তোমাবিনে কে্করিবে, দ্স্তারে নিস্তার !! > ।।
সঙ্কটে মধুসূদন, নামক্যরেছ্ধারণ, তাইবলি রাখরাখ,
দ্র্তিম এবার ।। \* ।। নতুবা কলঞ্চরবে, নিদ্য সকলেকবে,
বিপদ ভঞ্জননাম, নানইবেআর ।। ২ ।।

করভবপারাপার ।। ধুণ ।। তোমাবিনে কালভ্যে কেকরেনিস্তার ।। \* ।। জঠর য়ন্ত্রনাস্যে, অসারসংসারে রয়ে, ভোগিতেছি নাযামোহ, কাম্ভ্রুকার ।। ১ ।। ভজনপূজন ক্ষীণ, মনন চিন্তুনহীন, ভরসা চরণমাত্র, ভবানী তোমার ।। \* ।। য়োগাতীত য়ে।গিগণ, শুধাণ্ শু পাশশুচরণ, অন্তকালে অন্ত্রেরেখা,কামনাআমার ।। ২ ।।

#### प्रभकात त्राभिनी ।। मध्यान्।।

কেনবেনহেরিঅরেপ্রাণ, বিরস্বদন।। ধুং ।। হ্যেছেকি
অপরাধ, বলপ্রাণধন। । শুনিপ্রাণ আমিদেছ, তোমাবিনে নাছিকেছ, শ্যনে স্থানে হেরি,তবচন্দ্রানন।।।।
নাছিজানি তোমাবিনে, ব্যধোনা নিজ্অধিনে, তবঅয়তনহতে, কুশল মরণ।। ২।।

নবীন নীরদ শ্যামে, নিযত ত্রিতেমন: ।। শ্রং ।।
য়াযয়াবে কুলনাহি, য়াবশমন ভবন ।। \* ।। আহাঃ কিবংগরছটা, য়েন সজলদ ঘটা, পীতবাস চপলায, শোভিত বিশ্বভূবন ।! ১ ।।

स्त्रिकारव जुनाल जारव, रम जारव काथ। नुकाल ।। पुर्रा। कथन क्यम रहित, रममन किन होताला। ॥।। श्रदमव श्यमधान, जथन नाहिन क्रान, मारथतं स्जनध-न, हात्राहेव कानकारन ।। >।। समस्यमकूनवरन, विरक्ष म जुन्नमारन, मर्मान मारथत हाम, सिन्न वियाम कारन।। >।। आत कज वारतवारत, श्यमधान श्रिवारत, खवना हनिरवहरन, जान जावना जावारन।। ०।।

सारमिक जन्मान, कंतिरिक প্রাণপ্রিয়ে ।। पुर् ।। ज्ञून উদযভে্রি, নয়নেতে কিলাগিয়ে ।। \*।। এভাবিক্
ভাবতব, কিঞ্চিত নহে সম্ভব, হেরিভাব অসম্ভব, নাপাই
ভাবেভাবিয়ে ।। ১।।

## **(मभमलात तागा। जापात्राठेका॥**

किनूथ वित्रया कारल ॥ धुः ॥ भगरं गद्राक्षचन चाद्रयन कारल ॥ \* ॥ विভावन উफीलन উफीलगर्ड जू, गित्रिलाद मिथिनाम, इंद्युरम्यमाएल ॥ ॥ अद्रमवद्यश ভাল সংযোগি क्रनांद्र, विर्यागि इ्हित्य ভार्य, कालाञ्च क्रवारल ॥ २ ॥

সম্বনে গরজেখন, ঘণ বরিষণে । ৷ ধুন ৷৷ ঘোরতর প্রোধর, শোভিত তড়িতসনে ৷৷ ৠ ৷৷ ভেক্সক্সকর্ব, নত্যতিশিথিমীসব,পায্যামনমতখন,প্রাণপ্রিথ প্রিয়জনে ।। ১।। বিনোহিত চাতকিনী, পায্যারস কাদ য়িনী, আ-মি অভাগি দুঃখিনী, হারা অমূল্যরতনে ।। #।। ঝরঝর বাযুবহে, কিরপে বিরহিরহে, কান্তকি কৃতান্ত শান্ত, আ-জুকরুক এজনে ।। ২।।

সইং, 11 কবে আসিবে, প্রাণ প্রিয়ন্তন ।। ধুন ।। উদিত বরষা ঋতু, দুঃখিত জীবন ।। \*।। ঘনঘনরপোঘন, করে বরিষণঘন, মালতী মারুত্ মন্দ য়েনছতাশন ।। ১। চাতকেরপিউরবে, জীবন কেমনেরবে, তাতে দিওণ জ্বলালে, শিখির নর্তন।। ২।।

চল চল চল দখি, হেরিগে চিকন কালা !! এং!
বনফুলে সাজাইব, সাজেতারে বনমালা !! \*!! মুরালি মুরলিয়ত্ত্বে, ডাকিছে মোহন মত্ত্রে, কিকরে কুলের
তত্ত্বে, অন্তরে বাড়িল জালা !! ১!৷ কুলভ্য কেচাহিবে,
কাল ভ্য নারহিবে, আগুপ্রাণ যুড়াইবে, নাল নব বুলবালা !! ২ !৷

#### দেশী রাগিনী।। আড়াতেতালা।।

প্রেমসাথে সুসাথে তে, বিগাধে সাধিলে 11 ধুন 11 আপন মনঃ য়েমন, তেমনি মানিলে 11 \* 11 প্রেমঅনুরা-গে, বিরাগি কি রাগে, অনুরাগি রাগভাগে, সুরাগে ভুলিলে 11 > 11 আমিলানি মাণে, রাখিবে সমানে, না-

শিবে মানগুমানে, কিমানে রাখিলে 1 ২ 11 সহপ্রেম
ক্রমি, তাই ভুমে ভুমি, মিছাখ্রমে করিখ্রমি, ক্রমেসে
নাশিলে 11 ২ 11 পিরীতি কিরীতি, য়েজানে সেরীতি,
বাসে য়তনেতে অতি, বাসেনা মরিলে 11 ৪ 11

কলিবলৈ কালে য়দি, হ্যতোমরণ 11 ধুন 11 পাই-বে অমূল্যধান, এড়াবে শম্ন 11 \* 11 এমনি করুণামার, য়েভাবে ভাবনাতার, কিসের ভাবনা আর, ভাবা অকা রণ 11 > 11

কিছবে কাতরহলে, সে কভূ কাতরনহে ।। ধুন ।।

য়দ্যপি কাতর হতো, তবে কি বিরহেদহে ।। \*।। সদা
দুংখ তাপেমরি, তাতে কেদ নাহিকরি, সেয়েন সস্তাপ
বিনে, শতত কৌতুকে রহে ।। ১।। প্রমদায প্রন্দায়,
দ্যুখের্দি প্রাণজায়, হকুসে থাকুক সুখে, অধিনীরে
সব সহে ।। ২।।

(मनोटी फि जाशिनो।। जुनंदर जाना।।

किट्डितिषम् मद्रावद्र, भूनः किट्डितियम् ॥ धु. ॥
भागिक ভृठत्व थिना, नत्थ मिनाइत्य अहे ॥ \* ॥ मित्रि
किवावग्र वर्ग, मूवर्ग शिनि मूवर्ग, मूवर्गवर्ग वर्गिट्ड, म्वर्ग উপমাকই ॥ ১॥ इत्य अर्ग्यक्षत्राथि, उन्तन ठिक्टिंड माथि, माद्य अर्थ कित्रिनाथ, स्थूट्ड वियाद्यत्रहे ॥ २ ॥ ন্যন বিছীনজনে, প্রদানে দিব্যন্যনে, য়াতনা ছীনে য়তনে, সুসাথে বঞ্চিতে কই ৷৷ ৩ ৷৷ ওমুখ ক্মল শোডে, অলিমন্ত মধুলোভে, বিনেতা মনের কোভে, আমিয়েন আমিনই ৷৷ ৪ ৷৷

বিরহে বিরহে সুখ, বালে কত জানাইব ৷৷ ধুং ৷!
ন্যনেহেরিতেন্ রারে, হৃদ্যে তারে পাইব ৷৷ \* ৷৷ পিরীতি সুখেরহলে,প্রতিক্ষণে প্রাণব্যলে,কেন ভাষি জাখি
জলে, বাসনা প্রাণতাজিব ৷৷ ১ ৷৷ শুনকই প্রাণসই,
সুথিবই দুঃখিনই, প্রেমের অধিক সুখ, বিচ্ছেদেতে
নিলাইব ৷৷ ২ ৷৷

উত্রা। কিব্যলে কিব্যলে বল, ভূলেরবে সেবদন

া খুণ ৷৷ তিলেকে তিলেকেয়ারে, নাছেরে ঝােরে নযন

া \* ৷৷ বিরহেবিরহ্ব্যলে, রাগে অনুরাগী হলে, তবেকেন

তারলাগি, করিতে অতিচিন্তন ৷৷ ১ ৷! নাছেরে প্রলয

য়ারে, তারেকে ত্যজিতেপারে, রেখে অন্তরের অন্তরে,

কিরপেরবে জীবন ৷৷ ২ ৷৷

## थनामा तालिनो ।। आषा ।।

ভালবাসনা হিরাস, মরিশাত্র এইকেদে 11 ধুং 11 আমিভাবি প্রেমরাথি,তুনিছে ভাববিচ্ছেদে 11 \* 11 ভাল বালে ভালবেসে,এইহল অবশেষে,সুরতনে অয়তন,কেন

প্রাণধন তবমান, সুধা শশু গ্রহণ সম। ধু শা ভাবি-লৈ উভয ভাব সমভাব, নহে ভাবতরতম ।। \* ৷৷ গুহুণে শশি য়েমন, মানেও মুখ তেমন, উভযে মলিনভাবে, চকোরিণী অধি, নীর কর্যে বিষম ।৷ ১ ৷৷ গুহুণাস্তেচকোরণী, মানাস্তে তবঅধিনী, বদনপীয়ূষ পানে, কিসুখি কৌতুকী, কহিবারে নিরুপম ৷৷ ২ ৷৷

কোনমভাত্তমন, সুখে শ্যামারে ভাবনা ॥ খুন মা কালগতে কালেলবে, দিয়ে কালের য়ন্তনা ॥ \* ॥ য়খন হইবেলরা, আল্যোকাল এইশৃন্দ, কলতাদিরব্তেরা, তবে কিহবে বলনা ॥ ১॥ রসনার বাসনার, অনুসার উপহার, দেওকিন্ত চমংকার, তার আঘাদ লহনা ॥ ২॥ কালে-হেরে অবাক্হবে, অন্তরে আক্ষেপকবে, য়েমুন চুরির পরে সাবধান বিবৈচনা ॥ ৩॥

নট্ অনুরাগ।। আড়াতেতালা।।

क्रिएउউ ि छ हिन, श्रायमिन तम । श्राप्त । व्यवता क्रमात्व श्राप्त श्राप्त श्राप्त क्रमात्व श्राप्त श्र

विभागत कर्मा । , त्रिक्त मह्नर्गा भाग । ॥ त्रात्तृ वन भिज्ञन, कर्म् व्याप्यान्यन, त्राचित्व वित्र प्रवत्न, त्राच्यामा त्रिक्त्रम्यान । २ ॥

मिनारस शिरत श्रीकास, निमारस श्री । धु।। त्रमित्रा । त्रमित्र । १३।। त्रमित्र । १३।।

প্রিয়নখি প্রাণনাথে, এইকথাব্যলোগ্যলো !। এন ।। তবজাশাবলয়নে, জাশ প্রিত ম্যলোম্যলো ।। # ।। বকোন বিধান প্রান,চাতকের ঘণধ্যাণ,চাতকেনা চাম্বণ,
ভালভাল হলোহলো ।। ১।। য়েজন স্থাহারগতি, নেকি
দৃঃখ দেয় থতি, পতিকি সতীরেবলে, দৃঃখতাপে ভুলোভুলো ।। ২।।

## পট্ मु अती ताशिनी ॥ जाषा॥

मूर्ल मूर्लिक केंद्रनाम । शुः ।। खानिनाम महामरदः काटि कानकाम ॥ सा सा व्या व्यापृर्गानाम, निक्ष वाद्रमन-काम, कद्र देवनाथाम, देवकुष्ठे निवास ॥ २ ॥ भूमि-दिस्तिक्य, पूर्णानाटम मूः थेव्य, निक्ष इयर्जाक्य, वह-छद्रनाय ॥ ॥ ॥ द्रिमाम महिमाय, वय्रीनवानभाय, व्याप्य विरम्दिक्यं । द्रिमा अहिमाय, वय्रीनवानभाय, व्याप्य विरम्दिक्यं । २ ॥

#### পরজ্রাগিনী ৷৷ জলদতেতালা ৷৷

कहित मति कथा, तिवंदल द्यान ने। भारे ।। अ॰ ॥
प्रिति मिलाय द्यान, भिलान नमयना है।। \*।। वह नाथन
नाधित्त, किक्षिण नमयमित्त, किन्छ जव व्यानावात्म,
व्यामानथ नमां हो है।। >।। प्रित्य जवव्याना, जथानि ना
न्तव्यामा, ভावान्छ त मजान्छ त, कथान्छ त मति प्राप्त ।। \*।।
जित्तक जाकित्तमनः, मर्ह्मू थ हजामन, कि ভाবে ভाव
विचाद, मित्निमि ভाविजा है।। >।।

सयन जिल्ल होरहा (इति जिल्ला वास्ता । शुर्धाः हार्य वाजनाकरत्र, हार्य वार्णना ।। \*।। श्रीनहारह व्यानिकन, शुर्वन होरह शुर्वन, मधुत्र वहरन।। ১।।

পিরিতে বিচ্ছেদ য়েন, হ্য কখন কখন।। ধুনা। নাহলে বিরহ জালা, নহে প্রেম উদীপন।। \* ।। বিচ্ছেদের
রীতি এই, য়েকরে জানেতো সেই, উভ্যে উভ্য ভ্যে, উভ্যাপ্রেম বন্ধন।। ১।।

ষ্চিলে বর্গের কীম, উপাস্য জানিবে তবে ।। ধু ।। কাটছ কর্মের পাশ, মিছে ভুমে ভুমনবে ।। #।। য়েছ্য ত্রিগুণাতীত, তারে কর গুণানিত, সমাধি রহিতে ভুাস্ক, উপাধি কেমনে কবে ।। ১।। শেত্রপো্র পাদপানি,বিহী- ন বেদের বাণী, আৰাহন বিসজ্জন, কিৰপে তার সম্ভবে । \*।। কবেকে দেখেছেৰপ, কবেৰপ অনুৰূপ, আদৰ্শ বিনেম্বৰূপ, কম্পনা কেমনে হবে।। ২।।

ঘচাও মনের ভুান্তি, কেনমজ দ্বৈধভরে ।। ধ্রু ।। রাবত নাহবেশুদ্ধ, তাবত কে ত্রাণকরে ।। \*।। কভূ বুদ্ধজানি
কও,অদৈত ভাবেরও, কভূ দৈতবাদিহও, কভূদৈতাদৈতা
চরে ।। ১ ।। কভূপণ পতিভক্ত, কভূশক্তি অনুরক্ত, কভূ
বিমুভাবেশক্ত, কভূভানু কভূহরে ।। \* ।! এরপেকি পাবে
তাম, পাঁচেকরি সমজান; তদগদে সাধধ্যান, তরিবে
ভবেরজ্রে ।। ২ ।। নিদর্শন দেখতার, পুণ্যহেতু বারবার
যাহগদান্থানে ভাব, শঙ্কপে ফলসঞ্চরে ।। \* ।। কিন্তু
পার্শে মুক্তিহ্ব, সত্যুৎ সত্য বেদেক্য, দশজ্যুক্ত পাপ,
ক্ষ্যকাম কিবল্পরে ।। ৩ ।।'

বিনতি বচনতাম, সই, কহিলেকিছবে !! ধু !! জেলা জানে প্রেমরুল, কেমবন্ধের বে !! \*!!. প্রফুলনিষাদমন, বিধিতে বিহ্লপণ, তারকি, সেহকখুন, বনপ্রিয় প্রিয়রবে !! > ৷৷ বমনিঘাতক বঁখু, মুখেবটে মাখামখু, বচনে তাপিতা বিধু, হেনকথাকেবাকবে i৷ \* ৷৷ সেনহে কার্য্য কারণ, য়েন ভুজস্বদন, ক্ষীরপানে প্রতিক্ষণ, গর্লরাশি সম্ভবে !! ২ ৷৷

## পুরবী রাগিণী ॥ হরিতাল।।

আজুকৈন হেরিতব প্রাণ, প্রেমের বাসনা।। শুং ।। য়াছ
যেছেফুরায্যাছে, আরকি হবে বলনা।। \*।। মূলেতে আঘাত
করি, সিঞ্চ শির উপরি, কিবাভাব আহামরি, য়েন কিছুই
জাননা।। ।। ইবে প্রেম কথাহ্য, সুখের কারণ নয়, কেবল পর
লম্য, উপজে ভাবে ভাবনা।। \*।। য়থাবালক বদন, উফ্দুজে
তে দাহন, হইলে কুত্কার তার, দ্ধিতে ঘটে জাননা।। ২।।

আড়ারঠেক। ।। চিন্তদুরারাধ্য, চিন্তামণি অনিবার ।। ধ্রু ।। কেনমিছা রাতাযাত, করবারবার ।। #।। সদা-চিন্তা অচিন্নয, অদিতীয় নিরাশুন, নেত্রশোল পাদপাণি, নাহিক রাহার ।। ১।।

কিকায় ভোমার আর, অধিনী স্মীপেপ্রাণ। গ্রন্থ।
সেজন আপন রারে, করিষাছ মন্দান ।। #।। রাহ বঁধু
রাহতথা,সুখলাভ হবে রথা, আমারে সহিবেসক, দুংসহ
বিরহবাণ ।। ১।। ভাহার কারণ, শুন, নামাগুণে রে
নিগুণ, কিঞ্চিত তার অভ্যণ, নহে কিগুণ বিধান ।। #।।
তবদন্ত রতদুংখ; আমার, সহজ্ঞে সুখ, হেরিতে ও চাদমুখ, অতিসুখের সন্ধান।। ২।।

পুরিষা রাগিণী । মধ্যমান্ ॥ । পারের পরাণ আন, আমার হবে কেমনে ।। ধুন ।। কথমু আপন নহ, ইহাকি ভাবনামনে ।। \*।। এদুংখে নহিছে
দুংখি,বর্ণ অধিক সুখি,এইমম আকিঞ্ব,ভোমারে রাখি
মতনে ।। ১।। হেরিলে হরিষচিত, না হেরিলে বিসাদীত, সহত ছদ্যান্তি, কেনাব সে হেনছনে ।। ২।।

বিহন্ধ ব্যাকুল অজে, পিঞ্জরে য়েন সঞ্চরে ।। শুং ।।
কারে বা কহিব দুংখ, বুঝিবে কিবা অপরে ৷৷ # ৷৷ ভাবি
তে তাহার ভাব, করিকত অনুভাব, কিভাবে এভাবে
ভূলে, নাভাবে অধিনী ভরে ৷৷ ১ ৷৷ ধিক ধিক বিধাতারে
জীবন অপেছিয়ারে, সেকেন সদাআমারে, রাখে অভর অভরে ৷৷ ২ ৷৷
শ্যাঃ,রীঃ

পুরিষা ধনা আ রাগিনী ।। আড়াতেতালা ।।
প্রেমপরিছেদে কেবা, এমন দহনে দছে ।। ধ্রু ।।
অবলা অবলা বালা, কত অনুচিত সছে ।। \*।। য়বেনব
ভালবানা,ভবেছিল অভিআশা, রবে ভাব একভাবে, মভাবে অভাবনহে ।। ১ ।। মনে করি পাশরিব, মালে মনে,
নাছেরিব, নাছেরে হারাই চিত্ত, তনুকি বিরহে রছে
।। \* ।। সহাশোকছভাশনে,বঞ্চিত তালিত মনে, এভাবে
নাভেবে জানে, বৈরজ ধরিতে কছে ।। ২ ।। শাঃ,রীঃ

বসন্ত রাণিণী।। আড়া।। উদিতে পিরিতি খণ, মমহুদ্য জাকালো। দু৲।। মীলন চপলাস্থি ঘণ শোভন কারণ, কিবা স্থণে প্রকাশো য়া \* ৷৷ আলাপন সম্ভাষণ, বারিধারা বরিষণ,
সুধরন সন্দীপন ৷৷ \*৷৷ লোকের গঞ্জনা নকা বাযুসসভাব
তায, দহযে দৃঃখহতাশে ৷৷ ১ ৷৷ নিদানে হত বিধান,
বিচ্ছেদ বজুসমান, বিবিধ শোক নিধান ৷৷ \*৷৷ আঘাতে আহ্লাদ্গিরি নিপাত হইলতায়, আশা চাতক বিনাশো ৷ ২ ৷৷

সুখেতে স্থার থারা, হুদেবিষ ইকিথারা ।। ধুন ।।
নহেতো সুখকারণ, কেবল জীবনে সারা ।। \*।। বচনে
পীয়ুষদান, মননে বিষ নিদান, এই কি প্রেম বিধান,
বিধিবে আঞ্জিত য়ারা ।। ১ ।।
শ্যাঃ,রীঃ

, উত্তরে কুছধুনি, অসনিধনি সিহরে १। धु. ।। কোথা নাথ উত্তরবে, কোকিল গলে কুহরে ।। ।। বিরহি নীছেরিচাঁদে, বিরলে বিনায়ে কাঁদে, নথচাদেকরচাদে, বিরাজে করনখরে ।। ১।। বলভ পলবচাদে, অন্তরে তাজিতেবাদে, আভরণ কানংকার, ভুমর ষরগুঞ্জরে ।। ।।। কিছ্ইবে কি করিব, উত্তান ভাবে চাকিব, ভাত্তকর তলেনব, পলবদল সঞ্ধরে ।। ২ ।।

लिति भवय गिति, ममान शर्गन ।। धः ।। लक्षणां करण तृत्व नित्रीकण कतिमहे, विरमयाक विरमयं।। \* !!

नितिष्ठ मुस्नीलन, मलाय भाष्डिमन, अकरे लक्ष्य ।। # ।। मीमार्ग वित्रक्ष्यः हम्मान ज्वन्न स्य महे, महाय नमाकीवनं ॥ ३ ॥

## यमडी द्राणिनी।। मध्यान्।।

এলোনাকি গুণমনি, মাধবে প্রাণান্তে ।। খুন।।
দুরন্ত বসন্তে কেবা, রাখিবে সুশান্তে।। \*।। বিষম মলয
বাষ, কুশুমকুসমতায়, কোকিলে, কুরবেবধে, বিনে
প্রাণকান্তে ।। ১ ।। ভূমরার গুণ গুণ, গণিসমগুণাগুণ,
শশিস্থাবিষসম, দহিছে একান্তে ।। \*।। প্রকুল কমল
কুল, মধুষতে অলিকুল, অভাগিনী নিরাকুল, দহিছে
নিতান্তে ।। ২ ।।
শ্যাং,রীঃ

विश्व उर्भग जारमः, रकमन हिलाद थान।। द्वः ।। आमि जूड़ारजम् नना, श्रित विकाननशान ।। \* ।। मिनम मूथक्षम, चात्रनावना कमन, विरमस्य वन नकम, रहरू राइ थानमान ।। > ।। विनाजव थान कि रम, नामिव वि-राइ स्वित्य, जावना जावित्य इर्जा, चवित्रज इञ्जान ।। \* ।। चाक् चमूक्वविधि, दिना मनमञ्जीविधि, चाद्रा मा विद्व हिसि, घर्षे अहे मावधान ।। २ ।।

#### উত্তর ।

क्ष्मम काहरत्रवात्न, जामारत मुधाउना ॥ ५० ॥

चतन। প্রবেধিমিছে, য়াতনা বাড়াওনা।। \*।। সুখি
কিয়া দৃথি য়াহা, তুমিকি জাননা তাহা, 'ভেবেদেখ মনে
মনে, বরঞ্জানাওনা।। >।। শ্যাঃ,রীঃ '

## वारमञ्जी वा वारमभारती अनुतामिनी । । भध्यमान् जारमन गीयजार ।।

শিব শিরশি বাসিনী, সংসার কারণ !৷ কুরুভ্রভ্য শিবারণ ৷ এমা সৈত্য পারন তরঙ্গে ৷৷ধুণা! ধরেছ অশি-ত লক্ষবার মমকায, আপিন উদরে বিখোদরী তবতায ৷৷ \* ৷৷ য়ন্ত্রণা হইযা থাকেমুঞ্সেয়াত্ন ৷ নহেপুনঃ সুখেগড়ে করহ ধারণ ৷৷ > ৷৷

কর্মপাশ কাট আগে,জানিবা তথন।। ব্রং !। কেম-লে চিন্তিতে হবে, নিজৈপুণা নিরঞ্জন ।। #।। নিগুণ নিছ্ ক্রিয়ভাব রাঁর অনুক্ষণ, গুণয়োগে কর্মভোগে তাঁর जाताथन, राज्यिक निश्व मर्स मूर्झ क विश्वन । स्निकाटन राज्यान जाटन जाटन अवस्थित । ३।।

विरुद्रहत बहियी, महिय मर्जिनीटवरभ ॥ धु- ॥ পতि ত পামর জন, হৃদি পদাসনদেশে।। #।। জটাজুট কেশ-कारम, व्यक्तम् (भाष्टिण्डारमः, नूहांकः नयमत्वयः, व्याना न्धा । अविष्य ।। ।। नवस्त्रीयन जम्भना , जूखिकि। । मूलाहना॰, चल्यो कूछमर्गा, नानानकात पृषिका। #11 मख्लािक मरनाङ्द्र, लीरनानुक लर्याध्व, मिक्वाह नाल-वतः जिल्ह बङ्गविष्मरव ॥ २॥ क्रिक्ट देवलामसानः, मृतमिक थतमान, यज्ञठक ठीक्तान, नरवा भक्षराक्ठवक ।। \*।। थर्डोक भूर्वजाशक, शान्तमकून वरक, घर्कामा शक-শৃষাপি, অবসব্যে পঞ্চশেষে । ৩ ৷৷ অধঃতে মহিষাকার, শিরঃচ্ছেদ মাত্রতার, পদ্ধানী দৈত্যহেরি, শুলেছদি एक कि ।। \* ।! तक कि मानवकाय, नाग्र भाग वांधिकाय, वामकरत थतिमूर्ण, भारेनव ्मानवरकरम् ॥ ॥॥ ज्ञास् विभि देन छ। मूर्यः, नि॰ इंड्राप्त चार्रेश मूर्यः, मक्काम इंड्रिक-स्म, किथिनृर्द्धवायाकूष्ठे ।। \*।। पिटनमा महिरवाशित, एन-वीव्यतिक्यक्त्री, दिष्ठिण नायिका वर्षे, वाममूत्रमि (बरम् ॥ ७॥

<sup>-</sup> खरांत्ररण शांशमाया, नरन मक वक ।। धु० ॥ त्रि र्या थाक मन कूतकः। त्रारुरेनछा शांवन मनिरम् ॥#॥

সেঅতি অপূর্ম বারগুণে ব্যভিচার। নির্বধি নীরেছছে পাপ গাপাত্মার।। তেমতিজানিবে বিষহলে বিষ সঙ্গ, বিষম্য বিষমৌষধি, কারণ তরঙ্গ ।।১।।

मूर्थित्वत्व, मनः उथाय।। धुः।। जन् । छन् मृङ्काय, सह उनया उत्रत्व ।। ॥ ।। जायुका जात्व भावताका ज्याय। मकत कूछीत कनत्त ভाবেत्रय ।। श्वाजित्व नीत्त्रवा जीत्त रहित्व राजाया, जूलाना जूलाना जाह, जुल्लित कथाय।। ३।।

সুখেচল মম, মনঃ বিহুক ।। ধ্রং ।। জ্ঞান সমীরণ সঙ্গ, কালীকণ্প লতাতলে ।। \*।। গতমাত্র পাবে তথা চাতুর্বিধ ফল,ধর্ম স্থা কাম মোক্ষ সুরক নির্মাল ।। অমৃতাক্ত কলচ্য ভূগিবে পতল, ত্যক্ত বিষয়সূল স্বাহে সাধা বৃদ্ধ ।। ১।।

जूमिरसञ्जादि, मनश्कृतक ।। धु ।। छीस्रजनमी छत्र क, पथाण पादानल ।। ॥। त्मवादि जिनारिक जाना धादक इत्य जात । निर्द्शा कृष्ठीत छाइ अकिमञ्कात ।। शंकीत नीरत्वाकीरत करत नपातक, त्यामार प्रक्रिक मृत्थ, कतिनत्व महा। > ।।

कारतकर मृत्थ, जनमीशक il शुरु ।। कात्रम मीत्र छ-त्राम, मानितन (क्षयां जारत ।। ॥। क्षायम क्षित्र का नार्डा कार्तन । क्यूशंर्ड मूट्ड प्रथा कमनी कार्तन। अपमार्थ नार्डिकाय कनंदित मद्भे, निवाय दिकालकृथा, श्राद भित्न अद्भे॥ >॥

स्रवार भन्न पामिनी, मूत्रवत्र वर्षिनी, पृश्वं धर्षिनी, ममत्रव काटन ११ पुर्वे ११ स्रिकी, ममत्रव काटन ११ पुर्वे ११ स्रिकी स्रिक्त काटन ११ प्राप्त स्रिक्त स्रिक

नित्रम नाञ्चन वर्तनी, चनत्रन कार्तिनी, रेम्छा विचाछिनी, यात घनरवर्ष्म ।। पुर ।। जमा अपे अपेडारम, घनना विचाछिनी, यात घनरवर्ष्म ।। पुर ।। जमा अपे अपेडारम, घनना विचालित क्षाप्रकारम, घनन र्व्या विचालित, पित्र अपि शक्षवर्ष, मनूज पृदिन नर्ष्ट, मनत आरवरम ।। ॥ ॥ क्षित्र नीत्रशायिनी, भान एक घाठकी स्त्रांशिनी, भिन्न मार्ल देम्प्सन्, क्षेक्ष्रूरम् ॥ ।। २ ।।

विरुद्ध नदिन क्रांक् हिन्दा मित्र जादन ॥ क्रुन ।। क्रुन क्रिक्त मामा, नक्रित क्रुन क्रिक्त ।। क्रुन विश्व क्रिक्त हो क्रिन होते हैं। क्रुन विश्व क्रिक्त होते होते होते होते होते होते हैं। क्रिक्त क्रिक्त होते होते होते होते होते होते हैं।

ว ।। ध्यथरमं कामिकारवन्न, घनवर्ना मुक्तरकन्न, भवावछ।

কর কাঞ্চি, শবশিশু কর্ণপুরা ।। \* ।। তালেজর্ভ চত্রোদ্য,
খত্ন নুগুকরাত্য, চত্তু জেশোভৈ কিবা, বিশ্বদা নুগু
মালে !। ২ ।।

२ ११ विशेष डाजाडीयना, এककरे। विভূवना, लाननि-स्तानीनवर्गा, नष्मामत्री क्डिवाना ११ # ११ ठजूडू स म्-भाडन, निर्वाभिति स्वाद्भाइन, स्वर्केट्य शक्ष उक्ष, जि-मयन डान डारन ११ थ।।

৩।। তৃতীয়ে রাজ্রাজেধরী, রক্তবর্ণাশুভম্মরী, বিধি বিফুরুত ঈশ, ঈশার এপ্রেডপঞ্চে ।। \*।। বিশ্হাসন নির্মিত, চতুতু জে সুশোভিত, পাশাঙ্কুশ ধনুংশর, ত্রি-নেত্র শশি কপালে ।। ৪।।

8 ।। ठजूर्थ जूरतम्बरी, जामन जम्मणित, त्रख्यनी जिन् नयना, जर्द्धन्यू घटे। जनाटि ।। #।। जनस्रात मनिमय, जूरनथमीख इय, भागासून द्वाख्य, ठजूकत जिजनाटा । ।।

े ।। शक्ष्म रेज्यवीयांग, लांहिज वर्ष वाकाया, वंजू क्र मूखमाल, जिन्यना श्रणामना ।। # ।। अक्रमाना ख्यवद्र श्रम्भुक व्यूक्षद्र, निरंतिमम् मन्त्रद्र, मूर्मां क्रिक क्रम काला ।। ७ ।।

७॥ यरके विज्ञमणात्म, जेशवीच त्यारण्यम्, निष मूल्थरणुक्ति, वामकद्वचत्वधित्र ॥ ऋ॥ द्वज्यत्वे जिन थाद्र, निज्ञमूर्थ करुंबद्ध, व्याद्विधाद्वा शायिनी, दिनिष् मूथ विनारत ॥ १॥

१।। मश्रामर्क धूनावकी,धूरमत वत्रगावकी,कोकपूक द्रथा

कल, वृक्षानित्वरणारवन्त ।। ॥ । विश्वाक्ष्यायाक्ता, कल्माता वात कृता, विर्द्ध भाषित्व किया, क्रान्ति काल कक्षात्त ।। ৮ ।।

৮।। अस्टिस वशनायू सि, शीखवर्गा यहामू सि, त्र इत्शरह त्र इतित्त, खूविका नाना खत्रत्य ।। \*।। त्राममूर्याधि नयन, हिन्सार्क्ष खाला भाखन, दिएका त्रमना सूवन, विख्य नमत्र कारन ।। ১।।

১।। দৰমে মাতজী বাদা, নানা গুণে গুণধানা, খন্নচর্ম পাশার্ম্ব, চতু ভূজে ধৃতকরি।। \*।। রত্নপাদাণান্থিত। রক্তবাস কিশোভিতা, ত্রিনেত্র। অর্দ্ধেন্দুভালে, বরণ জিনি তমালে।। ১০।।

३० ११ महातको मगरमण, भाषिक तम्बूद्ध छ , यहा ख्य भवष्य, हाक्रमृर्डिभधामना ११ क्षा। बङ्गकृत्स हज्कित, खिल्दिक मोनिभित्त, मूर्व मूर्वभीनि, मूर्व अथाधि खाला। ३३ ११

# वात्र अर्था। কাশ্মেরি ঠেকু। ॥ ঠংরি।।

विकार विकार है, क्रिल क्रिंगता। पुर ।। आधार व्यक्त वार्ष हैं ।। क्रिल वार्ष वार्ष ।। क्षा व्यक्त वार्ष ।। क्षा व्यक्त वार्ष ।। क्षा व्यक्त व्यक्त वार्ष ।। क्षा वार्ष वार्ष क्षा वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष ।। क्षा वार्ष वार्ष

वत्र ।। ७ ।। माजिय कृष्यूभाष, क्यूबाष, ज्लभाष, हैन्सी वह त्वाद्धल, मानडी मग्र ।। ४ ॥ धर्माल देशवा निश्च, वारका वनश्चियरोश्च, स्मार्ट खग्र जिल्ला, महान भगरन ।। ৫ ॥

আরেঃ ৷৷ কেরেজনদ সম,য়মুনা পুলীনে ৷৷ ধুণ ৷৷ এমন
মোহনরপ, কখন হেরিনে ৷৷ \* ৷৷ কালরপ নবঘণ, তড়ি
ত পীতবসন, শিধিপুছে শক্তধনু, মনুজনানিনে ৷৷ ১ ৷৷
কছুভাবি কালশনি, ভূতবেপড়েছেখনি, বাসনা বিরাজে
আশি, হুদ্ধবিপিনে ৷৷ ২ ৷৷ আছেমনমুঞ্ছান, তাহে
হলে অধিষ্ঠান,করিশুদ্ধা চন্দন্দান,কিঘটেজানিনে ৷৷ ৩ ৷৷

आरतः ।। क्रित विभिन्न वृत्म, राष्ट्राय विस्तानवामि ।। धुः ।। कामत्न वाक्षिन वाभि, राष्ट्रित क्रिय आणि।। ॥। मतिकि त्याक्ष्तमस्त्रः त्याक्षिन मून्नियस्त्रः, काणिरंय क्रित्व क्

जाद्भः ११ (कद्भ कप्रमृत्न, मेमनं वादमदङ्गित्य । धुः ।। जीवन त्याङ्गिङ्ग, नयुन्दर्गन ज्नित्य ।। अथस्य मध्य इति, कद्भद्ध त्याङ्गन्यां जि, ज्ञानस्य कात्नां ज्ञान्य त्यद्भः अज्ञित्य ।। ३।। वानना व्यथनस्त, सन्दर्भ जाद्भा इत्न, विद्याद्भ क्षिश्यत्न, ज्ञिजाल जालनानित्य ।। २ ।। चार्ड निकृतक्य, मिक्डिय चिक्रिय, कात्रक्य कात्र नय, मरक्षि नवतु विरयना ७॥

जारतः ॥ कृरनद्विष्टि नाति, कानाति स्वित्य ॥ धुःशा वितादि चस्वति । अस् ॥ विशिद्य विद्या । अस् ॥ विश्वित्य । अस् । विश्वित्य विद्या । अस् । विश्वित्य । अस् । विद्या । विद्या । अस् । विद्या । विद्या । अस् । विद्या । विद्या

जादाः ॥ मनः विश्व मम, कमत जाह्ण्विष्य ॥ धु० ॥ कानताबि उत्मामया, म॰ नात उक्ष्मारेष्य ॥ #॥ मायाकि ननयजाय, विषय कृष्णमञ्जाय, महात्माङ्कलकाय, किकल विकल निष्य ॥ > ॥ मात्राजु उक्ष्मत, जलक जनाम उत, जकात्न कामय जन, कार्रेज इत्वर्जिष्य ॥ # ॥, जाह्रे विन जूष्णिय, कत्र जाहात हिष्ठाय, पूर्णामाम कनशाय कान् कृषाना दिव्हिष्य ॥ २ ॥

चारत्र ।। क्रांत प्रम्नाकृत्व, उक्रमूत्व मांज्ञाहर्य ।। धुः।। इति ।। क्रिंग्त ।। क्रिंग्त वार्य ।। क्रिंग्त वार्य छ्वा, चहर्य ।। क्रिंग्त वार्य छ्वा, चहर्य थहर्यका, मन्जात मांगत । छ्वा, वार्य क्रिंग्त व्याप्त क्रिंग्त व्याप्त वार्य क्रिंग्त वार श्रीकृत्वस्य, पूक्ष वताकृत्रमय, पूक्षार्थन ভाविष्य ।। २ ।।

अवना अवनारत, विनित्न क्याना पुर् ।! क्यारह गवना रहन, निर्धिन जूदान ।। ॥ । क्रिनित्य क्यांति त्रारक, माजाधित्यारहमारक, श्रिनि निरुप्तमारक, ज्नाव नम्भा ।। अपरयार भाषाधित, रहन मृत्रध्राध्र, थितिरह अथनानरह, धरत श्रिकित।। १ ।। क्रिक्तथथ क्रित, अश्रमां जूरअथित, छेक गूक अरस्क्रित, द्रार्थरह हत्वा। १।।

বাহার অনুরাগিনী।। জলদতেতালা।।

প্রপঞ্চ দেছ পঞ্চত্তে বিলম্ব কি আছেমন ।। ধুন ।।
কাণেমন্তি কাণেনান্তি, কালবুদ্বৃদ য়েমন ।। \* ।। দেখকিব।
চমংকার, নিষম নাহিক্তার, কখন আলিবেকাল, গ্রালিবে জীবে কখন ।। ১ ।। অপরপ্ প্রিধান, নিশ্চিত
য়েহ্তপ্রাণ, তাহে অনিশ্চিতজ্ঞান, অনিশ্চযে আকিঞ্চন
।। \* ।। নাকরিষেতত্ত্তম্ব, নিষত বিষয়ে মন্ত্র, গুরুদ্ব
পরমার্থ, পাশরিলে কিকারণ ।। ২ ।। কিবাতব আশা
বাষু, এমনম্বেপরমাষু, ভূর্বর্ণ ভারার্পণে, নাহিমিলে
অনুক্রণ।। \* ।। তাহাসুখে করক্ষ্ম, নাভাব কদা অব্যয়,
ভূলিষেরে কালভূম, ভাবিলেনা নিরঞ্জন।। ৩ ।।

चात्रक्न विवध्यन, कत्रकानिका शयन।। युः ।। छेठे

শরহর শরী, চলহর দরশন ।। \*!! সেরে পুরি বর্ণম্য,
কোশপঞ্চব্যাপ্তর্য, শিবের ত্রিশ্লের্য, অতি আনন্দ্র
কানন। ১।। আদিয়ে ভবের্ছাট, হেরিয়ে ভবের্নাট,
ভূলিয়ে ভবের ভাট, মজিতেছ কিকারণ।। \*।। চলহ ভব
মনিরে, ভবেনা আদিবে ফিরে, গৌণ্কশ্পেকল কিরে,
কাটরে ভবজন ।। ২ ।। কাশীর মহিমায়ত, বর্ণতে বর্ণ
লা হত, ব্যলে তা ফুরাব কত, অতুল্য ভবভুবন ।। \*।।
জগতের কোনভার, সম্বন্ধে নাহিক ভার, প্লাবিত কারণ
বার, কালেত্রিশূলে স্থাপন ।। ৩ ।। ব্যক্ত শুতি ক্তিবেদ,
বুচেয়াবে পাপক্রেদ, নাহিত্র ভেদাভেদ, অভেদাত্ম
অনুক্রণ ।। \*।। জলেন্থলে সম্ভরীক্ষে, মৃত্যুমাত্র করিন
দীক্ষে, রামনান মন্ত্র শিক্ষে, তরাইবা ত্রিলোচন ।। ৪ ।।

#### য়ত্

श्रीवृत्तावन विशिष्टन, गांत्र मुन्द विश्वाद ।। दु॰ ।। धाविद (माजिएहक छ, जिनिय श्रवानशद ।। ॥।। शाः- शांक्रवाव न मन्द्र मन

### मश्रमान्॥

काञ्चित्रञ्जकान, किकान कार्तमा ११ धुन १। त्रूवकी विध्यक्रमिक, सिन्छि मार्तमा ११ %। श्रेकृतं श्रेनाम वित्र, पत्रविप्रतिक्रमित्र, माध्य माध्योद्ध्यत, शिक्षत्रवर्षे इर्तमा ११ ३ ॥

किरमहर्द निव्यं निव्यं

 कातर्ग, त्रयहि , ज्वन्यत्रर्ग ॥ ७॥ ष्रथवः ॥ मिष्याहि खानभरमा ७॥

কেবলে স্থাপশুসুথি, সেভাব নাহিসম্ভবে ৷৷ খুঁ৷৷ ছেরিতে প্রফুলকেন, ছদ্ধ ক্মলভবে ৷৷ ঋ৷৷ অথচ শুধাপশুন্য, ছেনকথা কেবাক্য, ন্যন কুমুদ্ব হয়, বিক্লিড কিগৌরবে ৷৷ ১ ৷৷ অনুমানে তে ঘটন, অরুণে তীক্ষরিণ, শালিতে শশগণন, উভযে দোষ ভাজন ৷৷ ২ ৷৷ নির্মাণ তব বদন, ন্যন শ্রিক্ষ তপন, তাহাজিভাবকারণ, বলনা কেননাহবে ৷৷ ২ ৷৷

তোমার রচণো পাস্তে, নিতান্ত সঁপেট্নন ।। ধুন।।
ইচ্ছান্যী ইচ্ছাত্ব, রেইচ্ছাক্রএখন ।। ঋ।। অস্তরে একাস্ত
অতি, তবপদে রতিমতি, থাকিলে ঘোচে দুর্গতি, জেনে
নবেছি শরণ।। ১।। বিচারি নিগমতত্ত্ব, দুর্গানাম মহামত্ত্র,

মৃক্তির নিধিত্ত নিতা, বেদবর্ণিত বচন ়া ১।। তাহাতে অন্যথা কিবা, ল্পুহ্য নিশিদিনা, তবুবার্থ নহে শিবা, তবে এড়াব শমন ।! ২।।

নিশ্চিত ভৌতিকদেই, ভাবসদা বর্ত্তমান !! ধুন ।।
ভূতশন প্রতিপাদা, জাননামূচ অজ্ঞান ।। \* ।। কার্য্যা
কার্য্যা মর্যঞ্জই, কার্ণের কার্য্য য়েই, নম্বর পদার্থ সেই,
কার্ণে অভিবিধান ।। ১ ।। কটিমুখতভ্তমত, বিভূতজগত
য়ত,কালেকটি মুখগত, এইতোভার সন্ধান ।। ২ ।। নিত্য
ইচ্ছা সমবাযু, কার্য্যদেহগত আযু, সেইচ্ছা বিগতনার,
ভূতে ভূত সমাধান ।। ৩ ।।

বিভাস অনুরাগিনী ৷৷ জলদভেতালা !!

চিত্রকাব্য 11 ১ শ্যামরপ হেরা ওদ্ধি,ন্যন মোহিতহলো।ধুং।
নান ।। ২ মান্দ শ্রীপদ' ও পাড়ে, কিরপে বিকাকবলো।।
শ্যামাসু ।। ৩ সুবিহ্ব গুণ' ৪ গাণে, রব কালারপ ধ্যানে,
শ্রী ।। এইতো বাসনামনে, নজুবা বববুকল।।
জন্যধা।। ৩ সুখের খ্যান ৪ খিরি, জদ্ম
গগণোপত্মি,কালাচাদে শশিকরি, রাখিলে
ভবে স্কলা। ১।।

क्निट्डाला ज्लानन, चनिन्छ बाइमायाय ॥ धुन ॥ चनात्र मन्त्रात कार्या, बन्नक त्राकाश्याय ॥ ॥ भूनीन বিশিষয়ত, কালেগৃষ্টি কালেছত, সাগর তর্ত্তমত, এক আসা আর্থায় ।। ১। থেপে জগতবপ, নানাবিধ অপবাপ, কৈবল কৃহককৃপ, অন্তিত্ব কি আছেতায়।। #।। তেমতি জানিবেসব, অমাত্য বন্ধু বান্ধ্য, সময়ে হইলেসব, রবেতারা কে কোথায়।। ২।। ছারাস্ত আত্মলন, কারে করের আপন, নিশিতে পক্ষয়েমন, একত্রে হয় মিলন ।! #।! প্রাত্তে অন্যত্তেগমন, পরস্পার অদর্শন, কাকস্য পরিবেদন, কেকরে তখন কাষ্ধ। ৩।। অতএব নাবধান, এইতব সুবিধান, তেত্তিদন্ত অভিমান, সাথ আত্মত জান।। #।। নহে হলে হতপ্রাণ, সার হইবে শ্মষাণ, ভেকে য়াবে অভিমান, গেছেমাত্র হায় হায় ।। ৪।।

महनाकितिह कर्म, धर्ममर्म नामानित्य ॥ धु० ॥ छत्रमा व्यानान्य छ।, व्यानान नाहिणांवित्य ॥ ॥। व्यां व्याना व्य

खनर नाथ विश्वार, काथाय इहिन्न ।। धुर ।। जदब वज उक्क श्रेज, किए माक जिल्ला ।।, ॥ ।। उद्देशिक श्रुपाद्य, क्वा महिवाद तथाद्य, ना भिन मूथ शक्क छ, वृद्धित (प्रिय-एन ।। २।। खप मंन जविश्वाय, नावना खन खनाय, निजाम श्रीवज्ञ जाय, मूडक्म भाय ।। ॥। नयन नक जिल्ला मीन, स्पि कम के किन, एनाय विभी श्री नयन नक जिल्ला ।। २ ।। श्री स्वा म्यानिहन, का जज कि जिल्ला खर्थ श्री व्या ।। श्री स्व , सम विना भिन्न ।। ध्येन कि जिल्ला ।। २ ।। भावन श्री श्री हो ।। ध्येन कि जिल्ला ।। २।।

काथाय हिलालक्षांव, विष्कृत वावहानित्य ।। धुः ।।
किनू १ त्थाल मृश्येनी द्व, मृश्येनी द्व जाया है द्या। \* ।। जामाद्व ना द्व द्वान, भनत्क क्षनयज्ञान, क्ष्मदन देव द्वाध्वि, माद्वा निवाना हित्य ।। ।। (इद्विनिश्च क्ष्येमान,
द्विल क्षामाद्र क्षान, जूबिप्रमि (मिद्धान, वृक्षित्यमा नावूविषय।। \* ।। ज्वादक हा हित्य भूषे, क्षित्य सम्मूह्णे, क्षित्य क्षास्त्र मूथे, ना भारे जाहा जाविष्य।। १।।

উঠ উঠ মন। চোর, য়ামিনী য়ে অবশান । ব্রু ।।
চোরের উচিও হয়, বিশিপ্রভাতে প্রস্থান ।। ৼ ।। তুমি
মনঃচোরম্ম, নমনী প্রহরিস্ম, ছেরিলে হরিবে আশি,
তবে কিহবে বিধান ।। ১ ।। সুখভারা সুগহরে, কোকিল
পঞ্চমন্বরে, কুহরে শ্রুতি কুহরে, প্রহরণ সমজান ।। হ ।।

कृषिम नीरतक्रमल, कृषिन कितायन, बृष्टिन पूर्थ क्रमल, घरिन मञ्जालकान ॥ २०॥

जित्ना करना करनाइति, नित्तमित किरियण ।। ५०!। ছिल्लकात कूछ क्रिया, नामाय्य इसेकिण ।। ॥।। जनाए हसेकिण ।। ॥।। जनाए हसेकिण विमूत्र विमूत्र अन्नविम्न ।। ३।। जन्न जन्नविम्न , करना जन्नविम्न ।। ३।। जन्न जन्नविम्न ।। १।। विम्न जन्नविम्न ।। ॥।। विम्न जन्नविम्न ।। ॥।। विम्न जन्नविम्न नित्रहित , एइकि त्यक्षिति, प्राथर प्रकान। ।।।

भित्रक करयह माम, मासिट व विषिणि ॥ धुर ॥
भूक्ष इहेरवहरत, खूदन मनरमाहिनी ॥ अप हृणां जिल्ला क्ष्मार्थन स्थान स्थान स्थान स्थान ।। अप हृणां जिल्ला क्षित्र ।। अप हृणां जिल्ला ।। अप हृणां क्षित्र ।। अप हिर्ण किया कि स्थान स्थान कि स्

.चानिवि निम्नीकरेव, वन्त्रमकाशायांवी ॥ कुर ॥

माइत्य धमनत्कन, नामृनि माखानि।। काथाद काल प्राक्ष, विलय्विक काष्ट्र काञ्च, धानकाञ्च हात्र। कात्रा, पात्राधित्य मृनभानि॥ >॥ मण्यश्मत भावत्य, धानि करे छेनालत्य, वात्रवात मञ्जाधित्य, नात्रत्य क्यानी शक्षा ।। हात्रिमानियाद्ध मिया, धार्मात द्वार्यक्या, कित्रत्थ काछाम्हिया, त्कमन भाषात्था त्रानी॥ २ ॥ हित्यह् कृतीत्न कन्।।, कृतमील माम्बन्।।, जामारे निश्चनी हन्।। कथेविय छत्र। वानी।।॥ धनमात्र धारुत्वाय, धनुत्वात्य भित्रकाय, धनुमाल माम्बन्।। स्वार्थकाय, धनुत्वात्य भित्रकाय, धनुमाल माम्बन्।। स्वार्थकाय, धनुत्वात्य

মনেতে দৃচতা রাখ, কিকরে হবিস্যাহারে ॥ ধ্রু ॥
জানতরী উপালক, য়াইতে ভবাজিপারে ॥ # ॥ করতার
স্বিধান, য়থাধ্যান য়থাজান, শান্তিধৈর্য় সন্দাচন্ত্রা,
নিরঞ্জন বলয়ারে ॥ ১ ॥ মৃল্পিদ পাবেব্যলে, গঙ্গাতট
বাসিহলে, কিহবে কহকৌশলে, গোমতি গলাযমলে
॥ # ॥ জ্ঞানমাত্র মৃল্জিহ্ম, তাথেতে কিববর্ম, তাহলে
গলারভেক, তরিত সংনারভারে ॥ ২ ॥ ঢাকিতেলোক
লক্জায, হ্যেতপ্রন প্রায়, তুলসী মালাগলায, হরি
নামা বলি গাহা॥ # শ পাইষে কিফলভাম, লোকেরে
ভ্লানায়ায়, বাহ্যাম্বর জ্ঞাভায়িনি, কেমনে ভ্লাবে
ভারে ॥ ৩ ॥

मरमकति मनःकति, त्रांथिकात्रंग कतिरम्।। क्षः।। मा-

मान्वात्रन मन, मल वात्रन इहेरय ॥ # ॥ जुनिष्ट न॰ नात्र वत्न, कृमकी नाशिनीमत्न, माध्यय विषयक्न, त्राप्येत्रद्व नक्षिर्य ॥ १॥ देवद्रात्रा शक्ष्ममन, मनिष्ट कृतिरयवन, शत्रमार्थ काक्नमम, ज्ञानत्म ज्ञानहरूष ॥ # ॥ ज्ञाना कृष जिल्लाम, त्रजात्म ज्ञानिष्ठ निष्ण्यात्री, ज्ञाहिजात्रीयायाहर्य ॥ २ ॥

क्ष र्याह्न कानी, निकृष्ण व्यापान ख्य ।। धुर ।।

क्षिनिक्ष পশুপতি, গোপিনী গণেসদ্যে ।। वामना नवान
स्मान, सूनन वाभनयत्न, (इतिन किनास्मासन, शिवामहिक्
दाएर्य ।। ३।। जूनिकि नामानग्राताहे, भूतार्य मृनिक्ति भाग महम्मानत्न, नृष्ट्वव्यात्न्य त्राधाह्य ।। ॥।। श्रक्
स्वाह्म महम्मानत्न, नृष्ट्वव्यात्न्य त्राधाह्य ।। ॥।। श्रक्
स्वाह्म नात्राधा किट्डज्यल, जाइल मा नाथा त्राधा प्र्याह्म क्ष्रिक क्ष्र्य स्वाह्म विद्याह्म ।। १।। श्रिम्स विद्याहम विद्याहम ।। ॥।।
स्वाह्म इतिम्राह्म, श्रक्षि विद्याहम, हिल्लहेर्य निव दिस्म, वाममाममानामान्य ।। ७।।

हेकी जून मन (कन, विशिद्ध श्रिष्ट्यन ।। धुन ।। क्वा एड्डाबिया मूछ, हेउछछ व्यत्वन ।। क्षा (मर्थठात्र निम र्थन, विठातिकार्य) कात्रन, (प्रकातन (महेकार्य), (मर्छ्डी वन (यमन ।। ১।। बाठावण (इत्रम्भान, विश्वपर्गार्ध) चा-व्यत, मनाविश्व छङ् चत्रान, नावह मास चानन ।। २।। কিকার কহিব। পরে, য়ারে থোঁজ সেইছরে, জাননায়ে সর্বাপ্রকা, নয়প জগত নিরনুন।। ৩।।

## मध्यात्नद्राठेक्।।।

অবশ্য মরণ রদি, মনেথাকেনন । ব্রুম। প্রাণান্ত লাছ-তে সাথ, জীযন্তে নিধন ।। \* ।। এতয়ে সুহেরদেহ,রাখিতে নারিবাকেহ, কিদীন কিধরাপতি,ধরাযমিলন ।। ১ ।। কালের নিযমে আহা, অবশ্য ঘটাবেরাহা, আপন ইচ্ছায় তাহা, হইলে কেনন ।। \* ।। রমের মন্ত্রনাভার, সহিতে নাহবে আর, ভারিকে কেদেযভার, ঘটিবে তেমন ।। ২ ।।

ষানিনী ব্যলেগো রাথে, এতমান ভালোনযা। ধু ।।
ভাতিখন শ্যামে ইকি, সন্যাসি সাক্ষাতে হয় ।। \*।। শিথী
পুচ্ছপরিছরি, জটাওচ্ছ পরিছরি, পীতবাসু দুরকরি,
বাঘায়র পরিরম।। ১।! য়ারসুথে বুজেসুথ, ভাহার মলী
নমুখ, ছেরিতে বিদরেবুক, শ্যামমুখণে দুঃখচম।। ২।।
শুকাম্যাছে ওঠাধর, সান কৃষ্ণ কলেবর, সজল জ্লম্ভনু,
ভাচ্ছোদিত ভ্যাম্য।। ৩।। আহামির হাম হাম, এয়াত
মাক্বকাম, বিখনাথ শ্যামরাম, জ্লাথ বেশে বঞ্ষ
।। ৪।। অতএঁব উঠরাই, মানেতে পভ্রহাই, শ্যামহতে
ধননাই, সানভবকিবিষমা। ৫।।

मरनिक ভाषनाममः निन्दि छ इरविश्वम ॥ पु. १। मूछा

দ্রতাদ্বাপরাদি, দেখতার নিদর্শন ।। \*।। কোথাপিতা মাতাতব, কোথায়াদব রাঘব, কোথা কৌরব পাশুব, কালে হয়েছে পতন ।। ১।। কোথারবে ধনজন, কোথা জীবন য়ৌবন, কোথাদারাসূত্যণ, শেষে শ্মবাণে স্থাপন ।। \*।। সমযে দেইউদ্ভব, সমযে বন্ধু বান্ধব, সমযে হই লেসব, সবে তোজীবে তখন ।। ২ ।। সদাগতা আতহবে, সদামাত্র বন্ধরবে, সদাসন্দ ভাবতবে, সদানন্দ প্রতিক্ষণ ।। ৩ ।। নিত্যজুযারেরনীর, নিত্যনহে জেনোধীর, নিত্য-নিত্য করিছির, য়িনি নিত্য শ্মাতন ।। ৪ ।।

 ঐগো মজলা আলো, মলল হইল রাণী ।। ধুন ।। উঠ
দুর্গবেলি শুন, আধঃমুখে আধঃলাণী ।। \*।। ডাকিছে মা
মাবলিষে, মারমাযাতে ভুলিষে, আরকি কোলে নইষে
চুম্বন কর মুখানী ।। ১।! অচল সচলহ্যে, প্রতিবাসি
জনেক্যযে, আত্মবজু সজেল্যে, ভবনে আমভ্বানী ।। \*।।
করজ্য জ্য রব, অদ্যমহামহোৎসব, পায্যাছি মাথের
দেখা, জ্যজ্য শূল্পাণি ।। ২।।

তোমার আরণ হরি,শক্ষটে আর কেবালবে ।৷ ধুণ ৷৷ য়েজন আরণাগত, শ্লদিসে বিপদেরবে ৷৷ ‡ ৷৷ দেখতার নিদর্শন; প্যাসুর ওচরণ, ধ্যানে অধ্যগতিমুক্তি, তবে বিশ্বলযয়বে ৷৷ ১ ৷৷ অপার বুজের লীলা, কিক্সে তা- পাশরিলা, ত্যজিলে একাঙ্গরাথে, বিশাস কেমনে হবে
। ৠ । বিধিলা নাতুলক শ, য়দুব শ অবত শ, অনাশে
করিলা ধুরে, দ্যা শ নাহি সন্তবে ।। ২ ।। মলযজ দান
করি, কুবুজা হলো সুন্দরী, শেষেতারে ত্যস্করি, নাম
কুজারানী সবে ।। ৠ ।। কালীয় স্মরণ লয়, কৃষ্ণভার কর
ক্ষ্ম, হইযে পাণ্ডব স্থা, দেখালে ধর্ম্মে রৌরবে ।। ৩ ।।
পুরাকৃত পুন্যকলে, দৈবকী জঠরেইলে, অয়োনি সমুব
বুদ্দ, সম্ভবকে জানে ভবে ।। ৠ ।। কিন্তু কি য়ুয়ুদ্ধর্মে,
পিতানাতারে আজ্মা, নিগড় বল্ধনেরাখ, অন্যে উদ্ধা
রিবেকবে ।। ৪ ।।

এসোএসোএসোহরি, মরিমরি একিবেশ ।। ধুন।।
ছিলেকার কুঞ্জেকেবা, সাজায্যাছে হাবীকেশ।। আধরে
অঞ্জন দাগ, কপোলে তামুল ভাগ, বদনে রদনরাগ, হকু
হকু থেশ বেশ।। >।। ললাটে চন্দন বিন্দু, য়েন অকলিফ ইন্দু, ভাহাতে সিন্দুর বিন্দু, তরুণ অবগাবেশ।। \*।। নিজবান পরিহরি, হেরকি রযেছোপরি, দেখাহে পড়ো না ঢলে, আছে নেত্রে নিদ্রালেশ।। ২।।

(करत वाभात उभा, जिलाबि श्दात दानी ॥ धुः ॥ छेठं छेठे जिति, प्रथ धना भूगमि ॥ ॥ अत्रव दा । अत्रव । अत्रव दा । अत्रव व । अत्

कय जात निगम्त, घूटाट भागान घत, कांगीशृति मत्ना इत्रा। \* ११ निर्मान कित्रिय इत, जांशिन छांच विष्यम्त, जात्रशृशी (वर्ष कन्छा, घर्शान शांत्रशांशी ।। १॥ जार्श क्षारन धमन, निथिन भूग्छाकन, क्षानिमाळ छ्डाम्बन, छाटनध्दत शंकानम ।। \* ।। ইरव्राल म विर्त्ताथ, क्षिन इहिन्द्रादान, एथिक छान छन्नी, वन क्षय मूनशांशि। ।।।

একিবপ হেরিছরি, নেজেছে। য়োগির বেশ।। খ্রং।।
জটাজুটে কিবাঘটা, ঢাকিযে চাঁচরকেশ।। \*।। মুরলিত্য
জিযেহরি, পিণাক ত্রিশূলধরি, বনমালা পরিহরি, কপাল
নালে নিবেশ।। ১।। ছিছি কি ক্যরেছরঙ্গ, চন্দন চর্চিত
জঙ্গ, ঢেকেছে। বিভূতি দিয়ে, আহামরি হ্যাকেশ।। \*।।
পীতাম্বর ত্যাযাগিযে, সাদ্ল ক্ত্রিপরিয়ে, পীত্রভা
অনুসারে, কটিতটে শোভেন্সেয়।। ২।। জেনেহিছে
হ্যাকেশ নানেহলে য়োগিবেশ, নকলি হ্যেছে আছে,
বাঁকান্যনে বিশেষ।। \*।। ঘটেছে তাবতবটে, কিন্তু
স্ত্যতাইরটে,লুকাতে ভূলেছ চিত্ন,ভূগুপদে বক্ষদেশ।। ৩।।

দুকৃল হরণহরি, বৃঝিকি তেমার থেলা । ধু: ।। হরি কুলশীল কুল, তুবায্যাছ কুলভেলা ।। রা দেহবাস পরিহার ক্ষমাকরপরিহরি, দৈখ ঘনাইলহরি, তরুণ অরুণবেলা ।। ১।। নিবত রমুনাবারি, অরি আমরা বুজনারি, আজু কেন বংশিধারি, করিলে এরসমেলা ।। ২ ।। হরিহরিমরি লাজে,কিকবেগোপ সমাজে, রশদারে ক্যেদিব, য়দি দিতে করছেল।!। ২ ।।

ছিছি কেব্যলেছেছ্রি, এনব য়োগীছ্ইতে ।। খ্রুণ।।
ঢাকিযা চাঁচর কেশ,জটাভার বীণাইতে ।। \*।। পীতবাসে
ৰাঘায়র, বংশিফেলি শূলধর, বনমালা পরিহর, কং
কাল মাল পরিতে ।। ১।। চন্দন চর্চিতকায়, ঢাকভয় দিযে
তায়, ভালেঅর্চন্দুহায়, মুখচন্দ্র লুকাইতে ।। \* ।। তাতে
কি লুকানজায়, ওরপ স্থরপ কায়, দি তীয়থাকিত য়িদ,
ভবেলুকাতে পারিতে ।। ২।। তুমিয়ে রাধারশ্যান, চিনি
মাছি ওণধান, আরকেন য়োগিবেশ, হুদিবিদীর্ণ দেখিতে
।। \*।। চলহে নিকুঞ্জে য়াই, কেমন কঠিনা রাই, এমন
কিমানশ্যানে, হুয় সন্যানি করিতে ।। ৩ ।।

কেনহর ক্পানতা, করুণাশশ বিতারণে ।। প্রশান ভবের বৈভব সব, সন্তবতো অকিঞ্নে ।। \* ।। পিশাচে তোমার প্রতি, আনার পিশাচ রীতি,তুমি ভূতনাথ মম, দেহ ভূত পঞ্চাণে ।। > ।। অন্তচ্ম জটাভার, সর্ব সর্বস্থ তোমার, অহশ্মন্তি চর্মসার, জটালুহাদি বিহনে ।। \* ।। ভবের বিভূতিছাই, আমারে ঘটেছে তাই, য়াহা করিতাই ছাই, যথাঅসারহ্বনে ।। ২ ।। তশহি দেব পঞ্চানন, ব্যক্ত আছে ত্রিভ্বন, আমিও পঞ্বদন, কহি বারে কাক্থনে ।। \* ।। তবক্ঠে হালাহল, নিয়ত রহে खेक्कन, गतन मय क्विन, ममक्छे क्र्ड्यित !। ७ ॥ व्यक्ति गम जवक्राक्ष, वाक्षनाना विश्वत्व, कन्य जूकक्ष मम, एम्ड् मनयक वरन ॥ \* ॥ विक्रिननाटि जामात, পোড़ा क्रशान व्यामात, जूमिकानास्क कान, जीउध्यशालि गुरुत्य ॥ 8 ॥

### বেলায়ল্ রাগিনী ৷৷ ধিমাতেতালা ৷৷

नयन मगन इन, मानमङ्ग ठक्षण ११ थु. ११ छ्राय कानन पूर्थ, पृष्टिन वित्र हानन ११ % ११ है कि कार्य स्त्रमा, मित्र किवा मनत्रमा, श्रापमन खानशान, इत्त खू निव नकन ११ २१। वा, इत्त ख्रम नकन ११ २१। खूलिह चामि स्राक्षांत्व, (मर्जाना खात्य खादि, ज्राव कार्य श्राप्त, विकन खादर्ज कन ११ २॥

একোন বিধান মানে, উভযেরি অভিযান, ।। ধুং ।। কেআগে সাধিবে রাগে, হল প্রমান বিধান ।। \* !। প্রমান আভিমানে, প্রমিক বাড়াযে মানে, সাধ্যে অভিয়তন,তবেমান সমাধান ।। ১।। তানাহ্যে একিরীত, হৈরি অতি বিপরীত, সাধিতেইবে উচিত, দুঃখেদছে যার প্রাণ ।। ২ ।।

য়ামিনীপ্রভাভোমুখা,কামিনী কে প্রবেণিধবে।। ধুং।। অবলা-অবলাবালা,সম্ভাপে কে নাদহিবে।। \*।। প্রফুল্ল ফুল কাননে, দহযে বিরহি জনে, তাহেঅলি গুণাগুণ, শতগুণে জ্লাইবে 11 > 11 মনপ্রাণ ক্যুদিনী, বাসিছে পুনঃ য়ামিনী, কিফল স্থাশা রজনী, য়দিপ্রাণ নার হিবে 11 ২ 11

द्वत् क्विनिविद्य, किट्यार्य श्रामिनी ।। युः ।।

व्ययद्वत्र मिनिनि, गृजिष्ठ् निनिनािनी ।। ॥। कूप्पिनी

हिल्लपूर्य, (इतिर्यं मृथा॰ अपूर्य, वँधूवित्न मनपृः र्यः,

दम्पन द्वा मिनी ।। ১।। क्विक्ति लिल्जािशाल,

मूथन॰ द्वािनी श्राप्त, व्यनिनी ।। ३००० निविद्यः, स्विज्ञ निविद्यः, क्विल्यः, क्

রামিনী না পোহাইতে, কোথায় যাইবেবল ।। ধুং ।।
অসম্ভব ভাবতব, আজু হেরিহে কেবল ।। \*।। হেরশশি
প্রকাশিত, নহেরবি সন্দিত, কোথানাথ সুখতারা,
মুদ্তিক্ষসদল ।। ১।। তববাক্য শেলসম, পশিল হৃদ্
থেমন, কিবালে হে গুণ্মণি, চাহিলে বিফলফল ।। ২ ।।

ज्ञानिश जिल्लान, विज्ञावती व्यवनान ॥ धुः !।

তবপাদ পাছেবঁধু, মধু বুতেরি সমান । ৄ#!! বিভাবরী পো-হাইল, ডান্তনূ প্রকাশিল, বনপ্রিয প্রিযভাষে, ভাষিছে ললিত গান ৷৷ ১ ৷৷ বিফলে গতায়ামিনী, কিছলে এত মানিনী, মানরাস্থ মুখেদেখ, সুখশশি সমাধান ৷৷ ২ ৷!

----

বেহাগ বাবেহাগরা অনুরাগেণ আড়াতেতালা তালেনগীয়তে।

মমদেহ সিন্ধু স্থি, হইল মন্তন । দুং ।। ক্রমেতে
বুমহ্তার, লক্ষণা লক্ষণে স্ব, য়েতাবত আযোজন ।। \* ।।
বিরহ্ অচলপ্রায়, অনন্ত য়ন্ত্রণাকায়, গুণসমতায় ।। \* ।।
কহিতে বিদরেকায়, হায় হায় হায় সই। জীবনপ্রাণ
আকর্ষণ ।। ১ ।। উঠিল শোক্ষাভঙ্গ, মালিন্য হ্যত্রজ,
মোহণশ্বর ।। \* ।। বিষাদ গুষ্ধিদুঃখ, পারিজাতব্জ্
তায়। চঞ্চলাচঞ্চলামন ।। ২ ।। তাহে আশা বলবতী,
লুধার কলস অতি, জ্লাইযাসুখু ।। \* ।। অমনি নিরাশা
বিষে, অশেষ বিশেষেশেষে । জ্লায় ক্লভ্বন ।। ৩ ।।

वित्र व्यावयं कार्ड, इरविनयं त्र ।। युः। श्वनश्चन श्रान त्रिश्च व्यावयं कार्ड, इरविनयं त्र ।। युः। श्वनश्चन श्रान क्षित्र श्री विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र व्याय, कनक भाष्ट्र ।। ३।। विद्यात्र कृत्र व्यावयं श्रान श्राम श्

কর্মজোগ রসায়ন।। ২ ।। পরেতে ব্যাধির শাস্তি; বিগত শির সংক্রান্তি, হইবে য়েমন।। \* ।। মিলন কান্তি কারণ, দুকুল চূর্ণাদি সব। সুধসেব্যসংঘটন।। ৩ !।

পিরিতি সাগরবল, কিসেহব পার।। গ্রং। অবলা অবলা আমি, সবলা নহিতপ্রাণ, সেয়েঘোর পায়াবার।।
বিরহ জীবন তায়, হেরিতে জীবন য়ায়, তাহেপুনর্মার
।। ৠ। হলেব্যক্ত বামুসঙ্গ,কলঙ্ক তরঙ্গরঙ্গে। দেহতরী বাঁচ
ভার।। ১।। অমনি নিমণুহবে, লাঞ্জনা কুন্তীর তবে,
করিবে আহার।।ৠ। তবেপারি হতেপার,ভরসা তোমার।
তাম্। য়িছও কর্ণধার।। ২।।

সকলে বাধিছে বাদ, বিরহ সঞ্চারে ।। ধুণ ।। সুধাণ শু
চদ্দন পিক, মল্যার সমীরগ্ন, বিশ্বপ্রাণ বলেয়ারে ।। ॥।
হেরিতে শশির মুথ, উপ্জে অপারদুঃখ, কহিব কাহারে
।। ॥। মনেহ্য প্রিয়জন, নিরমল চন্দুনন। তথনি ছদি
বিদারে ॥১॥ বিলেপন বিলেপন,ভাবিয়েন হুতাশন,কারণ
বিচারে ।। ॥। নাথের দেহ সুবাস, স্বরণে জন্মে হুতাশ।
কিহল হল আমারে ।। ২ ।। পিকর্বে তার্রব, জগত্
প্রাণ্ডে কিবাক্ব, ব্রহ প্রকারে ।। ॥। মিলন সীতল
তার, মনে উদ্যে আমার, ভাষি অকুল পাথারে ।। ৩ ।।

नाशिन विव्रहा नन, श्रम्य कानदन ॥ ५० ॥ देशश्रीका

কুরক আর, আনন্দ বিহুদ্ধ প্রাণ, দহেনেই হতাশনে।।
প্রাণবায়,সনীরণ, করিতেছে উদ্দীপন,সঘনে সঘনে।।॥।
স্থাহলাদ আদিত্ণ, কৌতুক পতঙ্গপ্রাণ। কিসুথে বাঁচে
কেমনে।। ১।। এখন উপাষ তায়, নতুবাজীবন য়ায়, জীবন বিহুনে।।॥। তুমিধারাধরসম, বাঁচাও জীবনপ্রাণ।
নিলন ধারাবর্ষণে।। অথবা।। সুথধারা বরিষণে।। ২।।

पिट्र अद्वाध (एड्, नामार्न कीवन 114% 11 विना भूनाधात कांथा, मूरथत मकारत महे, इय पृश्यंत वात्रवा। \* ।। निनी जान्यमन, त्रविज्ञाद अनुकर, कृत्रभव दन ।। \* ।। कल्मूथालकीवन, त्राहेज्भातत जारम । पर्ह कमल कानन ।। > ।। ठिमि जानिवामिश, आभन जाव नित्रिय, क्लालि मत्रवा। \* ।। इर्यिह जीवनहातो, अर्वा-ध अक्रार्वित । भवमूथाला अथन ।। २ ।। मन्भू कि छेमा यकत, आन्नाथ धाताधत, इल्ल वृत्रियन ।। \* ।। रामीव्रकीत जिनिय, मृज अमृज इहेर्य। महमाहर्द (ठिन ।। 8 ।।

क्वित कालंट ज्या, अजू उपय ॥ शुरा । विद्राह विद्राह एएट, विद्रह जन्म ध्यू हे, पण्य जू एका भा सा । सा । हिरमद विधान मून, काविय नार्थद छन, स्माहभून हे गून । सा विनामुदम मुमनीद, जेशा क्विन इस्ति का । स्मा विनामुदम मुमनीद, जेशा क्विन इस्ति का । समीद किमानिक ।। १।। भदिर जिमान का न, समन अलक का न, राज्य कि कक्षा न ।। सा काविय नार्थद जा न।

सहीरिक (साहिक कृत्। (सहिक सिनित्रस्य।। २ ।। किर्छ सक्ति हुन कृत कृत कृत सिक्ति स्वा पृत्थ नका श्राह्म क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका श्राह्म क्रिका श्राह्म क्रिका क्

আমারে হেরিতে তব, বিরস বদন।। খ্রুণ।। অনুভাবে
বুঝিভাব, এমনিভাবরে প্রাণ, বলিতা শুন এখন।। \*।। লযেছ
জীবনমনঃ, তারচিন্তা অনুক্ষণ, সেইদে কারণ।। \*।। গৃহী
রে দেখিবেচোর, প্রসন্ন বদনেপ্রাণ। রবেকরি যেকেনন
।। ১।। কিয়া এজীবন মন, য়েগুণে করহরণ, পুনঃউদ্দীপন।। \*।। অর্থাৎ ইমদ হাস, প্রকাশে ধুণ শেরধুণ শে।
এভ্যহ্য স্জন।। ২।। অতএব বলিশুন, কিক্ষতি স্জনে
পুনঃ, তাহা কতক্ষণ।। \*।। জীবন মরণ বিষ, ঔষধি
তুমিতোপ্রাণ। হবে য়া তোমার মদঃ।। ৩।।

সমসুথ সিজুসখি, শুকালো এখন ॥ ধ্ৰু ১৮পিরিডি শলিকপ্রায, কৌতুক রসলাবন্য, দহেবিরহতপন ॥ \*॥ আহলাদ্খানন্দম্য, হাবভাব লীলাচ্য, জ্লচরগণ ।। ১ ৷৷
জীবন অভাবে দেখ, জীবন সংস্থারসই ৷ জীবন যার
জীবন ৷৷ ২ ৷৷ ইবে দুঃখ পদ্ধসার, অধিক কিকবআর,
দাহন কারণ ৷৷ \* ৷৷ গঞ্জনা বাড়বা নল, য়েছিল শলিলে
লুপ্ত ৷ প্রতিগন্ধ প্রতিকণ ৷৷ ৩ ৷৷ কারণ শীতলজল,
বিস্তারে নহে অনল, দাহিকাকখন ৷৷ \* ৷৷ সম্পৃতি সে
নীরনাশে, অনল প্রবলসই ৷ জ্লায দেহভুবন ৷৷ ৪ ৷৷
কেদৰূপ হালহল, অনুরাগেতে প্রবল, হেতুবিনাশন
৷৷ \* ৷৷ আশাৰূপ সুধাঅংশ,মনঃ কুন্তে আছেতাই ৷ গরলে নহে নরণ ৷৷ ৫ ৷৷

ক্পাগুণ সিন্ধু তব, উপমা রহিত ।। ধুণ ।। লবদেক্
সুরাসপি, দখিদুগ জলতায়, সপ্তসিন্ধু সংমিলিত ।। \*।।
লাবনা জলসমান, মিলন পয় বিধান, অমৃত জাখ্যান
।। \*।। তাহাতে বিকার ভাষে, দখিসম মানিপ্রাণণ মান
বেশে সেবিদিত ॥ >।। সেমানের অস্তহলে, বাখানীরে
স্ক্রোলে, সারলাভজ্যলে ।। \*।। মানান্ত সুরানাগরে,
তুবি অচেতন মনঃ। আরো জীবন মোহিত ॥ ২ ।। পরে
আলিজনদান, ইক্সাগর সমান, সুধাসমজ্ঞান ॥ \*।।
লেষেতে বিরহ্ভয়, শবন শলিলপ্রায়। জীবন তাপে
তাপিত।। ৩।।

প্রেম আরাসন্ধুস্থি,সমান গণন ।। ধুণ। একই লক্ষণে

क्रिंट, नक्षन बाक्रांख महे। मूथमूः त्थंत जाक्रम् ॥ अपूछत मागत भात ह्याचात भाताबात, भितिष्ठि उमन ॥ अ। जारत व्याची तथ्य, मागत भारत ज्रेश क्ष्म तथात भारत क्ष्मोत ज्या भारत क्ष्मोत ज्या भितिष्ठ भक्षात ज्या भितिष्ठ भक्षात व्या भितिष्ठ भ्रात ज्या विकास विका

তোমার পিরিতি শশি, একই লকণ ।। প্রশা শশধরে ধরেয়থা, কলক্ষতেমনিপ্রাণ, তবপ্রেমে দক্ষমনং।। শাশি পক্ষাপক্ষের্য, নিয়ত উদিত নয়, জানিবা তেমন ।। \* ।। তবপ্রেম প্রভাকর, মমন্তদ্য আকাশো। পক্ষাপক্ষ প্রতিক্ষণ ।। ১ ৷৷ শশিতে স্থারধার, তবপ্রেমে সেপ্রকার, হয়ত কথন ।। \* ৷৷ আলিঙ্গন স্থাপানে, জীবন ক্রকোর ভোর ৷ ক্রুল কৃষ্দ নয়ন ।। ২ ৷৷ দিজরাজে রাহুভ্য, পিরিতে বিরহু হয়, সন্তাপ কারণ ৷৷ \* ৷৷ তবপ্রেম কলা নিধি, বিরহু রাহুর ভয়ে, সদা মলীন বদন ৷৷ ৩ ৷৷

অপূর্বে নাধুরি প্রেন, সাগর মন্থন। বুলন তিদশ ৰূপ, কুজন দেবারি পক্ষে, হিভাব ভাব ঘটনতা। \* ।। মীলন চন্দুসমান, হৃদয রিঞ্জ বিধান, তাতে অনুক্ষণ।। \* ।। व्यशात कानक छेटेक, ध्रवा इय इयगहें, जेतावर माहिड मनः ॥१॥ नीनाभातिकारुमछ, हाव छाव व्यापित्रछ, शक्षाव (माछन ॥ \* ॥ जूथनाथ ध्रत्रखेंत्र, तनत्रक जूथा छाछ, कत्रय करक्षात्रमा २॥ उपर्छ छूतिभीनन, माना त्राष्ट्र विख्यन, (प्रवाजूत्रभा ॥ \* ॥ (भरविद्धत जूथारित्र, विर्ह्ह विख्यन, (प्रवाज्वत्रभा करत्रमाहन ॥ ७॥

निक्रभम क्रिक्न, क्रामाट घरेन। धुः ।। कीवन मक्षाद मव, प्रट्का निटल द थान, उज्ज मजन ।। क्रिं। अम्ब क्रिक्न एक्ष्म निवास ।। क्रिक्न क्र

বদন সাগর তব, অপূর্ত্ব সৃষ্ণন ।। বা, গঠন ।। ব্রুণ।।
নয়ন তরঙ্গরজ, কটাক্ষ হিল্লোলে প্রাণ, বা, অনিলেপ্রাণ,
হেরিতে শাহ্রমনঃ ।। \* ।। তাহেকিবা চনৎকার, অশিক্ষিতে পায়পার,দেখি অনুক্ষণ ।। \* ।। শিক্ষিত হইলেতার,
উপার কাহিক প্রান, বা, উপায় অপায় হায়। দৃষ্টিনাত্র
নিমক্ষন ।। ১ ।। ডুবিলে দুর্গতি তার, কহিব কত বিস্তার,

थाय विश्वन ॥ \* ॥ वाष्ट्रवानन थावन, क्रांसिट्य वन । जुनाय (पर जीवन-॥ वा, मनःजीवन ॥ २ ॥

त्थान निष्मुनिथ, धक हे लक्ष्म ।। धुः ।। धत्र न किं व कारत, रक्ष्म ।। स्वा निष्मुल न क्ष्म , र्वा निष्मुल क्ष्म , र्वा निष्मुल क्ष्म ।। क्ष्म न विष्मुल न विष्मुल क्ष्म ।। क्ष्म ।। क्ष्म वित्र च्या , रातन विष्मुल ।। क्ष्म ।। क्ष्म वित्र व्या वित्र व्या ।। क्ष्म वित्र व्या वित्र व्या वित्र व्या ।। क्ष्म वित्र व्या ।। क्ष्म वित्र व्या वित्र व्या वित्र व्या वित्र व्या वित्र व्या ।। क्ष्म वित्र व्या वित्र वित्र व्या वित्र वित्र वित्र व्या वित्र वित्

সত্থামে য়দিসুখে, কুরিবা গমন ॥ ধুন ॥ জীবাল্ল।
রথীয়রপ, শরীর করহ রথ, দার্থি বুদ্ধিআপন ॥ ॥। মনঃ
প্রগৃহ তাহাতে, রাখসার্থির হাতে, ক্যরোনা হেলন
॥ ॥ । নেত্র শ্রোক্র পাদপানি, আদিদশেন্দ্রীয় হয়। সুখে
করি সংয়োজন ॥ ১ ॥ শাদশার্শ রপজার, রসগদ্ধ চমং
কার, গমন কারণ ॥ ॥। জানিবা অপূর্বে পথ, অবিরত
করতার্য। তুরল রজে চালন ॥ ২॥ পথে বিল্ল অগনন,
কামকোধ জাদিগণ, রিপুর দমন ॥ ঋ॥ ত্মিকরিলে
সন্ধান, অরির নাহিক্তান, বাণবস্তু বিচারণ ॥ ৯॥

আৰু হর য়াইতবে, জনক , আলয় ॥ ধুং ॥ ছরাঅনু
মতিদেহ, বিলয় নাশয ॥ ৠ ॥ সিব্ধুতে ডুবেছে ভাই, মার
আর বে হলাই, হেরে জীবন মুড়াই, এইবাঞ্ছা হয় ॥ ১ ॥
সবে আমি কন্যা ঘরে, র্যেছি অতিঅন্তরে, মাব্যলেকে
শাস্তকরে, চিন্তাঅভিশয় ৸ ৠ ॥ তিনদিন জন্যাগিয়া,
সপ্তমাতে প্রবেশিয়া, পোছালে ন্রমাহ্ব, কৈলাশে
উদয়। ২ ॥

পীরিতের একিরীত, সকলিগো বিপরীত ॥ ধুং ॥ আপন ধনেতে চোর, বল একী অনুচিত ॥ \* ॥ য়েজন লঘেছেনন, চোরবটে সেইজন, তথাপিও অনুক্ষণ, সাধু বেলে সে বিদিত ॥ ১॥ আমিদিযে মনধন, চোরপ্রায় প্রতিক্ষণ, কিশ্যন কিম্বপন, ভাবিগোচোরের হিত॥ ২॥

পীরিতি পীয়ুষ প্রিষ, নিশালো বিরহ্বিষে ॥ ধুনা ছে রিষে তোমার ধ্যান, কুলমান গেলরীষে ॥ \* ॥ পীরিতের রীতপ্রাণ, জাষবটে কূলমান, তাহেবল অপমান, প্রেমি কৈর হ্য কিসে ॥ ১॥ কিন্তুয়দি প্রিয়লন, তুমিহে মম য়েমন, করিলেতো অয়তন,জাধ অল নিষে মিশে॥২॥

সত্যধানে য়দিমন, করিবে গমন।। ধু, ।। বৈরাগ্য তুরজেরজে, কর আরোহন।। ॥। মনোহর সেই হয, কিন্তু সদা হিরন্য, প্রবৃত্তি কশায় ক্যরো, নিম্ভ তাড়ন।। ১।। শুয়ত্বে রাখিতেতায়, চিল্লাকি আছেহেতায়, গ্লৈর্যক্ষন। রক্ষকেরে, কর সমর্পন ।। \*।। তবেপাবে উজ্পাস, ধর্মঅর্থ মোক্ষকাম, করন্থ কররেনাম,নিত্য নিরঞ্জন।।২।।

আমি বৃদ্ধারণা বাসি, নাম বিদ্যে আহিরিণী ।। धुँ०।।
পারত চিনিতে শ্যাম, সেই কৃষ্ণ কাঞ্চালিনী ।। \* ।। বুজ
ধাম পরিহরি, মধুপুরি আসিহরি,পেলেরানী রাজধানী,
রাজা রাজক শ জিনী ।। ১।। হ্যেছ নবভূপতি, করিছে
চরণে নতি, বিচার দেখিতে সঙ্গে, এসেছেন কমলিনী
।। \* ।। এইদাস খতলহ, রথাবিধান করহ, দেখদেখি
কারলেখা, চিনিয়ে ব্যলোনা চিনি ।। ২ ।।

ভাত্তমনঃ কেনভোলো, নাহি ভাবিষে।। ধুং ।। মা-যাবৈতরণী য়াবে, কেমনে তরিষে।। \*।। সেমনী অতি বিষম, সমোহ তরঙ্গতন, অথবা, মহামোহ তরঙ্গন, কাম কোধ জীনচরে, রযেছে ঘেরিয়ে। > ।। অংএব শুদ্ধাতরী, সাজাতরে য়ত্রকরি, ভক্তিক্ষম প্রতিতরে, য়তনে নইযে ।। জনা গুরুকর কর্ণধার, তোলমহামত্র ভার, কালী কালী কালী বলি, আদ্বাত হইযে। ২।।

কেবলে তোমার ছ.দ, হ্য রোমাবলী ।। ধুং ।। কারণ
নাভাবি করে, কার্ম্যের সন্ধানতায, অহিত ঘটে কেবলি
।। \* ।। হলকাপ হতাশন, করেমদন দাহন, সেই সে
কারণ।। \* ।। তবনাভি কৃপেকান, পতিতে উপ্থিত ধুম।
শালিল অনলে জ্লি ।। ১ ।। কিয়া কুচ শন্তুভ্য, অনঙ্গে
অসহাহ্য, হইতে নিভ্য । ।। নাভির বিবরেজ্যেতে, হ্র
কর ধ্তকেশ। রোমাবলী শুেণীবলি ।। ২ ।।

वितरह विति (एर्ट्, वृत्वा छेएय ।। धु॰ ।। (कवल निम्च नात्म, वत्रवा मञ्चव महे, मिकथा मञ्चवनय ।। \*।। धिकः এक वृत्वा छात्र, कित्वि क्षणां विष्ठात्व, ह्यकि नाह्य ।। \*।। विष्ट्रिम निविष्ट्यन, ह्यम्य गणां नाह्य छिए्छ इन निम्ठय।। >।। जारह माहर्यात छुन, ष्टि माने तिव क्षम हेर्थ कि म् भ्या। \*।। विया विष्या विद्या क्षम । क्षा विवा विवा विद्या क्षम क्षा विवा विद्या क्षम विद्या क्षम । क्षा विवा विद्या क्षम क्षम विवा विद्या क्षम विद्या क्षम । क्षा विवा विद्या क्षम विद्या क्षम । क्षा विवा विद्या क्षम । विद्य क्षम । विद्या विद्या विद्या विद्या । विद्या विद्या विद्या विद्या । विद्या विद्या विद्या विद्या ।

বসন্ত বরষা মন, ব্রিরহ্বাসরে ।। ব্রং ।। দেশ হাহার কারণ, করি লক্ষণ। বিচার, য়েন্ধপে নাপ সঞ্চয়ে ।। \*।। বিচেছদ দিবিভ্যন, পায্যা হৃদয় গগন, সুখেতে বিহরে ।। \*।। কোকিলের কুত্ত্বনি, বজুসম গণিতায়। শুনিজীবন শীহরে ।। ১।। মন্দমল্যামারুত, ঝঞ্ঝা অনিল অদুত কখন কিকরে ।। \*।। ভূমরা গুঞ্জরে য়েন, ভেকের নিনাদ প্রায় । প্রবেশে কর্ণ কুহরে ।। ২।। বাড়বাল্নি তাপস্থি বিরহ্ তাপ নির্থি, চেতন সংহ্রে ।। \*।। আঁথিধারা অবিরত, ধারাধ্র ধারামত। ব্রিষে কুচ শিখরে ।। ৩।।

অরণ শলিলে ভাষে, নাশুনি কখন ।। ধুণ ।। শ্রবণ সম্বর্ম হীন, তব অভিমানে প্রাণ, প্রত্যক্ষহলোএখন ।। \* । বুমপ্রিয়ে অভিপ্রায়, তরুণ অরুণপ্রায়, ভোমার ন্যন ।। \* ।। কোপবাড়বাগিতাপে, অধ্যনার উর্ম্বভাবে। আঁথি বারিকরিষণ ।। ১ ।। আকাশে য়াহার বাস, শলিলে ভার প্রকাশ, একি দুর্ঘটন ।। \* ।। হেরিয়ে এবিপরীত, কমল হুদ্য ম্ম, শুকালো তথিকারণ ।। ২ ।।

आयातः, वृत्व नियान किन्त, नागरत भागन ।। धुः ।। रमधरमि का निर्दाक्ष, व्य कि नाव्य नहे, क्रनंनिधि कार्या-कान ।। \* ।। विद्रक्ष नवश्वन, छ्ठाम वाष्ट्रवानन, भद्रन रमाइन ।। \* ।। मानिना वियाम मृःथ, क्रनक्ष मह महे । विद्राक्षिठ कानुक्त ।। > ।। क्रमभक्ष वङ्ठाय, ज्द्रक्ष श्वन काय, इयौ श्राञ्जित।। \*।। ध्यन देशायनाव, मिनन छरन-তে नहे। ब्रांधि कूरन चाकर्षन।। २।।

व्याशित विनित्तक हु, इय कि अमन ।। युः ।। প্রেম আশে তবপাশে, দুকৃল ভাষিয়ে প্রাণ, ঘটে (इन কুঘটন।। ॥।। য়ि বল য়ার প্রতি, মন্দাগতি হ্বনতি, কবকি কারণ।।॥।। উচিত তা নহেপ্রাণ, ম্বরূপে সেরপ্রকই। হবেজ্ঞান প্রযোজন।। ১।। অব্যর্থ সন্ধান য়ার, এইতো বিধানতার, না করে গোপন।। ॥। দেখহ অনোঘবজু, পতন প্রাক্কালে প্রাণ। নৌদামিনী দরশন।। ২।। আরোচিন্তাহ বন্ধান কালপূর্ণে হতপ্রাণ, করিতে শমন।। ॥।। ললিতগলিত দন্ত, অন্ত আগে হ্যপ্রাণ। ইহা কালের লক্ষণ।। ৩।।

ভীম পলাশীরাগিনী ৷৷ তাল মধ্যোন্ ৷৷

হেঃ নাধব, মুনারে 11 ধুং বা বুজধন বিপিন বিহারে 11 নোগিনী মনরস্থান, কৃতির সচাক ঘণ মুনিগণ মোহনবন হারে ।। ২ ।। কটি চট বিরাজিত, তড়িত জড়িতপীত, অম্বর মধ্র মন্দ, হাস গিরিধারে ।। \* ।। মদন মানমর্দ্রন, স্বোদা হুদি নন্দন, তারভ্য জলনিধি পারে ।। ২ !।

ट्रिः सभू यक्त नि । द्रा । सामन् कन्नय जनाक्त ।। ।। निवंद वंद देन, शिशोगन क्रिएम, गणनह्य यक्त ।। ।। कालीय नागगनुन, क्रिलनयरमाहन, द्र-

শিনি কৃন্তন, নিকুঞ্জ তট্ট খঞ্জন ॥ \* ৷৷ কুরু কর পানিধান, ভল্পনহানেবিধান, দেহিচরণার বিন্দু শরণ ॥ ২ ৷

# ॥ आषात ठिकू।॥

क्तन जूरम जूरमजूनमन, किछ हिछन ॥ कथना, किन किन किछ हिछन, जूरम जूनमन ॥ शु. । मूनानाथा कान्नीयिय, मूरनर्ज्ज निन्न न ॥ ॥ कनरम स्मोनन भर्म, कारन जा कानिया थर्म, ज्थन श्रमामगर्म, मर्मा इस्त हेकन ॥ > ॥ स्मा स्मान्य समान्य स्मान्य समान्य समान

তুমিয়ে বাদহে ভাল, ব্যলে হবে না জানাতে ।। ধু, ।। জেনেছি ভাবেতে ভাব, পার কি আর ল্কাতে ।। \* ।। ন-কলি বুরিতে পারি, বুরিয়ে বুরিতে নারি, চোরেতে কর্যে চুরি, সাধুকি পারে মানাতে ।। ১।। ইবেয়ে বাড়। বেমান, সেমানা করিনে প্রাণ, কেদিলে মন্ত্রন, নালাকেটে জল্ আনাতে ।। ২।।

সকলি বৃঝিতে পার, . উচিত .কেন করন। ।। ধু ে।। ব্ঝিলে 'কিছবে বুঝি, কপাল গুণে বুঝনা ।। \*।। কর্মা সূত্রগতয়াহা, খণ্ডিতেকে পারে তাহা, বিরত বিরতে কেবা, ভাবি প্রসব বেদ্না।! ১।। নধার নিখিল বিশ্ব, সকলি আকাশ ।। ধুং ।। নিশা শে বিশ্বীস নহে, অধিক প্রশাশ ।। গ্রং ।। অহন্য হনি ভূতা নি, সমন ভবন জানি, কিছল কোথায় গেল, ভেবোন। হতাশ ।। ১।। অপিবারে অভিজ্ঞান, তে, গ্রিবাস পরিধা ন, সর্কানাশি দিনম্বা, কপের প্রকাশ ।। ।। আভাষে বুমহুলন, দিনেশ শেষঃ কেশ্ব, ক্রনেতে আকাশ শ্ব, অন্যেকিবা আশা। ২।।

মনের বাসনায়ত, য়দিকছিবারে চাই ।। ধুং ।।
হাদ্য বিদাণ্ছ্য, প্রকাশি নাবলিতাই । \* ।। নুখেবল
ভালবাসি, অনুরে গরল রাশি, নতুবা দেখিতে আসি,
দেখাকেন নাছিগ,ই ॥ ১ ।।

ন্থেবলি পাশ্রিব, মনেভানি তাকিছ্বে ॥ ধুনা মারলাগি অনুরাগি, সেকেন মাতনাসবে ॥ \* ॥ লাভ নাত্রথইছবে, নম দোষ সবে কবে, জগতে অণ্যাতিরবে, পারীতি ঘাতিনী রবে ॥ > ॥ মেন্থ ছেরিলে স্থি, মারে না দেখিলে দৃঃখি, তাছারে করি অসুখি, কিসুখে জীবন রবে ॥ \* ॥ মদিনামা তোঁযাগিয়ে, প্রেন রোধিনী ছইযে, অন্তরে থাকিতেজিযে, অন্তর প্রফুল্ল কবে ॥ ২ ॥

কেন ভোল মনেকর, আছে দিন ভযকর।। ধ ।। নিখানে বিশ্বাসনহে, কি আখালে এনিভঁর।। \* ॥ গুলিরু- গতেবর্যাহবে, ঘ্রেখ্টি দেওপবে, কাল্ বিধার্থ কবে, সারভগুদেহ ঘর ৷৷ ৯ ৷৷ সুখেরবে এ প্রযাশ, আগুলে মর পৌষ্মাস, কিন্তু স্বীয় সম্প্রাশ, চিন্তনে নহ তত্পর ৷৷ \* ৷৷ ব্রক্বে পরাপর, স্বেক্বে ধ্রধ্র, তুমিহ্বে নিরুত্তর, ভেবে উত্তর উত্তর ৷৷ ২ ৷৷

#### ------

### ज्ञानी तागिनी ॥ जनप्रज्ञाना ॥

ठाँद्र ज्लिज्न मनः, रेरक्रायं अनुक्रन, ज्राकि एक् ज्रुमन, कत्रवनिवात ।। शु. १।। क्रांक क्ष्मक्षम्य, क्रांन इयक्रत्निय, किक्षिः नाहिनिक्ष्य, मायात निकात ।। १।। एक्थ मृत्रमः व्यातः व्यावत् ।। त्रिक्ष मृद्धनवदत वाधिताय। कात ।। ॥। मृद्धनव कात्रप्रस्, क्षानवाय् भिक्त त्राह्म, क्षनिष्ठ हिन्छात्कर्, ज्रुम। कि जात ।। २।। व्यक् ध्व व्यर्भान, पश्चाम। व्यक्तिन, ज्रुक्ति ।। ॥। व्यक्तियान, व्यक्ति। ॥। ॥। व्यक्ति। व्यक्ति। ॥। व्यक्ति। व्यक्ति। ॥। व्यक्ति। व्यक्ति। व्यक्ति। ॥। व्यक्ति। व्यक्ति। ॥। व्यक्ति। व्य

কেনভুনে ভ্লমনঃ, অপেন কার্যকারণ, য়িনিনিতা নিরঞ্জন, সভ্যমনতেন । ধু: ॥ বুঝভাব চনত্কার, আদি সন্ত নাতিতার, স্ফিস্তি লথ সাঁর, নিযমে ঘটন ।! > ।। অন্তরাত্মা অগোচর, স্ফ্রান্সিল প্রাংপর: নিতা অনাদি অক্তর, মহিনা কেমন ।। \* ।। প্রবুদ্ধা অবিনাশ, স্ক্রিম অপ্রকাশ, কিতি আদি মহাকাশ, বিকাশ কারণ ।। ২।। য়াঁহার নিযমেভর, করিবছে নিরস্তর, রবিভানু
চরাচর, পবন জীবন ।। \* ৸ তাঁরি আদেশানুসারে,
অখিন বিশ্ব নৎসারে, উদরগত আহারে, তৃপ্তপ্রাণি গণ
।। ৩।। নহারণ্যে তরুগণ, য়ারভাবে অনুক্ষণ, ফুলেকলে
সুশোভন, ভারে প্রতিক্ষণ ।। \*।। ভূলিযে অজ্ঞানেমন্ত্র,
সাথেকর ব্থাতভু, সদাসাধ তন্ততন্ত্ব, জীবের জীবন ।।৪।।

ভাবিরে ভাবনা, কেনমুন ।। গ্রুপ ।। কিবলে আইলে সেথা, কিকর এখন ।। \*!। কংকাল উরসি বানা, কংকা লিকে গুণধানা, মহামায়া রুপে বামা, জগৎ কারণ ।। >।। ত্রিলগং মাহাকাশ, মার মাহ্মাপ্রকাশ, ক্ষিতিঅপ তেজ আদি, আকাশ পরন ॥ \* ।। মিছাকালে মত্ত্যে, ধন উপার্জনে রযে, ধর্পর করেতে লযে, হারালে রতন ।।৩।।

ভৈরব রাগেন।। আড়া তেতালা তালেন গীয়তে।।

রামিনী প্রভাতামন, সাধ ভৈরবালাপন ! ধুন ।।
ভক্তিআলাপিনী য়ন্ত্র, সপ্তস্বর তত্ত্তায়, করি সুখে সংশী
লন। \* ।। ঐকান্ত পিনাক শ্রন্ধান্দক নইয়ে, বৈরাগ্য
মুরলি ধৈর্য্যন বাজাইয়ে, নাম সংখ্যা করতালে তাল
দিয়েলয়, ভাষ্, রেচফ কর অর্পন ।। ১ ।। অপান উদান
ব্যান স্থান ওপান, সন্ধিত শ্রুবণ পক্ষে শ্যোতার বিধান,
তবেতোঁ অন্তর রিপু অন্তর হইলে, ভাষ্, ঘটিবেজ। নির
জন ।। ২ ।। এমতে ক্ষৈতে দিবায়ত অবসান, পাইবে

পরম খ্রী নিগ্র সকান,পারেতে হইলে বৈবস্বত গৈছগত, নমঃ, কালেকথাণ ঘটন ৪ ৩ ।।

स्क्रम कामात कर्ण, मांकरत व्यवणाकमा। धुरा।
त्यक्रम कामाय, मृत्रामरण ठीर्थन छान। गुर्थ ठाइ।
कीरमा। ऋ।। उरम्ह ठीर्थमय विन्छम छान, मृथहमू
कम्जानमंत्र ममाम, मृहाय छान व्याप कार्ता कर्णम्
कर्निकात, कृत श्रूकत भनम। ३१। जिल्ली जिल्ली निम्मी
मृद्यमी गठम निरम्ध निम्मियांत्रण वर्त्तम वर्तन, सात्रमा
मात्रमामम, कृत श्रूषा छान छान, श्रूषा हिन्दी मीलम। २॥
मूर्व गुरुवर्त्तथा मुर्व्यविनी, मृत्रुव्तिक्रिमी हावमूक्र व्याप म्याप। २॥
प्राप्त वर्षा मुर्व्यविनी, मृत्रुव्तिक्रिमी हावमूक्र व्याक्रिमी,
प्राप्त वर्षा मुर्व्यविनी, मृत्रुव्तिक्रिमी हावमूक्ष वर्षाक्रिमी,
प्राप्त वर्षा मुर्व्यविनी, क्ष्युव्य मुक्सिमी। २॥

### मध्यान्।।

क्नक्न सन्दि, नीनांक्त । १४० । यदि हाँ प्रमुख पिथि।
कू कृ इत । \* ।। जारगात कि नीनांक्व, एइतिवानीनमाध्य
नक्न कनम उद, अहे महीमख्दा। ।। नाक्षाहेय। प्रदउती, अक्षादित का खातीकित, कि लिशानि जूनि प्रमुखेकांख
माकि कित्रिय, वाहियान उ वाङ्गा वायुवता ।। २ ।। शाहेर्य
अनाम का ज, माकाय वृनाया हा ज, मूर्थ क्त क्याना ज,
क्र क्रिक्त ।। \* ।। मि व्यत्म मुथनाम्य, श्रीखिमाज मुक्ति
हयं।। मम छेशप्त मानि, क्विमक् विमूकानि, नांकात
(थनर्भ निक्कित ।। ७१।।

त्रक्रनी প্রভাত হিলে, সরোজিনী সুখেভাষে ॥ ধু॰ ॥ তবেকেন সমন্ধদি,সরোজেরস্থনাশে ॥ ॥ অনুমানেজ্ঞান হয়, সমক্ষল হৃদ্য, প্রিয়চন্দ্রানবিনে, অন্যনাহি ভাল- বাসে 11 > 11 এই অপরীয় স্থি, পদ্ধ শশিনিরখি, সুথি হ্য অতিশ্য, মনরত অভিলাশে 11 \* 11 শুন তাহার কারণ, চাঁদের গুণ কেমন, দিযেবাঞ্চামত ধন, বেঁধেছে অলক্ষ্য পাশে 11 ২ 11

তিল্লাধ, থেকেজাও ।। ধুং।।এলধিনীর মাথাথাও ।। \*।। তব অবসানে র্ধু রবেনা, কিদুঃথে জলাও ।। ১।। নযন ভরিষে নাথে দেখিব, বারেক দেখাও ।। ২। য়ামি-নী সতিনী কেন্ প্রাণেরে, লইষে প্রাণ্ড।। ৩ ।।

তেরবীরাগিনী। মধ্যানের ঠেকু।।।
পিরীতি সুখেররেপ্রাণ, কেমনে হয়।। দুং।। প্রেম
রসে অবশেষে, অপয়শ দেশম্য।। \*।। দেখ ভার নিদশ্ন, শশিতে শশ অর্পণ, হ্য প্রণ্য কারণ, একথা জনাথা ন্য।। ১ !। আর বুঝ বিচারিষে, কে সুথি প্রেম করি-

यः, जिल आध ना रहित्यः, जाद्न विमीर्ग हम्य ॥ २ ॥ असि हये महन्न, चर्त भरति शक्षान, नियंज करते माइन, मुकूल जारव निम्हय ॥ ७ ॥ अस्माखितः ॥ •

लिती दि कन्छ (तथान, रन कि क्या। धूर्।। स्नाकारन थ्यन तम, जिति ज्ञिम इया। ॥। त्रां चि लिती जि
तरन, कन्छ नाहिक इरन, लिता जि विष्कृष्ट उरन,
नाञ्चना क्रिज स्या। २॥ कात्रन थ्या मी लिन, थ्रकाम नर्ह क्थन, উভ্যে क्रिं। त्रजन, ভাবে ज्ञिस्त त्यन ।। २॥ जारह नित्र इंग्रिल, मांकि निक्कू उथिन तन, नयन नथ्य नित्न, थ्रकाम क्रित निक्य। ७॥

सत्तत सानम्जाति, कार्य कि इय ॥ धु॰ ॥ सात्रमन कानूकन, कान्यत्न वाँधात्रय ॥ ॥ ग्रं छत्न कान्यित्रमन, मैलिवाहि निक्रमन, इत्न कि जात र्ज्यमन, घटि कीन्य मन्य ॥ ३॥ राष्ट्रकात्म कालन पूःथ, त्महाय लेदत मूथ, कान्य ॥ ३॥ देहानिना । लात्रम्हाथ, मृथिहन सीयमूरथ, राष्ट्रां जाहात मृर्थ, मृकून छार्य निम्हय ॥ ३॥

তরুণ অরুণ রেপ্রাণ, ছেরিনযনে।। ধুন ।। গন্তাপ লাগিলসম, ছদিক্মুদ কাননে।! \* ।। তব সুধাণ শ্বদন, চকোর আমার মন, ত্বিত সুধাকারণ, থাকেসুধা আরু খনে।। ১ ! হেরে ইরণ উনয, চন্দু চকোর সংশয, তবেকি কারণে নয়, সেষ্টনা অকিঞ্চনে।। ২ ।। রবিশশি বর্তুমান, 'সমসূত্রে বিদ্যমান, দেখে ভবে হতজ্ঞান, ভাকেবা শশিগ্রহণে।। ৩ ।।

পিরীতিকিরীতি রেপ্রাণ্, নারি বুঝিতে ।। ধুন ।। সুখ
আন্মে হলোশেষে, দুঃখ সাগরে ভাষিতে ।। #।। আমার
স্কেন্সত, সকলি বা হ্য হত, দুজনেহলে দ্বিমত, বঞ্চিত
ভাবে বঞ্চিতে ।। ১ ।। কিভাব তব আমরি, আগেতে
ভীবন হরি,পরেতে চাতুরী করি,হ্যকিনারি দহিতে ।।২।।
ভানিলে এ মন আগে, সঁপিকিহে প্রেমরাগে, এখন মন
বিরাগে, নাপারি তোরেত্যাজিতে ।। ৩।।

मत्तत वामना त महे, मत्न बहिन ॥ धु॰ ॥ अक्ट्र व्याचाछितिथि, वनिक वाद्म मधिन ॥ ॥ मत्निहिन दिखा ख्लाम, इत्नाजात शित्राम, मूथमाध्य मूःथिनी दि, पूःथनी दि छायाहेन ॥ ऽ॥ छात्रिन आमात वामा, घूछिन आमात खामा, शृतिन ना मनः स्मामा, दिश्व ममाचिन ॥ २॥ धिक् ब शित्री छ महे, मनःपूःथ कार्त्रक हे, दिखन ना करत-मत्न, मनःदम्धात्म मिन्न ॥ ७॥ ध

- কিফল বলিষে তোরে, মনবেদনা ।। খু॰ শ পরেকি জানিতে পারে,কভু পরের য়াতনা।। \*।। তাহেনাহি দো- ষ্তব, ন্সক্র সূত্রেসব, বাঞ্চাদ্দা সুথেরব, বল্কার সুত কামনা ।। ১ ।। দেখপশি হুতাশন, হরভালে অনুক্ষণ, নিবাসে হ্য দাহন, কিকর্মের বিজ্যুনা।। ২ ।। আরবা কতবলিব, নাতাশিবা পিতাশিব, তবুগজানর সূত, এয়ে বিধির ছলন। ।। ৩ ।। অস্যোত্র ২ ।।

কেমনে বলিলে রেপ্রাণ্, পুনঃব্যলনা ।। ধুন ।। কি হরে
আমারে ক্যযে, তোমার মনয়ত্রণা ।। # ।। তুনিআনি এপ্র
ভেদ, একিকথা ছাড়াবেদ, নাহিমাত্র ভেদাভেদ, অভেদ
ভেবে দেখন। ।। ১ ।। নিহারাগে করদ্ধন, য়থাকুশুনের
গন্ধ, সনক্রপ ভিন্নগুণ, তেনতি প্রেমজাননা ।। ২ ।।
অর্থাত্ তুমিআমাতে, আনিওমাছি তোমাতে, য়থাগন্ধ
লীনবাতে, পৃথক অসন্তাবনা ।। ৩ ।।

তোনার করণা রেপ্রাণ্, নহেকখন ।৷ ধুন ৷৷ আপন কপাল গুণে, ছিল সুখের কারণ ৷৷ \* ৷৷ আরুণে নলিনী মন, ছেরে প্রফুল্ল য়েমন, কালেসুকালে জীবন, কনল দছে তপন ৷৷ ১ ৷৷ তেমতি তোমার ম্থা, ছেরেমন বাঢেলুখ, ভুমিকালে দিযেদুংখ, দুঃখে জুলালে জীবন ৷৷ ২ ৷৷

কহিতে তোঁমারে রেপ্রাণ্, মনেরি দুঃখ।। এই ।। দিশুণ আগত্তন বাতে, হেরিতে ওটাদমুখ।। \*।। আমি क्षांनि প्रानधन, जूभिक्षिणि कोवन, श्रमन क्रिय क्र क्रिय क्र

আগেতে নাঞ্চানিরে সই, এমন হয় !। ধ্রুণ ।। য়েমন
নয়ন বাছ্যে, অন্তরে তেমনি রয় ।। ঋ।। ঋন তাহার
কারণ, নাহেরিতে য়েবদন, করিমুদ্রিত নয়ন, মননেত্রে
সেউদ্য !। > |। সদত অন্তরে থাকি, প্রাণব্যলে নাহি
ভাকি, তথাপি মনেরেলযে, অন্তর্মস্করেরয়া। অথবা,
ব্যাপিত অন্তর ময়।। ২ ।।

মানেরে করিলেরে প্রাণ্, এঅপনান। ধ্রং ।। তথা পি নহিতদুঃথি,সুখিহেরে ওব্যান।। \* । তবসহ এপ্রণ্য জগতে ব্যাপক হ্য, তাহেহলে অনিশ্চ্য, হৃদ্য তাপে সন্ধান ।। ১।। হকু আমি কেহনই, তোমারি ভাবেতে কই, রাখিতে হইবে কিনা, পিরিতে প্রেম সন্মান।। ২।।

এতয়ে পিরীতে রেপ্রাণ, করচাতুরি । ধু, ।। তথাপি তববিহনে, মনেরে নইয়ে ঝুরি ।। \*।। একি অসম্ভব কথা, হ্যষভাব অরাথা, চাহিপ্রাণ দিতেতারে, য়েক্র-রেছে মনচুরি ।। > ।। ফলে এজীবন দান, দিতেকি বিলয় প্রাণ, নইলেও নীতে পার, টানিলে প্রেমের জুরি।। ২ ।। এত রে রাতনা রেপ্রাণ্, দেহ আমারে। । খুন ।। তথাপি জীবন দুখি, তব সুখের সঞ্চারে।। \*। রিদিও জীবনক্ষয়, হলেরায় রোগভয়, ভাবিষেকে মৃত হয়, মুক্তহতে রোগ-ভারে।। ১।। তেমতি তব য়ন্ত্রণা, ত্যজিলে প্রেমকামনা, অবশ্য থাকেনা জানি, জেনেকি হইতে পারে।। ২।। তুমি মম সুখস্থান, সুখের আথেয় প্রাণ, দহদুঃখে সুখ-জান, নিয়ত করি তাহারে।। ৩।।

মনঃ বেদনা, অপরে. কিজানিবে । গু॰ ৷৷ রজন)
মনঃ নিবাসি, সে য়িদ না বুঝিবে ॥ ঋ !৷ মনঃ বিনে
মনঃদুঃখ, অন্যে জানিতে বৈনুখ, কেবুঝিতে দুঃখনুধ,
অন্তর্জানী হইবে ৷৷ ১ ৷৷ পারে কি করিতে পরে, শুনেছ
তো পরস্পারে, আগুণ আপন ঘরে, দিলে কে নিবারিবে !! ২ ৷৷

এতয়ে য়য়ঀা রেপ্রাণ, তবু-তোমারে।। ধু- il হেরে
জুড়ায জীবন, কিজানি হলো আমারে।। \*।! য়তকর
অপমান, তিলার্দ্ধ ভাবিনে প্রাণ, হেরিলে বিধুব্যান, কি'
সুথ কহিব কারে !। )।। বুঝেছি কারণ তার, প্রাণথন
য়েয়াহার, মান অপ্যান তার, ভিম কিহইতে পারে
অনাদর কিবামান, উভ্যস্মান জ্ঞান, য়িধাউফ বারিদান,
য়েন অন্ল সংহারে।। ৩।।

কিহবে তোমার রেপ্রাণ্,প্রেম য়তনে !৷ ধু; ৷৷ য়েনা জানে প্রেমন্তন, সেকিথাকে সেবজনে ৷৷ \* !৷ দেখ তার নিদর্শন, নীরসসাখা য়েমন, সরস নছে কখন, শৃতসহসু সিঞ্চনে ৷৷ ১ ৷!

क्मरन तथित स महे, मान जार्शन ॥ दुर ॥ मरनइय नाट्डित, इति हित हित्र मन ॥ \* ॥ जातिज्यू मोदन तत, जात कथा नाहिक्त, घटो जात जमछन, जार्शकित
मछायग ॥ ১ ॥ अम्रिशिख महहित, मरनद शायाग कित,
शतरम किन निहति, अकि मना जनका। २ ॥ अहेट्डा
मार्गित जात, किकाल मुक्न शान, मानत्त शुग्नित्त,
मूर्थत्त श्रिकन ॥ ७॥

वाजित बाबात बाला, बत्किति ॥ धु॰ ॥
भानमञ्ज्ञात बाला, वंल बावित ॥ ॥
मूर्थतकात मुख्न न्हिल्ल बार्ट्स का किता मुख्न का किता मुख्य का किता मुख्य का किता मुख्न का किता मुख्य किता मुख्य का किता मुळ्य किता मुळ्य

হৃদ্ধেনিয়ত তোরে, সাধরাখিতে ।। ধু: ।। কখন নাহ্য রেন, অন্যের মুখদেখিতে।। \* ।। উভয়ে উভয গুণে, বাঁধাসদা সমগুণে, তাহার বিষম গুনে, পরে ন্ পারে দুবিতে ৷৷ ১ ৷৷ দেখ এক ভাবে থাকে, চক্রবাকি চক্রবাকে, নিশির মিলন পাকে, ব্যক্তদ্বিভাব পিরীতে ৷৷ ২ !৷ অতএব প্রাণপতি, বিধান করসম্পৃতি, হওছদি মুঞ্চ পতি, নাহবে তাপে ছুলিতে।। ৩।।

कारत कहिन, ह्य पूर्ध पूर्ध खान।। धुन ।। खबरम কতনা মান, অবশেষে অপনান ৷৷ 🗱 ৷৷ বৃথাযে করি য়তন, বৃথা মম আকিঞ্ন, বৃথা মনঃসমর্পণ, তার মনে মনে আন 11 ১11 ভাবেতে বুঝেছি সই,ব্ঝিপাগলিনীহই, বুঝিলে কি **হবে নই, আপনারে সাবধান।। ২।।** 

চিত্রকাব্য । ১ শামহেমনেরি '৬ সাধেন্ডালবাসিবে।। ধ্রুং ॥

नाम ।। २ मानम मन्मन १ ६ मान, मना युख्य द्वाधित ॥ অঙ্কানু ॥ ৩ সুখের বিধান ৪ য়ত,

जातत ।। १ क्यानाथ इतनं इछ,

দ্ৰপ্তক ।৷ ৮ গৱলে ছইৰ নত,

- \* ।। ১ নহে জ্বালা কে সহিবে ।। ১ ।।
   \* ।। ১০ না দেখি সুথ সন্ধান,
- \* \* ॥ >> थत इत करण्या थान,
- \* \* ॥ १२ श्रन्य श्रन क जान,
- \* \* 11 >७ नाथवृति ना भूति (व !। र !।
- \* ॥ 38 म्ब्रम्न मञ्जायन,
- # 11 ১৫ वंतर जञ्चरव कथन,
- # 11 ১৬ সুমিলনসুঘটন,কি জানি কবেঘটিবে 11, ০! 1,

অন্তর য়াতনারে সই,কিসে নিবারি ।। ধুণ ।। উপায বলহতার, অকুলে কুল হিচারি ।। \* ।। নাছিচাছি প্রকা-শিতে, চাহি গোপনে রাখিতে, মনাগুণ প্রজুলিতে,সমুবে নযনবারি !। > ।। প্রকাশিতে কিয়ন্ত্রণা, দহন হ্য রসনা, অধিক লোকগঞ্জনা, লাঞ্ছনা সহিতেনারি ।। ২ ।।

পীরীতি কিরীতি রে প্রাণ্, নারি ব্ঝিলে ॥ ধুণ।। মেথাকে অভরে তায়, অন্তর চাছে দেশিতে ॥ क ॥ তব শুণাঙ্গ য়ত, বর্ণিতে বর্ণনাছত, আনিভাবি অবিরত, তোরে নাদেখি ভাবিতে ॥ ১॥ অনুসালে বুঝিভাব, এ নহে প্রেনের ভাব, নেই আর এই আলা, ছিছি কি লজ্জা কহিতে॥ ২॥ তুনি রথা ষেচ্ছাচারি, আনি নিতান্ত তো নারি, মনাগুণ্মনেনিবারি, য়েনভয়ু আচ্ছাদিতে ॥ ৩॥

রাগেতে বিরাগরে প্রাণ্, আর ক্যরোনা।। প্র, ।। বারে বারে ছলনাম, নিজঅধিনে ছালোনা।। ॥। কিভাব ভাবিলে প্রাণ, শুনেহলে। হতজান, অন্তরে রেখেঅন্তরে, রন্ত্রণা হেন ব্যলোনা।। ১।। সতের প্রণম ভাব, অন্তরে নহেজভাব, রার্থে গুণস্বভাব,কভূ অভাব ভেবোনা।। ২।। রথা আংগ্রম পাষাণ, অর্থাৎ চক্নকি জান, শলিলে ভূবিলে প্রাণ, অনলা ভাব বুঝোনা।। ৩।!

ष्यक्ष्टल छ|किल्ल য়ে প্রাণ্, তব বদন॥ धु॰ ॥ উচিত

বিনির কিবিধি রে প্রাণ, নারি বুঝিতে ।। ধ্রু ।।
ফালিনুখে নিগতি, জানিবিদীর্গ কৃছিতে ।। ২ ।। গোবিদের
গোগবাদ, ম্গাঙ্কে মলিন টাদ, তৃমিরমণী ঘাতক,
নাছি এদুঃখ রাখিতে ।। ১ ।। নলিনী ললিত নালে,
ব্যাপিত কণ্টক জালে, জীবনে সমন শঙ্কা, বিচ্ছেদ ভষ
গিরাতে ।। ২ ।। চন্দন মল্যাগত, ভুজ্স চন্দ্রে রত,
বিশ্বপ্রাণ অভিক্ষত, সর্বভুক্ত বৃদ্ধিতে ।। ৩ ।।

মুবতী দহিতে রে প্রাণ্, হয় নদন ।। ধ্রু ।। কেবলে এননকথা, থেন স্থপন বচন ।। \*।। মুবতীর আজ্ঞাপাত্র, আল্ল আদেশ নাত্র, নাদহে কাহার গাত্র, হতেকটাক্ষ্য ক্ষণ।। ১।।

পিরীতি গুণেতেয়ে প্রাণ্, বন্ধন হয় । ধুন ।। এদেছ ধারণে তার, মোচন কখন নয় ।। ঋ।। অন্যান্য বিপদয়ত, সংসারে বিবিধনত, অফশ্য উপায়ে হত, নিয়ত জানি নিশ্চয ।। ১।। দেখহ • তার প্রমাণ, অলিবলী বিদ্যমান, দারুভেদ করেজান, কর্মলে মুদিত রয়।। ২।। তেমতি রে প্রিয়ন্ত্রন, সাবত ওচন্দুনেন, হেরেছি মোহিত মন, ভূলিতে প্রাণ সংশ্য ।। ৩।।

#### । জলদতেতালা ॥

য়েজন আপন নহে, ধিক্ষন তারেচায়।। ধুন ।।
কোবে অভাবে তার, ভাবে মুমপ্রাণ রায়।। \* ।। প্রেম
ক্যরে একিদায়,দেখিতেনাপাই তায়,বিরহে বিদরে কায়,
এ মুদ্রণা কব কায়।। ১ ।। বুঝি দখি অভিপ্রায়, এরীতে
পিরাতি মায়, নহে কেন দে আনায়, য়ত্নে রাথে মন্ত্রগায়। ২ ।।

আদরে আদরে আর, আদর নাহিক হয়।। ধুং ।। হতোদে রখন হতো, গিষেছে তার সময়। \* ।। এখন আদর য়ত, আকাশ বঁলন নত, কেনছে জুলাবে কত, ভাত্সহে বাত্নাহিস্য।। ১।।

কেনআর জুলা ওমিছে, ঘুচেগেছে মনঃধাধা।। ধুং।। ছিলকেশৈ কেশবেশ, ছেড়াচুলে থেঁপোলাধা।। \*।। ভূমিমাত্র থাকসুখে, আমিমরি মনঃদুঃখে, জলের বিষমে য়েন, হবেতব বাদসাধা।। >।। व्यार्शक्किहिएकम श्रान, जूमिककान विश्रोम । दुरु ।। क्यांनित्सम नश्मम, जम श्रम्य क्रिन ।। क्षाः प्रथमित्रम्बं जात, क्षीरन व्यक्तिम्यात, (श्राह्म क्रांतिक क्रांतिक प्रान, भीतन श्राम (श्रामन ।। )।।

श्रीनथरनद्र नाट्ड्स, वृत्यिश्रीनश्रीय।। थुः ।। विदनश्रियक्रन मिश्न, कितिक छेलाय।। ३ ।। ठात्र थिक दोषनाथा।
नामानित्य कृत्र तथा, वाश्रीयमनः पित्य विश्वास, मित्र मित्र विश्वास, मित्र मित्र विश्वास, मित्र मित्र

नयत्न जूनाटा शांति, मत्निनांतिए नांति।। धुः । व्यापन देवज्व इत्ना, श्राज्य वालनांति।। ऋ । नयन श्राप्त वाति, व्यक्ष्म कर्णानवांति, ज्ञांति व्यक्षतानन, वनकिज्ञ निनांति।। ।। ठाइ। छर्णका श्रांतिन, निनांव यत्नकित्र ता, विद्यं व्यक्षिक्ष व्यक्षित्र विद्यं व्यक्षित्र ।। २।।

মরিএকি অপক্প, হেরি স্থা ও বদন । খুণ।।
দশন ম্গাক্ষ অক্ষ, কেন ক্যরেছ ধারণ।। \*।; হের দর্পণে
ৰযান, এ আঁথি কুম্দিল্লান, ব্যাকুল কমল প্রাণ,
কহ ইহার কারণ।। ১ ।। তবমুখ স্থাকর, কোন

চকোর প্রবর, বুঝি সুধাপাণ করি, করিষাছে পলা-যনা।২ ৷৷ সাৎ রীৎ

# ।। হরিতাল অথবা তেওট্।।

অঁথির মিলনে নখি, বলদেখি একিরক্ষা ধ্রু ৷ ৷
অলনে অবস হলে, তব্নহৈ অসসকা৷ ২ ৷৷ বিধুমুখ তর
তর, হদিপাল থার থার, শাননীর ঝাঝার, স্থিরন্যন কুরক ৷৷ ৷৷
ভাব ভরে গর গর, প্রেরজ্বে জ্রজ্ব, আরশরে দরদর,
নৃত্যতি ভুজ ভুজক ৷৷ ২ ৷৷ গদগদ প্রেমভরে, ডগমগ
রস্তরে, মুখেষর নানিঃ দ্বরে, প্রায়পিঞ্কর বিহুক্ষ ৷৷ ৩ ৷৷

শুধুই হেরিতেরে প্রাণ্, এখন মনংবাসনা।। ধুং।।
আলাপন সন্তাযণ, ভাবিনে আরু সেভাবনা।। \*।। কারণ
পূর্কের মন, ইবে দরিদ্রের ধন, হারালে পুনঃ মীলন,
সে অতি অসম্ভাবনা।। ১ ।। অর্থাৎ পূর্কে আলাপন
প্রার্থনা করাএখন, সেয়েদুর্ঘট ঘটন, কেমনে ঘটে ব্লনা
।। ২ ।। বাঞ্গানাত্র দেখাপাই, অন্যকিছু নাহিচাই, নির্ধনের সীসেসোণা, জেনেকি তাহাজাননা।! ৩ ।।

কপাল গুণেতে প্রেম, হবেনা স্থিহবেনা।। ধূপ।। ভাবেতেবুঝেটি ভাব, রবেনা স্থিরবেনা।। #।। মজেছি বিষমলোতে, পড়েছি বিপ্ল কোভে, জ্লেছি আরন। শোভে, সবেনা স্থিসবেনা।। ১।। ছব্য তারপাযাণ, বিধির কিবাবিধান, কথাতে বাঁচাতে প্রাণ, কবেনা স্থি কবেনা ॥ ২।।

क्रित्वन वन खनिश्रान, बाजू ह्न बिमान ॥ धु०॥ ख्रा॰ ख मनीन किंचु, हेन्नोवत क्षूत्रमान ॥ ॥ मिन्नविष्य विक्रिंग, वित्नभाष ममूनिंग, हेन्नीवत श्रमिंग, निर्माण ममूनिंग, हेन्नीवत श्रमिंग, निर्माण श्रमिंग, विक्रांग श्रमान ॥ ३॥ वनन ख्रां॰ ख हाय, मानिंग जानेन श्राय, हेन्नीवत ल्यां ख क्रांग क्रांग ति मनान ॥ ३॥ वात ल्यां ख जाने ह्य, किंकिंग श्राव्य हात स्वां ख जाने ह्या, क्रिकंग श्रांग वात स्वां ख जाने ह्या, क्रिकंग श्रांग स्वां क्रांग स्वां ख जाने ह्या, क्रिकंग श्रांग स्वां क्रांग स्वां क्रांग ॥ ७॥

হাদ্যে পাইযে তোরে, নাপুরিল মনঃআশা।। ধুং।। য়েনন সাগর নীরে, অন্যথা নহে পিপাশা।। \*।। য়াবত হাদ্যেথাক, নিজ্জন ব্যলেডাক, অন্তরে অন্তর ভাব, সেভাবে ভাবিহুতাশা।। \*।।

বাসনা মানস দুঃখ, রাখিমানসনিবাসে ৷৷ ধ্রং ৷৷
কপট নিকটে বল, কিকল হবেপ্রকাশে ৷৷ \* ৷৷ ভাবিষে
আমার দুঃখ, হেরিফে মলিন মুখ, বলিতেছ সে লম্পটে,
কহিতে সখি আভাষে ৷৷ ১ ৷৷ কিন্তু সেসই শিরোমণি,
আমার দুঃখ সর্জনী, শুনিলে তবে এখনি, আননদ
সাগরে ভাষে ৷৷ ২ ৷৷ এতাবতা এবিধান, রথাযে রহিবে
মান, সেইতো মানের স্থান, অন্যথা মানবিনাশে ৷৷ ৩ ৷৷

বিহারে ক্রিলে. তুমি, সারানিশি জাগরণ ।। ধুং ।।
আরক্ত হইল কেন, দেখু আমার ন্যন ।। \* ।। প্রিযালুখ
, সুধাপান, তোমারে ঘটিল প্রাণ, দেহ্ঘূর্ণিত বিধান,
আমাতেহে কিকারণ ।। ১ ।। তার ন্যন অঞ্জন, ওওঠে
পরিশোভন, তবেকিসে সেঘটন, এওঠে হ্য মিলন
।। ২ ।। তুমি সুখেতে বঞ্চিলে, তার প্রিফল ভুঞ্জিলে,
ভবেকেন পঞ্চার, আমারে করে পীজন ।। ২ ।।

সে হাসি সে শশিমুখ, ভূলিলে কি ভোলায়ায
।। ধুনা। পাষাণে জীবন তাই, আছে এতয়ন্ত্রনায।। ৣয়।।
হাসি সুধার সুধার, বুঝি শশি নিয়ে ধার, শুধিবারে পুন
র্দ্রার, কুছ ভাবেতে মিলায।। ১।। মুখ য়িনী কলানিধি,
স্বরূপ রচিতে বিধি, নিরবধি পক্ষ বিধি, ভাঙ্গিতে গঠিতে তায।। ২।। অবশেষে এই হৈল, হৃদ্যে চিত্রিত রৈল,
কখন বিস্ফৃত নৈল, মরি মরি প্রেমদায়।। ৩।।

सत्तत शांजना थान, प्रकारिन प्रक्ति !! कुः ।। ध्रकानित्व नुकाहेत्व, न्यथमान प्रिन !! ऋ !! ताशित्व गाहि त्राभारन, ज्विमनः इंडामरन, प्रकाश मानि कीवरन, जात्म जांभित कितन ।। >।। थ्रकानित्न वर्षकन, थ्रवन गक्षन्तनन, मञ्भूरद्वर उज्जन, अञ्चक्षांत इहेन ।! २।। थाजारम वृक्षित्व थान, जात उपमात छान, मर्थन कत्राच प्रथा, ग्राचारच विमातिन ।। ७।।

#### মঙ্গল রাগ।। জলদ তেতালা।।

किश्वित सक्रवा मूर्थ, मूसकृ वागी ॥ धु। बामाहे वाज्य करत, উমারাজরাণী ॥ क्रा विভূতি विভূতি हाई ध्रथन रामवाहे, त्रवृति शाम वाणि, कामी बाजधानी ॥ १॥ धीरिक व्याव्य व्याव्य

য়াহয়াহ শিবালয় ।। ধুণ ।। আনিবারে ধন্যাকন্য। তবমনে নাহিলয় ।। \* ।। সামান্যে নহেতন্যা, সভয়ে শিবে অভ্যা, মা আমার মাহার মাযা, য়ে দ্যার দ্যাহ্য ।। ১ ।। পাঠাযেছ সংবংসর ভিক্ষারি হরের্ঘর, য়ামাইসে দিগম্বর, শাশানে মশানে রয়।। \* ।। দুর্গাদুর্গা দুর্গাক্ষরি, য়াত্রাকর প্রাকরি,মঙ্গলাম্ভ্রন্মহী, সকলি মঙ্গলম্য ।। ২।।

গৌরী কালো, গৌরী আলো, রবহলো হিমালয়

!! ধ্রু ৷৷ কেহউঠে কেহপড়ে, পুলকে পুর্ণিত ময় !! \* !!
চলেসব লক্ষলকে, ঘটপূর্ণ কারকক্ষে, আনদ্দে কাহার
চক্ষে, দরদর ধারাব্য ৷৷.১ ৷৷ কেহতাকে ঘরদার, কেহ-

करत आदिकात, वरन आय जता आय, दिनम् नाहिक तथा। २॥ दिनम् नाहिक तथा। २॥ दिनम् नाहिक तथा। २॥ दिनम् अपन धुनीय, जरद

মাহ্যে মা মার জালা, দেখনা চাহ্যে !! ধ্রু ৷৷
ভূলেছিলে সংবংর, কেমন করিয়ে ৷৷ \* ৷৷ স্বেঘরে
ভূমিকনা৷, মাবলিতে নাহিষ্কন্যা, পড়েঁছ দন্যার ঘরে,
মরি তা ভাবিযে ৷৷ > !৷ জানাতা সে দিগন্বর, নাহিজ্ঞান
পরাপর, কৈলাশ শাশান ঘর, প্রমথ নইযে ৷৷ \* ৷৷ অমস্কল তামাস্কল্য, মঙ্গলেকরে তাচ্ছল্য, সত্যবল মারপ্রাণ,
জড়াক শুনিযে ৷৷ ২ ৷৷

क्यात्मा चूलिहिल, धरेष्ठननी मूणिनी ।। धुः ।।

खरुत दिर्माक्य, जान्टा अस्त्रीमिनी ।। ॥ । जन

ख्यास्त्र कर्ल, कनां जाद श्रीहिल, इरेश दिश्येत

माठा, मां गुर्ल काक साहिती ।। > ।। कनव क्रवह करल,

(मरेर्थित क्रिज़्ल, कनवा जूमिल क्रल, शांशलत

शांगिनिनी ।। ॥ ।। धानां २ क्रालकित, क्रुवाह क्राल्यभित,

म्जूरिंग्ट म्जू असी, जूमिकोव म्था दिनी ।। २ ।।

গেলেকোথা গিরিরাণী, দেখ 'হিমালয য়া ধুনু।। শরদ শুধা শু উমা, ভূতলে উদয়। #।। প্রথমে করি বোধন, শ্রীদুর্গা নামসাধন, অধালে সকাল হলো, দীপ্ত ত্নোচ্য। > ।। কোলেনছ এইবৈলা; ক্যার হ্যেছে, বেলা, ছরাকরি দেওকিছু, বিলয় নাশ্য ।। \*। জ্যা বিজয়ারে ডাক, সদত তৎপরা থাক, ব্যজন করিতেংল, মুখ্যর্মন্য।। ২ ।। গুরুপুরোহিতে বলে, গঙ্গাঙ্গলে বিল্লদলে, পূজ্মারে ফুলেফলে, য়াহাসাধ্য হ্য।। \*।। জগতজননী তারা, অনার সংগারে সারা, ভূমিভাব কন্যাভাব, তান্য ভান্য।। ৩।।

এসে। ২ গিরিবর দেখকে দ্যার ধরি।। ধুং ।। উঠ উঠ ভ্রাকরি, এদুর্গা এদুর্গা অরী।। \*।। পুরাক্ত পুন্যজন্যা, কন্যাপাল্যা ধন্যাগণ্যা, জগতের মাহ্যে মা, মাব্যলে ডাকেশক্ষরী ।। ১ ।। আজুনিশি সুপ্রভাতা, পুরেতে জগলাতা,গঙ্গাজলে বিরদ্দে,পুজমায, মাযাহরি।। \*।। শুনহে অচল রাজ, বিলয়ে কি আছেকাজ, আনক্ষামত মুখ, শুকা্যেত্ আছামরি।। ২ ।।

অনে হিপ্রাণ গৌরী, মাবল বিধ্বদনে ।। ধুণ ।। অন্ত '
রামি ী হযে, অন্তরে হিলেকেমনে ।। ৯ ।। শুনেছি হরের
ভণ, সিন্ধিতে অতিনিপুণ, নাহিতার কোনগুণ, নিগুণ
অগ্রগননে শা ১ ।। সদানাকি ভাণখায়, চিতাভয়ানাথে
গায়, হাড়ের মালাগলায়, লযেকেরে ভূতগণে ।। \*।।
আপনি ধ্রনন থাকে, তোমারে তেমন রাখে, আমরি
কেমনে ঘর, করিছ পরেল মনে ।। ৩।।

•

बार्शित को उका उ, ब्रिंत् जू की वार्शित ॥ धू, ।।
नारमध्य त्याय मुथ, शंनदक श्रमंयशि ॥ ३ ॥ द्रिया हि
निजाति , स्त्रमा नियंद्र वारम, वर्णिक जूरण कना।,
शायानी इर्य कननी ॥ ३ ॥ जाम ति हित्र मूर्श्येनी, जामात
शाम निम्नी, मिर्यक नकूरण जिनि, जिक्या तित्र निर्दामिन
॥ ३ ॥ श्रमिक इर्द्रित दिम, जार्लिक कर्छरम्य, किक्व
गूम विस्मय, भूनियारय जमनि ॥ ३ ॥ व्यक्तिक मिर्नित्रत,
देक्णाम म्यमान घत, वर्षम् शिकायह शत, विज्ञि
धर्मत थिन ॥ ३ ॥ विक्यात श्राप्तिय, कन्यामन्या घरतत्रम, क्रानिष्ठ मारयत माया, यम्हिहरू , त्रमनी ॥ ७ ॥

## मलाती ताशिनी ।। रुतिजान ।।

অপনে দেখেছি স্থি, তাপিত নিশির শেষে।। খু.।।
আনিছে বরিষাঋতু, চতুরঙ্গ বলবেশে।। \*। ভেকেবাজা
ইছে ভেরী, বীণধারী ব যুছেরি, যোরক্প। মতুকরি,
অঙ্কুশ চঞ্চলাবেশে।। ১।। মনমত রথঘণ, রথীগো ঋতুরাজন, বাণকপ বরিষণ, খণঘণ ছেসেছেসে।। ২।।

## মালকৌশ রাগ।। জলদতেতালা ॥

वित्रष्ट् वित्रहि एएट, वम्ख छेन्य । क्षः । क्रिश्ल भिनित खेरख क्षण्त श्रणां महे, मिक्षा श्रामीन नय । #।। क्करनत यनवानि, जुमत वाकातगि, जीवन मन भय ।। #।। উद्यास्त कृष्यत, भाकतृष्ट्य रिनिन्हे। কুহরে পিকনির্দ্য। >!! নিশ্বাস প্রশাস ঘণ, সল্যার সমীরণ, দুংথকিসল্য ।। \* !! বিষাদ কান্দে মোহ, কুশুন ফুটিল সই। মালিন্য শশিনিশ্চ্য।। ২ i৷ রতিপ্রার মাম্মতি, মদন রাজ্যের পতি, রাজ্যমন ম্য ।। \* ।। করিছে বিচার ভাল, সংযোগি পালন সই। বিষের্গিদ্দন্য হ্য।। ৩ ।।

পিরীতি সুধাৎশু স্থি, বিচ্ছেদ ঘণে চাকিল ।। ধুং।।
মমপ্রাণ চকোরিণী, মীলন সুধার বিনে। পিপাশাআশে
মজিল ।। \* ।। দেখিযে বন্ধু র মাণি, কুমুদিনী অভিমানি,
মীরেপ্রবেশিল ।! \* ।। অর্থাৎ আমার মন, কুমুদ প্রেম
বিহানে। দুঃখশলিলে ভুবিলা়। ১ ।। সম্পুতি উপায় সই,
স্বন্ধ প্রকাশি কই, মনেতে হইল ।। \* ।। ঘণবিঘাতন
তবে, নাথের মিলন বাযু । য়িদস্বভাবে বহিলা। ২ ।।
নত্ব। নাহিনিস্তার, ভেবেকরিয়াছি সার, ভালোতো
হইল ।। \* ।। অনল সাযিনী হব, নাহেরিব কেবাআরা।
প্রেমশনি আছোদিল।। ৩ ।।

কেব্যলে বসন্ত ঋতু, তান্য তান্য ।। ধুং ।। বিরহি
দহন হেতু, নদন রাজন সই। করে আ্যোজন চ্য ।। #।।
নিরাশ শাশনে হান, পঞ্নলোহন বান, ত্ণের বিধান
।। #।। বিরহ অনল ভাল, প্রজুল হইল সই। সম্যে সকলি
হ্য ।। ১। নল্যার স্থীরণ, দীপ্তকরে ত্তাশ্ল, দ্হন

কারণ ।। \*।। তাহেশশি সুধাঘৃতে, য়ামিনী সতিনী প্রায় । আহতি দেব নিশ্চয ।। ২ ॥।

প্রাণান্ত রজ্জের হলো, কিবা আঘোজন ৷৷ ধু. ৷৷
বিরহিঅবলা প্রাণ, হবণ কারণ সই ৷ হোতা অনম মদন
!! \* !! কাননা বিযোগি অন্ত, য়ক্তকুণ্ড প্রসন্ত, প্রমাণ
গঠন !৷ \* !! ললিত মুকুল ক্ল, ইন্ধান সদৃশ সই ৷ নিরহ
সেহতাশন ৷৷ › ৷৷ ব্যক্ষনার্থ কিশাল্য, মল্যা মাকতে হ্য,
বিহু উদ্দিশন ৷৷ \* ৷৷ কোকিলে তন্ত্রধারক, কুহু সরমন্তায়।
ঘণ ঘণ উচ্চারণ ৷৷ ২ ৷৷ ব্রক্ষল অভিপ্রায়, সমিধ সন্তব
তায়, বিরহি জীবন ৷৷ \* ৷৷ ঘৃতশশধর সুধা, য়ামিনী
করেতে অই। আহুতির স্মর্পণ ৷ ৩ ৷৷

প্রভাকরে শশধরে, একত্রে মিলনা। ধু, পানাহিশুনি নাহিলানি, কভুনাহি দেখিপ্রাণ। ইকি বিঘটন
ঘটন ॥ \* ॥ প্রিয়েতর চল্রানন, বিমন সে অবুক্রণ,
তাহেরি এখন ॥ \* ॥ মানঅনুরোধে প্রায়, শশাস্ক
সদৃশ কাষ ৷ তত্ত্বপারুণ নমন ॥ ১৮ এয়েভাব অনোচিত,
স্বভাবের বিপরীত, হ্যকরাচন ॥ \* ॥ সূত্রাণ হৃদিপার্ম,
জীবন কুমৃদ্ তায ৷ প্রকুল্ল নহেকখন ॥ ২ ॥ কারণ হৃদি
সর্বি, হেরেতর মুখ্যালা, মলিন বিমন ॥ \* ॥ জীবন
কুম্দ ভানু, নমন নির্থি প্রাণ। তাপেকালীয় বরণ ॥ ৩ ॥

এয়তু বসত্তে নথি, ভূপতি মদন ।। ধুনা ।। য়মন দেবতা য়িনি, তেমনি স্বৰপ তাঁর। ইযভ্যণ বাহন ।। ৼ।। ভূপতি অনস অস্ক, কিকব তাহার রঙ্গ, কুলসাথে ভঙ্গ। ৼ।। কেননাদিবে সেজন, কিনপে প্রাণ বেদন। জানিবে অনজজন।। ১।। অধিক ভাব অন্তুত, মন্দমল-যা মাকত, ভূপতির দূত।। হ।। কেজে ভূজজের সঙ্গে, অবিরত থাকেরজে। তাইকর যে দাহন।। ২।। নান্দীবাদি পিকগণ, নাজানে স্নেছ পালন, কুৰপ ভাজন।। হ।। দহিবেনা কিবিচার, ৰূপগুণে সময়ার। অতি কুঘট ঘটন।। ৩।।

#### 40×

মালত্রী রাগিনী ।। আড়ার ঠেকু। ॥

অগো মেনকা পাষাণী, কেমনে ভূলে ননিদনী ।। ধ্ৰু ৷৷ ক্ৰুভিভেছে অনজল, অন্যেহতো পাগলিনী ৷৷ # ৷৷

পাঠাযেই সংবংশর, ভিক্লারি হরের ঘর, শ্মশান বিহারি হর, হরাশ্মশান চারিণী ।। ১ ৷৷ সুনেছ য়ামাতা গুণ, কথে কাল কুটতুণ, কপালে দ্বলে আগুণ, গালেদোলে ভুজিনি ৷৷ \*৷৷ বিষ্যের সীমানাই, বিভৃতি বিভূতি ছাই, আছে য়াইসে বালাই, মাথেন্ তাইতো তিনি ৷৷ ২ ৷৷

কেকবে একাক পক্ষ, তোমার শ্রবণ ম্লে।। ধুন।। বেনাজানে সবিশেষ, একে সার্ব্যলেভূলে ।। \*।। কাল কুটিল নানিনী, কালকুট বিধাযিনী, কালকুপা ভুজঙ্গিনী, তুলন। বিহীন ভুলে।। ১।। পুচ্ছহীন দেহতার, সেকিমতি চনত্কার, প্রেমিক জনজ্বযে, দেশতে গিয়েছে খুলে।। ২।।

কিৰপে এরপ মান, হবেসখি সমাধান।। ধুন।। আগেকে সাধিবে রাগে, হঁল, প্রমাদ বিধান ।। \* ।। আমিভাবি মৌনেরব, নাসাধিলে নাহিকব, সেভাবে নাসাধি দেখি, কেননে রাখিবে মান ।। > ।। অথবা, কতদুরে জাযমান ।। > ।।

## ॥ मथ्रमात्नत्रंठक्रा ॥

রাগেকরি অতিঅনুরাগ, বৈরাগ্নে বিরাগ মন
। ধুং ৷৷ শাশান বৈরাগ্য কলা, স্বগ্নে রোদন স্নেমন ৷৷ \* ৷৷

স্বপ্নেতেরে দন স্থা, শাশান বৈরাগ্য তথা, ভাবিতে

ভাব ভাবান্তর, ভাবতো বটে তেমন ।৷ ১ ৷৷ সংসারে কেবাকাহার, তৃমিকার কেতোমার, কিসেকর অহংকার অহংকার একেমন ৷৷ \* ৷৷ বৃঝিলে সকলি কের, চিড়ার বাইশ্ কের. কেবল দেঁতোর হাসি, বলা আপন আপন ৷৷ ২ ৷৷

चारतमृष मानम मम, त्विरय क्वनत्वना ॥ धुः ॥
मूट्यकानी दिन्नम्न, मिक्स्य क्वन मजना ॥ ४॥ প্রত্যक्वित चलना भ, हेकि दियम श्रनाल, मक्तिमानी मक्व हृद्ध,
क्वानिरय क्वन कानना ॥ > ॥ महा हिनम्ब दिना, चिन्नम्व
क्वित क्वानना ॥ > ॥ महा दिनम्ब दिना, चिन्नम्व
क्वित क्वान ॥ \* ॥ क्वार चलना मय, चारत्व होन ह्य,
रम्बल्य बब्य मात्र, प्रिथ्य क्वन एथना ॥ > ॥

মিযার মল্লার অনুরাগিনী ৷৷ আড়ার ঠেকা ৷৷
তরিতে সৎসার ভারে, সারকর কালিকায় ৷৷ ধুন ৷৷
অঞ্জল অনুল্য নিধি, অঞ্জল কি অভিপ্রায় ৷৷ ধু ৷৷
কথাস্তনে পাযহাসি, কেনগ্যা গলাকানী, নিছাহও
কানীবাসী, কানীপতি নারপায় ৷৷ ১ ৷৷ সাগর সলস
তটে, ন্যালেমুক্তি যুক্তি বটে, কিন্তু য়াতাযাতে ঘটে,
আজি অতিশ্য তায় ৷৷ ধু ৷৷ প্রাপ্ত প্রাণ কানীধামে,
দিতে মন্ত্র রামনামে, বিলয় নাযের নামে,মৃত্যুমাত্রমোক্ষ
পার ৷৷ ২ ৷৷

भारतमनः भारतमम, (म्राधना न्यातवाम।। क्या महारमाह महीसह, स्थापण त्यकामाम।। सा। यायीकनजारभीत्रत, ज्यनायात्म तम्बह्रत, देवच्य नाभिनी छत्य,
खूनात्व विषय स्ता।। ।। जाङ् कूळान माह्य, हित्रिय
हत्य जाह्य, कान ज्यक्ष्म जस्य, कात्र क्रित्रण म्राथन।। सा। ज्याव्य मृहिस्तिन, जाशक्र देवताश्य वत्न, श्रादा स्व

म्हान बाउत्कन. ভाविष्ट एठाणा। यु॰ ११ छानना व्याकाण मत्य, महिना श्रकाण ११ छ ११ छानिश्च, मात्रमाया काना। ठ्राह्म (मर्ट्यान, देवराश्च मीश्वनिश्च, मात्रमाया काना। ३१। ভावना भागात ठ्य, मात्रमात्रक मात्रमाय, महरू क्रव्य (उ. क्रव्य भागा। ३१। नहेल कानीत्र नाम, भूदत्रमूर्था (माक्याम, क्रब्य क्रव्य धाम, व्याय व्याय। ३।। कानीभाग, क्रब्य क्रव्य धाम, व्याय व्याय। ३।। कानीभाग, मार्ट्यक्षाक, वमन छित्रय छाक, मिर्ह्यक वामाव्ट, क्रव्यक नाम ११ ॥ व्याविद्य हिस्त्रवित, श्याभ वत्रना व्याप, क्राह्यक हुए हाय।। ०।।

म्ल्जानी द्राणिनी ॥ अकजानां ॥

পরিশাস, তরিবে কেমনে, হরিনাস বিনে, ইারে জীব দুরাচার ॥ ধ্রু ॥ হ্যেব্যয়ে গেছে য়াহ্বার। আরকেস সদঃ এরে শমন, ধরিল কেলেতোমার॥ ॥ আরে মনেতে করণা অলপেতে মনঃ, লম্ম হারালে পাবেশা তেমন, য়ে য়ায নম্ম নাহি আন্যাফিরে, দিলেশত হণ ভার ।। ১ ।। হাঁরে, অতএব অরেপামর বাদনা, এহিরি চরণ কেনরে বাদনা, ভব পারাবারে তরিবারে হরি, চরণ তরণী সার ।। ২ ।। আরে, তাইবলি এইবেলা এই-বেলা, বাঁথ হেরিঃ চরণ শরণ ভেলা, নিদানে ভবানি অকুল পাথারে, নতুবা নাহি নিস্তার ।। ৩ ।।

इतिना्म, नाथनं विद्यानं, भिह्नात उद्यान, किश्वर्य शाविनिञ्चात ॥ धुः ॥ त्मारत उवमारक कर्नशात । इति-कालाश्वर्य, शाद्धकि किया, जूरवरकन इविशात ॥ ॥ । कालाकारल काल वात्र कात्रम, कालात ठत्रम विस्म कित-उन, काल्हार किरयजूरिय जात्रमन, श्विषित कारलत्रमात । । । একিডব ভুর্ল অরে মৃচ্মন, দূরেতে ফেলিলি অমূল্য রতন, বাজারে আসিয়ে দোকানি নাচিনে, কোথায কিনিবি ছার।। ২।।

হরিনাম, সাধিতে রসনা, অবশ হওনা, অলশ কারোনা আর ।। ব্রং ।। ভাবভবনদী অকূপার । প্রিপতি চরণ তরণী বিহুনে, কিসেহবে ভবেপার ।। \*।। আরে, ভাবভাব মন প্রীমধুসূদন, দিন্গেলে দিন্পাবেনা এমন, হেলাতে হারাযে পরম ভেলা, কেনমজ বারেবার ।। ১।। ভাইবলিজীব প্রীনাথবিনে, কেমনে তরিবি নিদানদিনে, শৃগাল লাজুল ধরি কেমনে, পারহবি পারাবার ।। ২ ।।

इतिरोल, बिलाए मानम, जलम कार्यामा, अमन निन्छ। भारत्या ॥ अ। मिनिश्वाल मिन तर्यना। कार्यक्रिक की व ममन ज्यून, कथन भमन इर्यना। ॥ ॥। जार्य, तर्यना तर्यना एए इत खमान, इर्यना इर्यना । कार्यमा, कित्र जायूमान। जाक्ष्मला स्त्र काल् पूर्णिन इर्य, कां हि पिर्य कि है हैं रियना। ३।।

থিমা তেভালা ৷৷ স্থিরে ৷৷ বুজপুরি, হেরি আঁখার
৷৷ ধুং ৷৷ সেইতো কদয়তর চারু পুলিনে বিস্তার ৷৷ # ৷৷
সেইতরী পুরাতনা,সেই আগরা বুজবধ্গণ৷ সেইতো য়মু
না, সহহ সকল বিফল, বিহনে মূলীধার ৷৷ > ৷৷

সেয়ৎ নদীস্থি তদের ক্রন্থ মূল ।
' বৈষাপুরাতন ত্রী থিলিতা বযক।
কিন্তুত্রকেলি চতুরঃপরিহাস ভাষী ।
হাহামনোদহতি নাস্তিসকর্ণ ধারঃ ।।
বুজপুরি হেরি আঁধার, ঐ।।

ওহে: 11 বুজবধু, ভার নিবার ।। ধুন 11 গভীর য়মুনা
নীরত্রি অকুল পাথার ।। \* 11 তরী অভিজীণা ক্ষীণা,
বালা আমরা অজ্ঞানা নবীনা, সমস্ত দুস্তার নিস্তার কারণ,
তুমিমাত্র মূলাধার ।। ১ ॥

জীণাতরী সরিদতীব গভীর নীরা। বালাবয়ং সকল মিথুমনর্থ হেতু।। নিস্তার বীজমিদদেবক্শোদরীণাং। জনাধব স্থুমসিসম্পুতি কর্ণধারং।। ২ ॥ বুজবধু ভার নিবার, ঐ।।

क्कारन करूना, मयागय ।। धु १।। सिक्वार्य सिक्वारत जारतजात, क्कारिक निक्क्य ।। \*।। मर्सकीरन मम्बान, मर्सश्राधात क्जित क्रांत, मर्स्यताताधिक कल, (जामा-जिमकल, करल करलामय ।। ১।।

আকশাত্ পতিত্ব তোয়্ব, য়থাগছতিসাগর । সর্বদেব নদকারঃ, কেশ্বব প্রতিগছতি ।৷ বিশেষে জানিবে জীবে, য়বেভাবের উদ্ধানা ২ ।৷ ক ওবালি ।। বৃদ্দে আরব্ঝি, ব্রজপুরে থাকাছলো দাষ ।। ধ্রু ।। সবেবলে কালাকলফ্লনী এরাথাব ।। \*।। পরমানু হ্যেভানুটাকিবারে চায়। অভেদ রাথায়নারামে প্রভান ঘটায়।। ১।। পতিঘরে রয়েপর ভলিবারেজায়। বিশ্বপতি উপপতি বলে কিলজ্জায়।। ২।। সগুনে নিপুনি বাদে নাচিয়ে বেড়ায়। পতি অমধায় উপপতি গুন গায়।। ৩।।

মেঘরাগ, অথবা মেঘমলার, চৌতাল্ ৷৷

ভূবন রঞ্জন কারিনী, চগু বিরোধিনী, দুর্মাদ শোষিণী সমর তরকে ।। ধুণ ।। বদন করালে হাসে, ঘন হুছক্কার ভাষে, মৃগপতি বেশেনাশে, দনুজ মাতকে ।। ১ ।। কান্তিশ্যামল কমল, গণ্ডযুগলে কুগুল, শারদ শশি-নগুল, শোভে কিবারকে ।। \* ।। নগ্রাবামা মগ্রারবে, অশ্রুপিয়ে দানাগণে, টল্মলমহীতল, কমঠভুক্কে ।। ২ ।।

কেনহরি, হরিলে বসন । ধ্রা । লাজেমরি পরিহরি, মুরলি বদন ॥ ৠ। আমরা গোপের নারী, আরি
য়ম্নারি বারি, আজু একি রঙ্গেরে,এআর কেমন। > ।।
রক্ষোমতীরে কহিব,চতুরালী বুচাইব,ভালমতেশিকাইব,
তুমিহে স্নেমন ॥ ৠ ॥ চুরিকরি নবনীত, হ্যাছিল
কিউচিত, উদ্ধলের বন্ধন, নাহিকি আরব্য় ২ ।।

শশক্ষি শেখর, শঙ্কর, তরকরকিত, শভুগুভক্কর, জহ महत्र्यत्र ।। द्रा ।। एतछेत्रग कुछन, एरिनाह मछन, ভবব্যাল বিকুস্তল, अधनात हत ।। >।। ভবভূবন কারক, ভব ভুবন পালক, ভব ভুবন ঘাতক, স্বয় জাতজুর ॥ \* ॥ **ख्व भगन नामक, ख्व भामान ना**ष्टिक, <mark>ख्व विवाग धादक,</mark> জ্য জটাধর ৷ ৷ ২ ৷৷ ভব দেবাদি রঞ্জন, ভব পামর গঞ্জন. **ख्रमञ्जा नित्रक्षन, अयङ्गाया वत्र ।। #।। ख्र ज्लाम ज्यन,** ভব ৰৰপা ভীষণ, ভব দন্জ নাশন, জয় পুরন্দর ।। ৩।। ভব चरशकी मञ्जर, ভব ভবাজ ভৈরব, ভবগণেশ শৈশব, क्य मञ्ख्र ॥ \* ॥ ७व धनाधि वाकाव, ७व कशान देवच्द, च्द बकाक्रदकमद, क्य भद्रारश्व ॥ ८ ॥ छ्द য়োগের।জিত, ভব বিরিঞ্চি পূজিত, ভব বিভূতি ভূবিত, জয শুভাক্ষর।। \* ।। ভব কপর্ম মণ্ডিত, ভবরণ প্রপশ্তিত, ভবসুরারি খণ্ডিত, জয় দিগম্বরা। ৫।।

তাপ পাপ নিবারক, বিপিন বেনু বাদক, পুলিন বিহারে
।। ৩।। সরসী রুহলোচন, বিশ্ব তারণ কারণ, রুচিজিনি
নবঘণ, দানব কংসারে 1। \*।। দেবারি বলঘাতন, দশামন বিনাশন, মুনিমনো বিমোহন, ধারাধর ধারে 1।৪।।
মোহন নাশিকোপরি, কস্তরি তিলকোপরি, কিবাশোভা
মরিমরি, নাহেরি সংসারে ।। \*।। ভকত বংসল হরি,
দিনহানে কৃপাক্রি, দিষে এচরণ তরি, রাধ
ভববারে ।। ৫।।

धीनलनप्तन, साइन, ध्रांशि वाइन, श्रक्ष लाइन, इरत्नमूत्रारत ॥ धुः ॥ क्रयत्कभी विमयन, क्रय त्थाइन, क्रय उन्नवधन, जिमित मण्डारत ॥ ॥ क्रयम्यू निमृष्तन, क्रय शृजना घाउन, क्रय कालीय मर्पन, क्रियु विहारत ॥ \* ॥ क्रय जूनन कात्रन, क्रय क्राठ क्रीवन, क्रय देव डेड व्यक्त, क्रय शिति धारत ॥ २ ॥

তেওটি ।। ।। সইংপতি বিহনে,বরষা লুলায় ।। ধুং ।।
সকল অনলময়, বিরহ ছলায় ।। ঋ ।। ধূমৰপে ঘণঘটা,
শিখাতড়িতের ছটা, বিন্দুবিন্দু বারিকণা, সক্ষুলিঙ্গপ্রায়
।। ১ ।। বহুতি মালতি গদ্ধ, অবিরত, মন্দমন্দ, জালিতে
বিরহানল, ঘণঘণ তাষ ।। ঋ।। ইবেঘুচে সব্দুংখ, ছোরি
লে সেটাদমুখ, অনুক্ল হযেকেবা, তারকাছে য়ায় ।। ২ ।।

জলদতেতালা।। কইদিক্ বাসা, সমরে শোভিছে
শ্যামা, ছেরিসঘণা রামিনী।। মুখ্যা কেশপাশ নিশিসম,
বামারপ, জিনিঘণ কাদ্যিনী।। \* ।। নিশিত রক্ত গিরি
হরছি পরে, ঘণরপ। ঘণবেশে ঘণরণ করে, ক্লেশেশে
চমকিত, তড়িত নিন্দিত, করবাল সৌদামিনী।।১।।
গলিত চাঁচরকেশ কুছ্রপে সাজে, ঝিল্লিবর কিন্ধিনী কি
ক্তিতটে বাজে, কুগুল মুগল গণ্ডে, আমরি বিরাজে,
উল্লামগুলদামিনী।।২।।

একি লজ্জারপা, শোভিছে সমরে শ্যামা, জিমিয়ে ঘণ গর্ভারে।। ধুন ।। আচ্ছা দিলভানু, কুছরপে কণ্ঠমালে ইন্দুধনু দন্জ শিরে।। \* ।। প্রবল নিশ্বাস বছে পরন স্থান, ঘণ ছছঙ্কার ঘণ গর্জন বিধান, ইষদ্ মধুর হাসে চপলা প্রকাশে, ভালাগ্রি বজু হেরিরে।। ১।। রুধির সলি ল ধারাঘণ বরিষণ, পানোমন্ত্রা চাতকী য়োগিনী প্রতিক্ষণ, হ্য গজ দৈত্যনালে, রণভূমিভাষে, অধরাধরা অন্তিরে।। ২।। নিন্দিত রজতগিরিজদে উরিঘণ, বৃতিছলে ঘণ বিদারণরণ, সর্মনাশি সর্মানালে, প্রসাদ প্রশাসে, বামাচরণে ধরিরে।। ৩।।

শ্রম, গুণ পারাবার। ধু- ।। শতার্দ্ধ বর্ণেতে নই, সাধাবনিবার ।। \* ।। মরি কিমাধুর্য়গুণ, তরিতে নহি নিপুন, কুল কি গোকুলে য়ার, অকুলপাথার ।। ১ ।। হরি ঙাণ অকুপার, তাছেমন গোপিকার, করিযে পাবন বেশে, তরঙ্গ অপার ।।• ৠ ।। ভাষায্য তনুরতরি, কান-বীজ গাণকরি, মোহিতে ভূলিযে হলো, নিমগু প্র-কার।। ২ ।।

कार्था, उक्उवश्मान ११ सुः ११ शए हि मूर्गर इति, कार कृमन ११ \* ११ विशिन विश्व हो इति, कार्या शिल शांतरित, मित्र उप जीविष्ठि, इति बहन ११ ५ ११ विक को निवी प्रतन, जार घन विश्व में, इलेना इमर्क्यम, जी- वन विक ११ \* ११ विक निवी निवी निवा । स्वा विक निवा । स्व विक निवा । स्व ११ विक निवा । स्व विक विश्व । स्व विक विश्व । स्व विश्व विश्व विश्व । स्व विश्व विश्व । स्व ११ हेर्द स्व म्त्र मन, ज्य व । क्व व । स्व ११ हेर्द स्व मन, ज्य व । कि । स्व विव । स्व ११ हेर्द स्व मन, ज्य व । कि ।

পরি, হরি প্রিরাধায় ।। ধুন ।। বিপিন বিহারে আনি,
লুকালে কোথায় ।। \* ।। কোথাবা নিকুঞ্জবন, এয়ে নিবিভ্কানন, গগণে চপুলাঘণ, ঘণশোভা পায় ।। ১ ।।
নবকুশাঙ্কর মাজে, চলিতে চরণে বাজে, ভুজজ বেড়িল
আনি, দুঃথিনীর পায় ।। \* ।। এমন দুর্গমে হরি, বিনা
হরি ত্রাণ করি, মিলাবে কে প্রাণ হরি, হরি হে আ্
নায় ।। ২ ।।

কর্, এশকটে পার । ধু।। ভানি হরি তাণকারী, রত গোপিকার ।! \* ।। অকুল ভবানিবারি, তারিতে ভানি কাণ্ডারী, তবে কেন ভীতহেরে, য়মুনা পাথার ।। ১ ।। বুজ পুড়ে দাবালনে, পানকরি কুতৃহলে, গিরিধরি বৃটিজলে, তার গোপ ভার ।। \* ।। বিষত্তন লঘে মুখে, পুতনা বধি-লা সুখে, তরিতে কে পারে তব, মাঘা পারাবার ।। ২ ।। কালীযদমন করি, বুজবাঁচাইল। হরি, লীলায় নবনী ছরি, লীলার বিস্তারণ। \* ।। বিশ্বন্ধপ হেরেমুখে, নন্দরাণী নহাসুখে, জনম সফল স্বীয়, করিলা স্বীকার ।। ৩ ।।

কোথা, তে মধ্ সূদন 11 ধ্রু 11 কর আসি প্রীমতীর, ভয়
মিবারণ 11 \* 11 কুলবালা কুলছরি, বনমাজে পরিছরি,
কিরপে লুকালে ছরি, করুণা কেমন 11 > 11 আনিয়ে অতি
য়তনে, তাজিয়ে নিবিড় বনে, ' একাকিনী রাখিবে কি,
এইতব্ মন 11 \* 11 আমিকুলবতী নারি, য়াতনা সহিতে
নারি, ছরিভয়ে মরিকরি, শ্রীছরি স্মরণ 11 ২ 11

কোথা,তে বুজপতে ।। ধুং।। বুজপরি পরিহরি, আছ কেমতে ।। ঋাণ মূচ্ছা গত এগোকুল, গোকুল বিহঞ্চ কুল, কলর ব হতসব, বিরহ মতে ।। ১।। বুজেসব শবাকার, বৃদ্ধিমাত্র য়ুম্নার, বুজবালা অক্রমালা,কালিদীগতে।। ৠ।। শীর্না গোক্লন্তলী পশুকুলং সম্পাহন স্পদতে। মূকাঃকোকিল পংজহাঃ শিথিকুলং ন্ব গ্রুলং নৃত্যতি।। मर्क्त उदित्रहानत्वनं मण्ड (गाविम रेपना श्राणाः) किरह्यकः प्रम्मा कृतकं भयना 'निजामू जिक्तं कें उत्तर । कांथी (इ वृज्ञभरण थे।।

काषा, शाक् मधीरन।। धुः।। निकुक्ष विशाद चानि, इटम जनमंन।। ॥। निविष्ठ घन ग्रामिनी, घन घात काम-धिनी, घनना घमरक घन, भुश्चीत भक्कन।। ऽ।। घननाति वित्रमन, निमा छद्ध भाष्ट्रमनं, ज्यनाः चाकुनाश्चाद, च्यम। घतन।। ॥। छिटन क्र कन। ख्या, विश्व खूक्षम घम, कित्रम क्र इट वैथू, श्रीभधू मृमन।। २।।

खग्न, मूना পারাবার ॥ द्वः।। जाथमृतिथान রাথে, ग्रिष्ट्रिक्ष इत्यात ॥ \* ॥ তাজহ নীলবসন, কিজানি নিবিড্ঘণ, ভূমেবছে সমীরণ, বাড়িবে পাথার ॥ ১ ॥ তমিত্তির সৌদামিনী, নীলবাস, কাদম্বিনী, দৃষ্টিমাত্র কমলিনী, বাযুর সঞ্চার ॥ \* ॥ অতএব বলিছেন, অনাহত দাবেকন, উপনীত করয়েন, দুঃখ্যক্পার॥ ২ ॥

রাধেত্ব পরিমুঞ্নীল বসন ধোথায়নাবং মন।
বাতোবারিদস্ভুমাৎ য়দিবছেমগ্নাভবেমৌরিয়ং ।।
শুরুং তদ্বনাস্তরং পরিদ্যান্যাদেইত্বাস্থং বপুঃ ।
শ্যামণশ্যামনবীননীরদসমণ তক্রেনচাচ্ছাদ্যভাং ।।
তালিবাসগুণধান, কিন্তু নবঘ্ণশ্যাম, আগে এসো-ঘোলেটাকি, ওঅল ভোনার ।। অথবা ।। তালিবনীল

বসন, কিন্তুৰপ নব্ধৰ, আগেতকে আচ্ছাদন,করিকে ভোষার : ৩ ৷৷

ताथ, जान टार्गित ति ।। यु. ।। नवीन नी तम नन, कर्ण वाथी नित्त ।। भागा भाक जा मात्र काय, नवीन नी तम छाय, वनाव छ भाजा जाय, श्रीत नी तम छाय, वनाव छ भाजा जाय, श्रीत मानित ।। ऽ ।। कि छ कं इव वक्ष्म , इ्हिर्य जा मात्र कर्मा, तो प्राणिनी किवा-कर्म, मञ्जूब वृत्तित्व ।। ३ ।। मोत्रम का निमा वर्ग, मानिनी जा जा मुवर्ग, जनम क्म मूर्वर्ग, विकास घित्व ।। २ ।। मञ्जूबर्ग, जनम क्म मूर्वर्ग, विकास घित्व ।। २ ।। मञ्जूबर्ग, जनम नवीन नी तम ममः, जात्म स्वरूपः व गूः ।। कि छ द भागा मात्र विवास हि ।। वियय छ ।। मञ्जूबर्ग विवास हि ।। ज्या मात्र क्ष्म व ।। ज्या मात्र क्ष्म व ।। ज्या मात्र क्ष्म व ।। ज्या का विवास क्ष्म क्ष्म व ।। ज्या का विवास का विवास क्ष्म क्ष्म व ।। ज्या का विवास का व ।। ज्या का विवास का विवास का विवास का व ।। ज्या का विवास का विवास का विवास का विवास का विवास का व ।। ज्या का विवास का विवास का विवास का विवास का व ।। ज्या का विवास का विवास का विवास का विवास का व ।। ज्या का व व ।। ज्या का विवास का विवास का विवास का व ।। ज्या का विवास का विवास का विवास का व ।। ज्या का विवास का विवास का विवास का व ।।

अङ्गतिनय, अञ्चलिनिष्ठि इय, अङ्गव इहेल ॥ ७॥

য়দিকরিনানদীবাদ, তাহেনাহেরি অল্লাদ, ভত্র্নতে নিরাল্লাদ, নাঘটে উহারে ॥ ২ ॥ .

দেহীতি বজ্জিনচকর্ম পদে ব্যন্তি।
গ্রাতিনৈবকিমপিডাবিন প্রদন্ত ।।
স্বাতিনৈবকিমপিডাবিন প্রদন্ত ।।
স্বানত্ব্যতিনকুপাতিভংগনেন।
দানীনবানইহকেন বিনির্মিতোহ্য ।।
নান্দীনিন্দাতুল্য য়ার, ভত্র্যনে বন্দনেতার, বিশেযকি পাবআর, অশেষ স্বীকারে।। অথবা ।। নান্দীনিন্দা
সমতুল, নাহিয়ার তুলাতুল, কেপায় তাহার কুল,নাজান
কালারে।। ৩ ।।

क्व, ध्वाजना काय।। धुः ।। श्रियमिथ मूक्ष्ट था विविक्त विविक्त का करत ज्या प्रति ।। क्षा मार्ग ।। क्षा मार्ग ।। क्षा प्रति ।। क्षा प्रति ।। क्षा मार्ग ।। ।। प्रति अक का भा का भि, विद्या का के विविक्त के विविक्त के विविक्त के विविक्त के विविद्या ।। का भा मार्ग मार्थ में के विविद्या ।। का विविद्या के विद्या के विविद्या के विविद्या

সঘণে, ঘণবারি পততি য় ধুং । বহুতি মাল হী
গন্ধ, বিরহি দহতি । গা দামিনী কিচমকতে, পিককুল
কুত্কত, নৃত্যতি শিখীনিয়ত, বিযোগি রুবতী ॥ ১॥
পতত্য বিরতং বারি,নৃত্যন্তি শিখিনো মুদা।
অদ্যকান্তঃ কৃতান্তোবা,দুঃখসান্তেং করিয়তি ॥
আজুকান্ত কিকৃতান্ত, করিলে দুঃখের শান্ত, জুড়াবে এ
তাপিতান্ত, ঘুচিবে দুর্গতি ॥ ২ ॥

পরি, হরি বৃদ্ধাবন-।। ধুণ !৷ কোথাগেলে প্রাণহরি,
য়শোদা জীবন ৷৷ \* ৷৷ ক্ষেছ্ আপনী আগে, বৃদ্ধারণ্য
গরিত্যাগে, পাদমেক স্বতন্তর, নাহ্রে কখন ৷৷ ১ ৷৷ তববিনে নন্দরাণী, মুচ্ছা গিতাহতাবাণী, কভুক্ষ আলোবলি, করিলে চেতন ৷৷ \* ৷৷ নইযে জারনবনী, বলে
কোথা য়দুমনি,নাহেরে অধরা ভরে,ধরাতে শ্যন ৷৷ ২ ৷৷

শ্যাম, বিরহতপন । ব্রা দহিল গোপিনী গণ,কমল জীবন ৷ \* ৷৷ কুঞ্জে মন্দ গলবহু, হরিবিরহে দুঃসহ, মাল তী মারুত যেন, দাবা হুতাশন ৷৷ ৷৷ দেখঅলি পুঞ্জপুঞ্জে, নিকুঞ্জে বেড়ায গুজে, জীহুরিচরণামুজ, পীয়ুষ কারণ, ৷৷ \* ৷৷ কিন্তু অলি কালনপে, কালার বিরহ কূপে, ডুবা- টুবা গোপবপু, করে অচেতন ৷৷ ২ ৷৷

পঞ্চন তাল স্ত্যারি ৷৷ তারিনী কেন বঞ্চনা, কাতর

তন্ধ। १९०१। তুনি অনুপ্রবিদী, মহাব্যোম প্রকাশিনী.
পরমাল্ল স্বর্গনা, ভূতপুঞ্চ দেহম্যে ॥ ১॥ জ্বি এম
জগনাতা, বিশ্বপাতা বিশ্বধাতা, তবসূত মজেপাপ চ্যে
॥ ऋ॥ কৃতিকি তাহে আমার, হানিত্ব মহিমার, লবে
কে শ্বরণ আর, তরিতে সংগার ভ্যে ॥ ২॥ ত্রিলোক
প্রসূতি জাযা,উচিত স্মান্মাযা, স্ক্রভূতে দিন দ্যাম্যে
॥ ※॥ সমভাগে সূত্রপ্রে, ত্রিলেনা দ্যেধ্নে, হানি
নাই ত্রসূত, ব্যলো নিদান সন্থে।। ৩॥

#### ----

(यानिया अनुतानिनो ॥ जनप्र जाना ॥

তুনি ননচোর মম, নযন চিনেছে। ধুন ।। সঞাতির
পরিচয়, স্বজাতি পেয়েছে ।। \* ।। সম পক্ষ য়দি হয়,
তারে চেনাকি সংশয়, সে বিস্তর ভার ময়, চলনে
জেনেছে।। ১।। অর্থাং আমার মন, চকিতে তুমি হরণ,
করিলেবল এমন, কে কবে, দেখেছে।। \* ।। তেমতি
মম নয়ন, তব লাবণ্য বরণ, কটাক্ষে করি হরণ, ছান্যে
। রেখেছে।। ২।।

কল্য নাশিনী কালী, ভালেতে। খেলা খেলিলি
।। খুণ । আনিয়ে ভবের হাটে, মাজমাঠে মজাইলি।।।।
জ্ঞানয়ত হাতেদিলি, কিনিতে তত্ব বলিলি, আপণ বৈরী—
গ্যকোথা, মাষামাঠ দেখাইলি ।। ১।। সেমাঠ হইতে
পার, উপায় নাদেখি আর, কামআদি চম্ব্রার, মহা

মরীচিকা, তার ।। \*।। অভিমান ভানুতাপ, দস্ত বালুক। প্রতাপ, অধিকস্ত হিংসারপ, দিশাদিযে ভূলাইলি।; ২।।

पियन शिमिनी जुल्छ, एथं किति क्षांत ।। धुः ।।

शांतु ज मून् शि निका, व्याप्त किति व्यादता इते ।। से।। निधांन श्रवान वयः क्रांत नर्यनामं इय, व्यम्दत् कान त्रयः,

इय नय जांव मन ।। ১।। मनदत्त ज्ञांत व्यानित्य, किनिः यः

शांक हिलियः, कि इत्व रजादत्त विलियः, क्षांनि व्यतः ।। द्रा
मन ।। से।। हेल्यिमि निक्न नर्यः, क्रांनि व्यतः ।। द्रा
मन ।। से।। हेल्यिमि निक्न नर्यः, क्रांनि व्यतः ।। देशः

हिलियं श्रमाम शर्वः, व्यतं निज्ञा नित्रक्षन ।। २।। विज्ञ

कितिवि रजादत्त, नामक विषय रचादत्त, वैशि व्याह माया

रजादत्त कार्षे शर्वः नक्षकः।। से।। नयत्न व्यक्ति मिर्यः,

हातिनाम व्याहेर्यः, ज्यूना कार्ण ज्ञांविर्यः, कत्र धन

हेशार्कन ।। ७।।

মরিহে লাজেতে হরি, হাসি পায দুঃখ হয়।। ধুন।।
শুনেছতো বংশিধারি, বুজে সব কিনা কয়।। \*।। তব
প্রেমে বাঁধা রাধা, রাধা প্রিঅক্লের সাধা, তবু লোকে
দেয় বাধা, প্রভেদ করি নিশ্চয়।। ১ i৷ তুমি হে বাজাও
বুঁশে, শুনিয়ে বিপিনে জাসি, তায় বুজজনা হাসি, কত
না করে সংশ্য়।। \*।। ধিক্বাছ প্রেম্নাধে, পোড়া
লোকে বাদ্নাধে, জগরাধ ভজিরাধে, জ্নাধিনী ভাবে
রয়।।

क्यान मा श्रांव हैना, केनाम धारम हिनान ॥ धुः ।। जान्यानी मूः थिनी मात्र, 'वन किम्मा कितिल ॥ ऋ ॥ जान्य मात्र, वितर्ष होता, हात्रा हत श्रांचि हात्रा, जम नाध मिश्र मात्रा, जिन आधः मंद्राहेल ॥ ५॥ वर्ष मात्रा वर्ष मात्रा, जिन आधः मंद्राहेल ॥ ५॥ वर्ष मात्रा जान्य हान ना, याद्रा मूनिन था किला। ऋ ॥ जानि हत श्रांच हान या, ज्यान हत मान्य हान स्वाध भाषान मत्न, किल नाहि वाध मिला। ६॥

চলিলে कि প্রাণ উমা, কৈলাশ শিবেরঘরে । धुः ॥
इन्ध्य माय्यत वाहा, ভালিলে না নারভরে ॥ ॥ । পুরা
কত পুণ্ডকরি, তোমারে জঠরে ধরি, য়োপেশ্বর য়োগা
গম্য, জামাই পেযেছি হরে ॥ > ॥ তাতে কি দুর্গতিয়াবে, কর্মভোগ কেঘ্চাবে, তুমি কন্যা য়ার তার, পুত্র
জলে ডবে মরে । ॥। একে সেই শোকে মরি, তায পুনঃ
পরি হরি, দেখাবে মাযের গতি, দুর্গতি বুঝিনাপরে ॥২॥

ধিমাতেতালা ৷৷ ঘু চলে মনের ভুন্তি, মু জিপদ পাবে তবে ৷৷ খু ৷৷ কাট দৈখপান হৈ, কর্মছদে ডুবে রবে ৷৷ \* ৷৷ বারবার রাতাযাত, করিতে হবে পান্চত, জঠর য়ন্ত্রণকিত, য়মের মন্ত্রণসবে ৷৷ ১৷৷ নবীন নীলদ শ্যাম, নবদুর্ব্বাদল্রাম, নিত্য বৃদ্ধ অভিরাম, শিবাছরি তাল দাম ৷৷ \* ৷৷ ভেদাভেদে অবিরাম, ভাকিলে কি পুরে কাম, জানিবেরে পরিণাম, চিতাশাঘী হরে য়বে ॥ ২ । বাঞ্চা করি পুণ্যকলে, বেগবতী গল্লাজলে, য়াহ্ন নিতি কুত্তলে, সাধিতে অতি কুশলে ॥ \* ॥ বিস্তু লারিয়ে বি কলে, জালেমর ব্থা নলে, সক্ষণ্প কিকর বালে, দেকথ ব্যাতে হবে ॥ ৩ ॥

पर जन्मिक माला, जानि जततं जन ॥ शुरा।
करमह देन ॥ शुरा अम्बिक्ट अम्बन ॥ ॥ अमृिक्ट
काल देन इंट अम्बन ॥ ॥ ॥ अमृिक्ट
काल देन इंट अम्बन ॥ ॥ इंनिने करम, वर्तनमा भाषानी
इस्म, ज्नना तथ मात्र ॥ ॥ किकव मृश्येत कथा, किन्
काल प्रथा, नर्हा कि ज्ञ जम्भा, मकिन मृश्ये काल ॥ ॥ ॥ जनक भाषानकाम, जननी भाषानी श्रीम,
भागन मर्ह्म छाय, मम जीवन मत्र ॥ १ ॥ एएथ स्त्र क्लाम, मक्त हिर्म मान,
मूक्त जुल जावन ॥ ॥ विक्विविकृति ठाँत, गर्ल महा माश्रीत, जात्न जनता ॥ १ ॥ विक्विविकृति ठाँत, गर्ल महा माश्रीत, जात्न जनता ॥ १ ॥

শুন্তো নিতান্ত ভ্ৰান্ত, আশান্ত মনআমার !! ধুন !! জান্ত হ্যে ভ্ৰম পথে, ভ্ৰমকেন অনিকার !! \*!! প্রত্যক্ষ প্রামাণ্য য়াহা, বিতর্ক বিরোধে ভাহা, জন্মান্ধের মত শ্রেষা, মজ একি চমংকার !! > ! নেত্রাভীত রূপয়ার, প্রতিরূপ করতার, একি অনোচিত চিত্, ভূলতব বুঝি কার !! \*!! শাশ্র সংখ্যা নাহি পায়, শ্রুতি শ্রুতি আকা-

ক্যায়, পাতঞ্জলৈ জলাঞ্জলি, মিনাৎসার এই সার ।।২।।
চরাচর আদিয়ত, ক্ষণে স্থিত ক্ষণে হত, নাযাকার ম যা
মত, ভরসা কি আছে তার ।। \*।। অতথ্য স্থিরমনে,
সত্যসদাস্থ্যধনে, চিন্তাচিত প্রতিক্ষণে, ত্যজদন্ত অহ্নকার।। ৩।।

জপরে হরের নাম, কিকর পামর মন।। ধু,।। আশু
তোষ নামগুণ, গুণসাধর্ম কারণ।।।।।। আরণ্য জ্ঞিল দল,
ভূতল সম্ভব জল, গালবাদ্য করতালি, অন্যমন্ত অকারণ
।) ১ ।। বুঝিবে পদ্ধতিক্রমে, দোষাভাব তরতমে, যুক্তি
আগমনিগমে, যুদ্ভা ভাবে পূজন ।। \* ।। সধনে সাধন
হয়, ভোগমোক যোগে কয়, ভবের ভাবেতান্য, ভব
নির্ধনের ধন।। ২ ।।

আড়া তেতালা।। তিলেক চিন্তনাচিত, এসৃষ্টির সুন্টা কেবা।। ধুং ।। কার্ন ভয়ে অনুগত, সুরাসুর দেব দেবা।। \*।। কেহ্য কার্য্য কারণ,তপন প্রনগণ,কারবশো অনুক্ষণ, তুন্ন করে কে দেবা।। ১।। তুমি কারণেরকার্য্য কারণ কায়্যের আর্য্য, তাহ্য ভূলি অনিবার্য্য, ভাবগ্যা গঙ্গারেবা।। \*।। কলেতে অনিভ্য সব, তবে ভ্রান্তি কেন্ তব, য়াবং ক্পবৈভব, লীন বুক্ষেকর সেবা।। ২।।

रेवज्ञत बक्ल किंड, नहि ल्लाट्, मनानन।। धु॰।

অত এবা প্রিয়কেন, ভাব জানকী জীবন । । লক্ষের শীতার্ত্তি, আমিও শীতেতে ভীত, হৈম গেছে তার বাস, হৈমসে মম ভবন !!'> ।। রাবনরাজার জানি, মন্দোদরী রাজরাণী, মন্দোদরী শয়্যাপরি, নিষত মম শয়ন ।। \* ।! বটে সে শোশর হই, ভাগ্যে দশভাগ্যনই, দশ ভাগ্যে হান দুই, আট কপাল ভাজন ।। ২ ।।

### রামকিরী বা, রামকেলী, রাগিনী।। জলদতেতালা।।

ভালব্যলে ভালছ্যলে, ভাল কেন না ভাবিলে ॥ ধু•া৷
ভখামুখে শুধুহাস, মন দুংখ শুধাইলে ॥ \* ॥ ভালবাসা
ভাগুৰা আসা, ফুৱালো সে সবু আশা, কেজানে ভরাষ
মানা, ফুৱায সরায শুধিলে ॥ ১॥ নব অনুরাগ য়বে,
ভাব কি ভাবিতে তবে, মনে আঁখি ঠার কবে, নামানে
আঁখিঠারিলে ॥ \* ॥ বুঝিষে কি ফল সোণা, এনম কানের সোণা, কেবল কানেতে শুনা, দেখা নায়ায
দেখিলে ॥ ২ ॥

स्त इव कालीतकान, कालख्य काथा जात ।। भु. 11 नावृद्धिय भात भर्भ, धर्माधर्म कि विठात ।। \* ।। महामञ्ज कालीनाम, खास्त कात्वत विताम,ल कात के कातरमार्थ, काल मास्त्रत विद्वात ।। ১।। जान भूर्ग स्थानत्त्र, ताल्ग्ड्न मक्षत्त, खर्च ममध्त श्रात; जाहे ललायो जाता। \* ।। সক্ষেতে জানান চাই, থয় দিবে কালীর দোছাই, কালঃ রাহু গুাস হেতৃ, ন। হবে কাছে নঞ্চার ।। ২ ।।

তরিতে লোকাপবাদে, ধৃ শ হও কিকারণ ।। ধু শ। ধার্মিক বলিবে ব্যলে, করধর্ম আচরণ ।। \* ।। হরিনামাক্ষিত ছাবা, কলি মৃগ বাঘথাবা, অঙ্গেতে অক্ষিত কিন্তু,
পারবধু প্রতি মন ।। ১।। য়দি কেহ কর ত্যাগ, পারস্যাপাহারি রাগ, তথাপি না য়ায ভূান্তি, চিন্ত্যুহ্রিসর্ফান্ধাাা।।
একেমন ভক্তিকহ, সদানাধনা সাধহ, থাকিলে একান্ত
তবে, করকি অতিচিত্তন ।। ২ ।। বুঝি উপমা জামনা, তূণ
রাশি অগ্নিকনা, রেমন দহে তেমনি, কলুষ হরি আরণ
।। \* ।। ভূান্তি ভবে তানাকরি, সদাবল হরি হরি, গ্রন্থি
পারে গুল্থি কিন্তু, শুথকরে বন্ধন ।। ৩ ।।

हिहिश्राग अमन (तत्म, भूदत किन श्राद निः न ।। धुः।।। ध्वित् भवा किता भवा ।। का ।। क्या मूक्त थाकित्न ।। का ।। क्या किता कक्षम, जात्न विकास का ।। भवा न विकास का ।। भवा ।। भवा न विकास का ।। भवा ।।

নাধেকি ভোনারে বঁধু, ক্ষিরে এ তোয়তন । হু।

নাছেরে হাদ্য দহে, হেরে শীওল জীবন ।। \*।। সরস লুগাণ্ডা নুখ, হেরিতে বাড়যে সুখ, বিরস নির্কি দুঃখ নিয়ত ঝোরে ন্যন।। ১।। হাদিকর অভিযান, দহেদেত ন্নঃপ্রাণ, সাধিপ্রাণপণক্রি, কিজানি হয় কেমন।। ২।।

নিবাইতে মনানল, প্রলয হল উদয ।। ধু ৭।।
আন্তরে অনল জালা, নযন সলিল ময ।। # ।। বরঞ্জে
ভালছিল, হিড়ে বিহিত ঘটিল, অনল শলিল সদা, সম
ভাবে ঘেরিরয় ।। ১ ।।

নানাৰপে মহামায়া, কত না মায়। করিলি ।। ধে ।।
প্রথমে মীনৰপেতে, বেদগণ উদ্ধারিলি ।। \* ।। দিতায়ে
কমিঠ বেশে, ধরাধরি পৃষ্ঠদেশে, তৃতীয়ে বরাহ্রপে,
ইদ্ বিশ্ব প্রকাশিলি ।। : ।। চত্তর্থে নৃসিৎহ্রপে, হিরণ্
কশিপুভূপে, বিনাশি পর্নভক্ত, প্রহ্লাদেরে বাঁচাইলি

11 \* 11 शक्षरम हिल छ वं लि, वामम मूत्र छिइ लि, विकेश शतथ्रताम, कार्ण क्र जि विमाणिला। २ 11 मक्षरम प्यालताम,
नवपूर्वाप्रल गाम, क्रिनिय शत्र खताम, क्र श्रं था जिता
थिलि 11 \* 11 अकेरम त्राहितीमूछ, इय इनि इन सूछ,
नवस्म शृक्षया ज्या, अत्रुक्त माना हे लि 11 ७ 11 प्रणामार छ
क् जित्राण, विनाणिय स्मार्क्ष्ण, श्रूमः मञ्ज खालनात्र, मृष्ठ
नारवस्म कि शि \* !! मर्था मर्था मन्मालय, शृर्व अव
छीर्वा इय, वाद्याय साइन विश्वा, वृक्षवाना खूनाहे लि 18 11

প্রদান শরণাগতে, প্রকেমন বিজমনা ।। ধুণ ।। ভাবিতে দিলিনে শিবে, ভবে ভবেরভাবনা ।। \*।। বাল্যমুব।
প্রৌটাকাল, দেখিতে শুনিতে কাল, গুলে আসি প্রতি
ক্ষণে, এইতো কালমন্ত্রণ। ।। ১।। পরে বৃদ্ধকালাগতে, ক্ষণি
বমাবিধিমতে প্রমন সমযে কাল, আইল দিতেয়ন্ত্রণ। !। \*।।
ভূলাইযে তব ভাবে, মহামাঘা আবিভাবে, লাভ মাত্র
কলত্রাদি, ভাবনা অনুসূচনা ।। ২।। দিয়ে জ্ঞান মহানিধি,
ক্ষণিতে কযেছ বিধি, দুর্মানাম মহামন্ত্র, সরস করি রসনা
।। \*।। জ্বিব কিরপে তারা, অ্রজপা হইল সারা, ভাক্সি
ল মৃদক্ষ গেল, কার্তনের সম্ভাবনা ।। ৩,।

नन्ज, वा, नन्जिताणिना।। जापात्राठेका।। मान कति ना रहित्व, सथन थाकि जल्ला ।। धुरा।। হেরিলে সে চাঁদমুখ, সবভূলে রাই পরে। \* ।। চন্দুনন দরশনে, ভাবিতার আলাপনে, আলাপন হলে প্রাণ, ব্যাকুলালিকন তরে।। >।। হলেপরে আলিকন, কোথাযে মান তখন,মানেপড়ে ছতাশন, কিজানি হয় কেমন।। \*।। বৃঝিতেনা পারি সই, য়েনস্পন্দ হারাহই, শুনিতে দেখিতে মাত্র, নেত্র শ্রোত্র নৃত্যকরে।। ২।।

সম্ভবি এমন কেন, খাকিতে মা সম্ভাবনা ।। ধুন ।। দৈহি অমপূর্ণা অম, পুরাও মন বাসনা ।। \* ।। হ্যেছে মা কালক্ষা, দিয়ে পরিত্রান শুধা, বিদাযিয়ে জন্ম সোধ, যুচাও জন্ম মন্ত্রণা ।। ১ ।। তৃনিতো মা কম্পলতা, তাযএত ক্পাবতা, কিছেতু জগন্মাতা, বিতর করুণা কণা ।। \* ।। ধ্যরেআছে ক্ষুধাকাল, কেঘুচায় এজঞ্জাল, সম্ভাবে ক্ষুধার কালে, মাধ্যলে ডাকে জাননা ।। ২ ।।

प्रतिष्ठ हल नकती, नकत आति लाय।। धूर ।।

यहला उनया भारक, आह्न अहला इर्य ।। \* ।। जूर ।

अहला उनया भारक, आह्न अहला इर्य ।। \* ।। जूर ।

अहला उरक्षिणा, मरा थूलर लूकिना, उरेन् करन हमकिर्य,

काथाया मीमूर्ताकर्य ।। >।। उनय जूरतह करल, जाउहे

महिन् जूल, कन्।जूबि अमन् इरल, रमथना श्रमृष्ठि वहल ।।

श्रम ।। उरवरकरा विचकरन, कात्रमूथ हिर्यत्वरन, रमथ ।।

श्रम अहल अतिलाह हिमालंख ।। २।।

প্রপঞ্চ অনিত্য বিশ্ব, নিত্য নিরপ্তন ।৷ শুণ ৷৷ ত্যঞ্জি
সার্থ ব্যর্থ অর্থ, কেন উপাজ্জন ৷৷ শ ৷৷ ব্যাপ্তদাপ্ত চরা
চরে, গ্রহামোহ নিজাভরে, হারাম্যা চৈতন্য অরে
ভূলিছাকারণ ৷৷ ১ ৷৷ মিছাপাপ পুন্যভোগ, মিছাকর য়াগ
য়োগ, লাভমাত্র কর্মভোগ, ভোগ কিকারণ ৷৷ শ ৷৷ অত
এব নাবধান, ত্যজিদস্ত অভিমান, সাধিয়ে য়াগুত জান,
হও সচেতন ৷৷ ২ ৷৷

কুলের কলক শক্ষা, সেকিহ্য অতিশয় । ধুং ৷ ৷ পিরীতি রসেতে য়ার, মানস অবশ রয় ৷৷ \*৷৷ প্রবাল মুক্তা রেমন, অতিভয়ে উপার্জ্জন, পিরীতি নিধি তেমন, অকথা সয়থা নয় ৷৷ ৷ ৷ ৷ মাণমুক্তা লাভকরে, য়েজন ডুবে সাগরে, তথানক্রলে চরে, প্রেমেকুলক্ষয় ভয় ৷৷ ২ ৷৷

শ্রুকনিত্য তস্তবন্ধ, ত্রিলোক আছেরে মন।। বুং ।। বেদাগমে বলেয়ারে, সত্যসন্ধ সনাতন।। \*।। য়েদেখ বিশ্ব প্রকাশ, সকলি মাঘার দাস, মহামাঘা আবির্ভাবে, বিশ্ব ভূবিশ্ব কারণ।। ১।। এফের বুঝিবে কেবা, ফেরকার বুজেয়েবা, সেপারে বুঝিতে ফের, অন্যেবাজে প্রহরণ ।। \*।। বিমৃদ্ নাপায় তম্ব, করেদি।শ দিশিতম, বন্ধ্যাকি জানিবে তথ্য, গর্ভবেদনা কেমন।। ২।।

त्रम्ना भू । नत्न तार्थ, (इ उना' ता । द्र उना । धू ा। त्रि

য়ाও অন্যপানে, চেওনালো চেওনা।। \*।। হৈরিলে কদম্ম
মূল, অননি য়াবে দৃকুল, তাইবলিকুলমূল, খেওনালো খে
ওনা।। ১।। শ্যামকপ পারাবার, পারাপার সুদুন্তার,কে
বার বিষমতায, নেওনালো নেওনা।। \*।। কালোভালো
জানিতায, নানাঘটনা ঘটায, কোনছলে শ্যামগুণ,
গেওনালো গেওনা।। ২।।

माइटर मिट्स मूथ, क्रियन। प्रथिता द्वानि !! कुः !। किंका भाषा शिक्ति, जूरेना किंमन भाषानी ! \* !। मा इट्य (भा जनयां ते, नामनाहि ज्वानितां ते, द्वां ते तेथा नम जात, कामनाहि ज्वानितां ते, द्वां तेथा नम जात, किंमना नाकाि !! > !। जनया नाक्ना इट्य, कं उना नां तप के द्वां, भारे ति हिमान् त्य, दातक ज्वां मा ज्वां नां ते हि विकाल के ति हि विका

खनशि विखय। जया, वनशिय जामा जाय ॥ दु ॥ कर्ततं द्वाथिययारक, शायांनी প्राण केमाय ॥ \* ॥ किक्व भिरवतं कर्मा, माहिज्ञान धर्माधर्मा, मूमिनना स्मर्क कर्मा, महेयादा कन्याय ॥ > ॥ त्याहित्य वन हरदा, श्रमृक्ति भा- কেতে মরে, মৈনাক ভুবেছে জলে, সেই কেনে দহেকায ।। \*।। তাহাতে কন্যার মুখ, দেখেমনে পায়সুখ, সে জীবন হরেনিলে, কেমনে জ্বালা নিবায।। ২।।

### **──**○※○

# नुम्बिंभिं।। मध्यान् जाना॥

नारहरत राजानारत मित्र, देवत विश्व रिक्स न । धुर ।।
नयन व्याकृत नना, नकत नवतन প্রাণ । তবৰপ দরশনে
।। \*।। कत বিষ্তে রেমন, প্রতিবিয় দরশন, সেইসে
কারণে ।। \*।। নযন শলিলে ভাষে, আভাষে বুঝিবে
প্রাণ ।। ওরপ অবলোকনে ।। > ।। মনচাহে আলাগন,
জীবন চাহে মীলন, প্রাণ সন্তাবণে ।। \*।। রসনা রস
প্রযাস, প্রবণ শুনিতে ভাষ । কুচভুক আলিজনে ।। ২।।
নালিকার অভিলাস, সদাও অঙ্গ সুবাস, জাগুত রপনে
।। \*।। তবেকেন বঞ্চিতে,বঞ্চিত কর বল প্রাণ । বঞ্চিতে
অধিদী জনে ।। ৩।।

श्रम्य निज्य आत्र, विभन वमन ।। धुः ।। भमन ए। दित भनी, এইদে কারণ ।। \*।। इत्न अश्रद्ध्यन, नूकार्ट्ड इय युग्न, তাইএত आंकिक्षन, क्रिट्ड (भार्यन।।)।। त्रक्ट निश्वत माछ।, क्रभट्टित भनत्वाछ।, इति य कारत्र्ह् किया, श्रम्य अर्थन।। ७।। मूर्यक्रत युग्नर्स, निरुद्य इर्यस्ट्र थर्स, अधिक क्षभार श्रम्, नहेर्य भमन।। ७।। শশাক্ষের শশরাগ, তত্প্রতি ক্রি বিরাগ, গুছণ নিমল ভাগ, কলঙ্ক ক্ষেপণ।। ৪ ৷৷

ভালবাসা ভালয়দি, সেভাল বাসেতেমন[া ধ্রু ।।
নহেনিছা আশানীরে, ভালাকেন অকারণা ৷ 
৯ ভাষে
করি য়তন, রাখেয়দি প্রেমধন, তবেহ্য সূথ তাহে, নহে
জাবত্তে মরণ ৷৷ > ৷৷ বিলনা একিউচিত, সাধেসাধিযেপিরীত, সদত রব দুঃখিত, ক্যুরেঅতি প্রাণপণ ৷৷ ২ ৷৷

কেব্যলে পিরীতে দুখ, নিরবধি দুঃখ অতি ।। ধুং ।।
নাহেরে অন্তরে দহে, হেরিলে চঞ্চল মতি ।। \*।। শুন
তাহার কারণ, বিরহে ব্যাকুল মনঃ, মিলনে বিচ্ছেদ্ভ্য,
ঘটে জীবনের,প্রতি ।! ১ ।।

जूनिमा পायां भी हरा, जूनिस हिल कमान । धुः ॥ जाशनि बत्न हि जामि, जाशन । युः ।। जाशनि बत्न हि जामि, जाशन । युः ।। जाशनि बत्न हि जामि, जाशन । युः ।। जाति ।। जात

यू तिमाव बहेखान, यिमग् क्याखान, नवत्र मानगा, ज्यनी यज्ञा १ ।।

खनर बानी।। कुन्।। विश्वमू (च मश्रानि, जाधः जाधः वानी।। #।। वलिकवा जाताहत्व, माजूमिएजा नहभत्व, ज्ञाति विश्वम् जाति।। ३।। कविक मृत्यं मर्म, (पथमात्र ज्ञाहित्र, ज्ञाल कृणान् जाक्या, धित्रधना मानी।। #।। कृलित्न कृतिह ए।न, वाड़ाहेएज कृणमान, कृलीन निर्श्व ज्ञाहित, कथन नाक्यानि।। २।। ज्ञामिमा हित्र पृत्थिनी, जिक्यादित जिक्यादिनी, श्रमथ नहेएय मर्क, (क्रात खल्मानी।। #।। (पथमा क्यादित क्यादिन, क्राह्मानी।। ७।। क्यादिन, महत्व क्यानी।। ७।।

### लुम् थुन् ॥ मथामान्॥

करंग्डर जांत मा, जीवं कननी शक्ष ॥ धु॰ ॥ छव्छय जल, बमान्त रेगर्गनिनीं, गिर्यान मक्ष्म ॥ इतिश्रम् अनुजानि, तृक कृमछन् वानि, कितना मूधना कामी, जतन जत्रक्ष ॥ > ॥ जूमि वाक् निजाजोठ, व्यक्ष विश्व वाशिठ, तृक्षकि। वामिर्छिए, कम्छे जूक्ष ॥ ॥ ॥ ममीय वंशाश काय, मृशान वायर थाय, क्षिर्विशा ভাষেয়েন, कात्र ज्वस्य ॥ २ ॥

चा शार्विवान। ।। तमनी चमनि नरकु एसथ त्रव्यन

চিত।।ধুনা। মুখচন্দ্র চন্দ্রকান্ত, মনিয়ত কিবা শোভিত।।\*।।
নিবিড় নীরদ কাম, কেশজাল শোভাপাম, মহানীল
কান্তে ভাল, হ্যেছে নির্মিত।। ১।। করপত্ম পনুরাগে,
মরকত পদভাগে, সামান্য পাষানে ছদি, এই
ভানোচিত।। ২।।

# শক্ষরাভরণ অনুরাগ।। মধ্যমান্।।

কারভাবে, ভোলেটনির্কিকার 11 ধুং 11 অসার সং লারে দার, করিছ স্বীকার 11 \* 11 দারাসুত বন্ধুভাব, ক্ষেহেতে আপন ভাব, ভাবদেখি য়াবেভাবে, সঙ্গেতে কেকার 11 > 11

स्थित मूत्रिव द्रायः, क्यान द्रायः शिक्षः । धुः ।। ध्रायः व्यानाक वृक्षवानाः, द्रावेष्ट द्रम्या कृत्न ।। \*।। द्रित्रक त्र मानिकारम्, क्षीवन नम् काष्ट्रम्, काष्ट्रित धकून काष्ट्रम्, मिक्स्यना नित्राकृत्न ।। ১।।

রাখিতে হইবে রাম, এদিনের পরিনাম।। ধুন।।
জানি বেদাগনে ব্যক্ত, তারক্তুল রামনাম।। \* ৷৷ য়েমত্র প্রভাবে শিব, নিস্তার করেন জীব, সেনাম জপিন
হিব, প্রাপ্তকি পরমধান।। ১ ৷৷ শুনিভাবি কিবাভূত,রাম
নামে উদ্ধারে ভূত, তবেকেন পঞ্ভূত, এদেহে সদা
বিশ্রাম। ২ ৷৷

### भावक्वाणिनी ।। मध्यान्।।

কবেকি মনের কথা, কোণ্যনাং হারাযেছ। ব্রুপ।।
পরেরে সঁপিয়ে মনঃ,ভালভাববাড়াযেছ।। \*।। নাজানি
তোমার্যনাং, মজাইবে অন্যজন, কেননা অনেক মনঃ,
ছলে তুমি মজাযেছ।। ১।। কিবা অপরূপ আহা, অনুপ্রমা
রূপয়াহা, আপনি ভূলিযে তাহা, জগতেরে দেখাযেছ।। ২।।

রাধারাধা বলে, য়মুনার কুলে, নবীন নীরদ সুরলি
পুরিল । ধ্রণ ৷! বাধানাছি মানে গৃহের কায়ে, লোকের
লাজে, সকলি ঘুরিল ৷৷ \*৷৷ গাণকরি কাম মোহন মস্তে,
নিমন্ত্রিলা শ্যাম মুরলি য়ত্তে, কিকরে কুলের কুটিল তত্তে,
হৃদ্য য়ত্তে, তান পশিল ৷৷ > ৷৷

### শীরাণ।। মধ্যান্তালা।।

কেডাকিত কালীবলে, কালভয নাথাকিলে ॥ধুঁ, ॥
নামের মহিমা রবে,কাল.শঙ্কা নিবারিলে ॥ \*।। পড়েছি
দুর্গমে ভবে, এশঙ্কটে রোখ তবে, কালীনাম সবে লবে,
অখ্যাতি হবে নহিলে ॥ ১॥ দেখতার নিদর্শন, কার্যকি
বিন্দে কারণ, হয় কভু সম্পাদন, কালেতে কালী ভেম্ন
॥ \*।। নহে কেকরে মারণ, অনর্থে কি হয় মন, বিমাতা
চরণে নতি, পিতা সভোষ জানিলে ॥ ২ ॥

### সরপরদা। জলদ তেতালা।।

बरात जांशात चात्, ररत्याति महे, क्षमगिधित
मा ॥ धुः ॥ बर्जित क्षांनिलाम, रामम मछन। ॥ ॥ ॥
कर्ञता मत्नकति, मनाख्त । प्रतिमति, ज्यूताचित मस्त्री,
मत्नश्य् श्यना ॥ > ॥ मत्नाभक त्रजपूर्थ, रम्बिक जांशात्र
मूथ, पूर्य উপक्षय मूथ, किकति बनना ॥ ॥ । अथम
जूरविक जात्र, रा नत्व कञ्जामात्र, रा किश्व भूनक्षात्र,
कितिलमाधना ॥ २॥

उड्य नमान वित्न, वनस्थि नहे, क्मरम शिव्रिष्ठि व्रय ।। धुः ।। आमिडावि ध्यमद्रारम, म्म डात्व विद्राम मयः ।। ३ ।। मत्मम्य वक्मन, बड़ाद्व मम मीनन, क्षेकाकीवन मद्रम, ना इत्न कि नूच ह्य ।।।। छात्व अत्मका, बड़ाद, डाव्रस्थि (म किडाव, मुक्तमद्र मूहेडाव, किद्यम छाव ध्यमयः।। २ ।।

बाद्रबाद्र ভाद्र भाद्र, द्यम कतिरमु गरे, वलत्भा

সাধিতে ।। ধুন'।। য়েজন আপন দোষ, না পাষ দেখিতে।। \*।। করিষাছে মনঃচুরি, তবুনা,ছাড়ে চাতুরি, চোরের অধীন সাখু, কিলজ্জা শুনিতে ॥ ১॥ চোরহ্যে সাখু প্রায়, সাধিলে কিহবে তায়, ভাবে অভাব ঘটাব, হিতে বিপরীতে ॥ \* ॥ য়েমন কুকর্মি জন, সাধুবেশেতে কথন, ভুনিলে ভয় কারণ, হইবে মানিতে ॥ ২ ॥

সাহানা অনুরাগ। জলদ তেতালা।।

च्यक्ता चय॰ काँ झा, क्तर अ॰ काँ ता किंगी।। ४॰ ११ मनुष्य मरताष्ट्र किंगा, मिलाइ मछा ना गिनी।। ३० ११ प्रात्त व्यक्षक्र किंगा, विता किंगा मिश्यतो, लाक्ति व्यक्ष्मि भित्त, रामनील कमलिनी ॥। ३।। छ्यम् उत्त क्रेमाल, व्यक्ष्मि भित्त, व्यक्षि कमिला क्रिमी, विलाल, प्रमप्पंत्र प्राायिनी।। ३।। लाक्षि व्यक्षक्र व्यक्षक्र, चाल्वि अवस्व, म्यना शि व्यक्षक्र, व्यक्षि क्रालिनी।। ३।। लाक्ष्मि क्रिमेश क्रि

এবৈছো আনন্দ ধান, কর হর গুণগান ।। ধুন।।
পেলে সাজ্যা সাক্সা, সালোক্য মহানির্কাণ ।। \*।।
ধন্যতার্থ বারাণসী, কেন্ডিতা বরণা অসি, শোভেয়েন অর্দ্ধ
শালি, কলুষ অসি বিধান ।। >।। পুরিতেকি মহোত্সব,

সদা শখ্যণী রব, ভবভাবে মন্তস্ব, হেঁরে ভবের বৈভব । \* । আনন্দ কান্দ্র নাম, আনন্দ আশ্রম ধাম, পরি-ক্রমে পরিণাম,ভাবরে মূঁচ অজ্ঞান ।। ২ ।। সুপেম্থে উল্ভি কর, স্বরহর য়োগেশ্বর, ভূতেশ্বর মহেশ্বর, জাতজ্ব জাযা বর ।। \* ।। হতাধার পরাত্পর, জটাধ্বর মহত্র, চতুমুর শুভ করে, লক্ক বিপুল কল্যাণ ।। ৩ ।।

রণোয়রা হুছয়ারা, কেরে ঔ কারা রপিণী । ৷ খু ৷ ৷
নাচিছে থেলিছে রঙ্গে, গুলিতেছে নাত জিনী ৷৷ ৄ ৷৷
চওমুও পণ্ডকরি, মুগুনালা কঠেধরি, গণ্ডেতে কুওল
পরি, নাশিতেছে সৌদামিনী ৷৷ › ৷৷ শুশাণ কুপাণ করে,
কটাক্ষে সংহার করে, হরছদি সরোবরে, ভাষিতেছে
কনলিনী ৷৷ ৄ ৷৷ সজল জলদ রূপ, মুনিমনো মোহকুপ,
হাসিকিবা অপরূপ, হাসিতেছে কাদিয়িনী ৷৷ ২ ৷৷ সুখমোক্ষ গুণধানা, ভুক্তিমুক্তি পুদা বামা, করাল বদনা
শ্রামা, ত্রাসিতেছে অনিকিনী ৷৷ ৄ ৷৷ মধুভরে ঢলালে
ধরাতল টলটল, দানব সংহার ছল, ভাষিতেছে করা,
লিমী ৷৷ ৩ ৷৷

<sup>্</sup>হেঃ, কেমান করুণা দ্যাম্য । ধুন ।। বুঝিতে সংশ্ব । \*।। বাঞ্জা কণ্পতিরু হরি, য়েইচ্ছা তোমান্ত হয়। \*।। ফারোদ • ইশ্বর হরি, গোরস প্রথাস করি, আমরা গো
। পের নারী, ন্যাই তব আশুয়া। ১॥

ক্রিদিধীশ্ব -ইতি প্রবিচার্য নার্যঃ।
ক্রীরাপ্তায় তবপদান্ত ক্রাশ্রিতাছি।।
নাতৃত্তনন্থিত প্রয়াশ সাপিনোহি নাথ।
নাতৃত্বনি ভানি ভবতাত্র সংখন্ধ কানি।।
ইকিভাব বিপরীত, নাতৃ প্রোধর স্থিত, য়েক্রির ছিল
বঞ্চিত, হরিলে হরি নিশ্চম।। ২।।

#### 一种类

সিন্ধু অনুরাগ।। আড়া তেতালা।।

शिष्ट्रिय, जुमकिन मन ।। धुर ।। निजाल जानिक् जुलि, जीर्थ भर्ताहेन ।। ३ ।। जालत जीर्थ कितिय, जलत जीर्थ जालिय, नित्रस्त हिस्तामामा, जिल्ल हत्।। >।। मुक्तिरक् कामीवान, जेताहारन मूर्याचाम, जनर्थ जूरुत द्वासा, वहिस्कात्रन ।। २ ।। जाकेवित हिस्तमाद्र, रहकारन कारनन रहारत, जान भानेहरत हरत, जकान मत्न ।। ० ।। सिना (उड़ाना ।। (य्रवृति (त श्रांग त्राना ।। यु. ।। भारत, स्भान तरे, (मन्थ वहे, मानवात नय्ना ।। \* ।। यु व्यक्ता, उड़ान है व्यक्ता, उड़ान है व्यक्ता, उड़ान है व्यक्ता, व्यक्ता है व्यक्ता ।। १। विकृषि (म देखानि ।।

ছরি পদে, মতি য়েনরয়। ধুনু ।। পরিণামতরি পরি

হরি কালভয়। \*।। কিকরে মন ধর্মাধর্মে, ধিকধিক
কর্মাকর্মে, মর্মবৃধে জন্মোধ, লয়েছি আশুষ ।। ১।।
বৃধাতীথ পর্যটন, কেনকর অকারণ, শুন্তিমাত্র উপা
জর্জন, জীবন সংশ্যা। ২ ।। ব্রহ্মপদ প্রসূতাসি, য়েগঙ্গা
প্রভাবে কাশী, সেচরণধ্যানধন্য, হ্যকি নাহ্য।। ৩ ।।

কাল্টোর, ঘরেতোর, ঘমাও নামন।। ধ॰ ।। চকি-তে নইবে হরি, জীবন রতন।। \*।। 'মেতব দেই ভবননবদ্বার সর্কালণ, আছে বিনা আবরণে,ভরসা কেমন।।।।।
কর্মানুত্র বিধিনতে, জ্বানা সহজাযতে, অদ্য বাক শতাস্তেবা, অবশ্য নিধন।। ২।। প্রহরি রাখহ কালী, সূক্তক্রমা মুগুমালী,তবেকালে হবেসেই,কালের পতন।।।।।

कालीवत्न, कालग्रमिश्राय ॥ धु॰ ॥ किकद कालिका वार्ण, कालाबाद शाय॥ \* ॥ जीर्थशश्राठेन किया, देय॰ शकाबाद मिया, कालबाद कालग्री, किकन जाश्य ॥ २॥ जादेवीन जासम्म, नास्त्राद अनुक्रन, क्रिस्ट कातारत हिन्दं, निजाक हिन्छाय ॥ २ ॥ कानना मायत मर्का, जब धर्माधर्क कर्म, जर्मनामी जर्मगुष्म, काल-धरत थाय॥ ७॥

অন্তেরেন, অন্তনাহিরও।। ধুন ।। পাষাণ নিদানী হযে, পাষাণ নাহও ।। \* ।। নিয়ত য়ত ভূতানি, গতকাল পুরিজানি, তবুমনে নাহিবলি, কালীনাম লও ।। ১ ।। ভরসা বুক্ষাণ্ডে। দরী, অথিল বুক্ষাণ্ডেশারী, পিতিতে তারিতে ভযে, তন্য নাকও ।। ২ ।। পর্তিত তারণ ভার, তারিণী বিনে কেআর, সহিবে কহিব কারে, ত্রাণভার সও ।। ৩ ।।

আড়া। অরেমূচ আত্মাকেন, আত্মভাবে বিমারণ । শুন্ । রেদেথক্তকরপ,জগত রূপ দর্শন। \*। আজ্মা সেসুত্র. ধরে, পাঁচ্দিনে পাঁচটি করে, পাঁচেতে পঞ্জ্ব পরে, ছলে প্রকাশে তথন ।। >।। আট্কড়াযে আট্ দিনৈতে, আট্থানা হও আহ্লাদেতে, বুরনায়ে ঐ আট্ কড়া, শেষের সঙ্গের ধন।। ২।।

ह्रण्ड्रण्डाएवा व्यान, नग्नग्'नग् व्यानात्त व्यान ।। अन् ।। शाय् शाय् शाय् व्यानन्, भय् नय् नय् च्यू भान ।। \*।। कहे कहे कहे (ज्यन मनः, कहे कहे कहे मूक-थन, तहे तहे तहे नमामूः (अ, नहे नहे सह व्याना ।। ১।। হায্ হায্ একিভাব্, কাষ্ কাষ্ কাষ্ কবভাব, তাষ্ তাষ্ তাষ্ অনুভাব, বাষ বাষ্ বাষ্ সুবিধান ।। ২ ।।

# সিদ্ধ ভৈরবী।। ধিমা তেতালা।।

थ, अस्तं, नियं त्राय ।! धुः ।। मकाल आमात् भिक्तन, आश्रेन इत्य ।। \* ।। स्नाद्य अश्रेन ना इ हाय. अस्त हाइ। द्रित हाय, अस्त्र ताथिए छ। य, व्याकृत मृकृत त्या ।। > ।। (मथ वियम कातन, ना इ (इति स्नियम, कर्त्रम सम्बद्धन, अमा हिम्य इत्य ।। > ।।

কারেকর রে য়তন, কোথাধন, কোথাজন, ।। ধুন।।
য়েদেখ কহক ময়, বার্লক্য য়ৌবন ।। #।। মান্য্যে কদলি
ভয়ে, বিলয়েব। অবিলয়ে, ভরস।কি জলবিয়ে, নিশ্চিত
থতন ।। ১।। য়েতব কার্য্য ক্রেপ, তারেনা।ই ভাবমন,
অনিত্যে মোহিতে ভোলো, নিত্য নিরঞ্জন।। ২।। মহানোহ নিদ্রাভরে, পঞ্চর পাইলে পরে, কাক্স্য পরি
বেদনা, কেকরে তখন।। ৩। ভূতপঞ্চ ময় দেহে, পালনা ।
নাবিধ স্লেহে,নিদানে বিলয় হেডু, শ্মশানে স্থাপন।। ৪।।

্তারেকর রে মনন, য়েহরে হরে সংহারে ।। ধুং ।। মিছে গুণগানে ভোলো, কার্য্যের কারণ।। \*।। মহানোছ মাযাবশে, মজিযে বিষয় রসে, বিষপানে মজবিসে, পুনার ক্মন।। ৮।। সেনান ভ্রমন মন, সুধাকংশ ननाष्ठन, विश्वरित्त नाम इत्व, कार्त्वाना (इनन ॥ ६ ॥ नम्। विद्यामित विरस्त, विश्विरत्ति त्रस्य विरस्त, काविरस्त मद्राव द्वर्य, विश्वासाद धन ॥ ७ ॥

क्न बड, बाक्कन ।। थु॰ ।। बज॰ जात, ভाविजात, कावा तर धनकन, कीवन स्तोवन ।। ॥। देवच शर्या स्ता शित्र, नायानाती जनकित, जङ्गिष्ठा जङ्ग्ली, जाधिक व्यवन ।। ১।। कर्राष्ट्रम निजावरम, थाकङ् जूथ व्यवस्त, जन्छ विषय तरन, पिष्क स्तान ।। २।। बड स्त कित्रक तक, राता जूड विषय तरन, कि रिंद डाङ्गिक छन, जूनिक व्यवन ।। ७।। खन डात डेलरमम, डाक्क स्त स्वास्त्र, ভाব सिह मिन भागारन द्यालन ।। ८।।

কলত সম্পদ রত,কেবল আপন !! \*!! রাবংজীবন রবে,
তাবং আপন সবে, জীবন অভাবে তবে, মালানেক্ষেপণ
৷৷ ১ ৷৷ দারাসূত বজুজনে, পাল সুখে প্রতিক্ষণে, করি
বছ আকুঞ্নে, ধনউপার্জ্জন ৷৷ ২. ৷৷ কিন্তু বলি সবিশেয, হইলে তোমার শেষ, বঁজুগণে কারছেষ, পলাবে তথ
ল ৷৷ ৩ ৷৷ তুমি ভাব এআমার, অন্যথা কি আছে তার,
কিন্তু সে নহে তোমার, দেখ নিদর্শন ৷৷ ৪ ৷৷ ঘুচিবে সন্দে
হমাত্র, য়ে পুত্র সুমেহপাত্র, সেইসে দহিবে গাত্র, জালি
হতাশন ৷৷ ৫ ৷৷ হলৈ মহানিদ্রাগত, তুমিহবে স্পাদ্হত,

के उक्षर्त करत करु, सिक्षांत स्त्रमंत्र ॥ ७ ॥ चर्ण्यत महा ध्यं, कतंत्र मर्तानिक्ष्य, छन्न छैं क कर्मात्र्य, घृत्रित छ्वत्र ॥ १॥ जृत्रभक्ष मयराष्ट्र, त्राधिर्ण नातिया क्ष्य, भगरा भगा नोन, भारत भारत, ॥ ৮ ॥ जभरत जभन क्ष्य, छोत्रत छोत्रन नय, छूत्रत जून्य मय, छोत्रत छोत्रन ॥ ৯ ॥ किश्वित्र जोमात्र, कूम्याल्ड स्माजात्र, करत मास नावश्व, चासीय मजन ॥ २०॥ स्माजात्र, किश्वाधिल, निजास मजांड मणि, चालित्र वन्नग्रांत्र, मिन्य नित्रक्षन ॥ २०॥

তুমিকার কেতোমার,কারে বলরে আমার ।। ধুন ।।
স্থপুলকা রাজ্যপ্রায়, মাথিক ময় সংসার ।। #।। এয়েদেথ হন্তপদ, তব দৈহিক সম্পদ, সময়ে নিম্পান্দ সর,
হেলন করণ ভার ॥ ১ ॥ দারাসূত বন্ধুয়ত, ইন্দ্রজাল
ক্রীড়ামত, ক্ষণেস্থিত ক্ষণেস্ত, গ্রোযাত মাত্রসার ॥২॥
প্রাণ প্রধাণ য়খন, ঘটিবেরে মূচ্মনং, কাকস্য পরিবেদন,
কেকরে তখন আর ॥ ৩॥ ভন্মসাত হ্বেগাত্র, কথারবে
এইমাত্র, অমৃক সজ্জন পাত্র, অগ্রা দুর্জনাচার ॥ ৪॥
ইহ্ফল এজগতে, এতাবতা বিধিমতে, সমভাবে স্ক্রিভিন্নর আ্লার ॥ ৫॥

বির্হি বধিতে পিক, শশি সন্ন গণন !৷ ধু ৷৷ অথচ অভাব ভাবে, উভয়ে কাল্যাপন ৷৷ # ৷৷ পিক্রপ

তমোম্য, শুধা শশু কর্যে ক্ষ্য, কলানিধি অরিকৃছ, পিককরে আবাহন ।। : ।।

কেন ভূনেভূম মনঃ, মিছেসব এবৈভব ।। ধুণ।।
মহামায়া মোহবদে, হারালে চেতন ॥ \*।। অনিভ্যে
নিশ্চিত জান, নিশ্চিতে অনিত্য মান, চিন্তাসাধা করতারে, য়ে অচিন্ত ধন ।। ১।। একিবু ঝিবারভূল, গুণাগুণ
সমতুল, তাহারে সগুণ করা, এআর কেমন।। \*।। নয়ন
অতীত ধন, দেখিতে কর য়তন, শুতিহানে ভূতিবাদ,
নাসায় ভোজন ।। ২ ।। নান্দিনিন্দা সময়ার, কিফল
পূজায় তার, অনর্থ ভূতের ভার,বহ কিকারণ।। \*।। অত
এব অনুক্রণ, চিন্তানিত্র নিরঞ্জন, অচিন্তেকি প্রযোজন,
বন্ধ্যার রমণ।। ৩!।

জন্তরে কেননে ছিলে, অন্তর নিবাসি হযে।। খু. ।।
ইকি অনুচিত দহ, অন্তর অন্তরে রযে।। \* ।। অবাধে
থাকি অন্তরে, জুলালে দুঃখে অন্তরে, সেয়াতনা নিরম্ভর,
কতবা ফুরাযক্ষে ।। ১ ।। ছিলনাত্র অবিধান, নহেকি
বাঁচিত প্রাণ, মনাগুণ সমাধান, ন্যন্ স্লিল ব্যে।। ২ ।।

ति हिन्छ। ভावना ॥ ५० ॥ श्रामाति मयन द्वार, उत् कि इत्य वनना ॥ क्षा । क्षीवन कीवन श्राम, विभूव श्रामक काय, निस्त्र निर्माण द्वाय, क्षांनिक कानना ॥ मण्ड আপন ক্য্যা, মাযাপাশে বন্ধ হ্য্যা ভুষ্চিত্তা নারিলয্যা, শেষের চিন্তাচিন্তনা। ২ ।। ক্স্য পিতা ক্স্যুমাতা, ক্স্যুত ক্স্যুভাতা, কায়প্রাণে ন সম্বন্ধ, কাক্স্য পরি-বেদনা।। ৩।।

দেখ সকলি অসার, কেবাকার কেতোমার ৷৷ ধুং ৷৷
কিবুঝিলে অহু কার, করকার অহু কার ৷৷ ※ ৷৷ দারা
সূত বজুগণ, কেরল আপেন জন, য়থ৷ নিশির স্থান,
তেমতি সংসার ৷৷ ১ ৷৷ কেবাতব সঙ্গে য়াবে, কেবাতব
মুখচাবে, লইবেয়ে য়াহাপাবে, ত্বিয সঞ্চার ৷৷ ২ ৷৷
তবাযু বিগত জানি, গত প্রাণ অনুমানি, করিলবে টানাটানি, শাশানে বিহার ৷৷ ৩ ৷৷

विन्तृत्रम छवित्र क्ष्म , कावक क्षमिक छय ।। कु ।।

यावक कृष्क नाया, नयत्न धित्र प्रया। \*।। केळ्लालि

क श्रमन, मायाय जाक्कशन, नायात्र नाया क्षमन,

विन्तृतिक क्षान्य ।। > ।। (मनाया कावित्व ननः, मना ।

इस महत्वन, मृत्य कत्र शहन, क्ष्म विद्याग्य नय।। >।।

करहत्व क्षान्यमं, च्रायां नायान्य, त्रव्यात कात्रक्य, कर्ष्म प्राप्त्र स्था। >।।

তোषात विस्ताप (पर्ट, উडव डावविश्वान ॥ ४॥ क्विन विश्वत शहन, कः दब्रह मन शायां।। ॥ ।। कडूशीन श्याधन्न, कखूनुभा धन्नाधन, कखूरवनी कृष्मिनी, कखून्नाल गमान।। > ।। कखूरनज विषयग, कखूरुक गूथावय, कखूटारम कखूडारम, नाजानि किवानकान ।। २ ।। बखावड हम्मुन्सन, मारतमिन वस्त, मिनारन कडना मूथ, विद्वाह विसदा स्थान।। ७।।

हिस्राक्त विश्वासयी, व्यूक्त मूनायाद्व ।। यु॰।। श्रमुश्च हित्रभाकत्न, नार्क जिवनया कादत ।। ३०।। ययस्य निक्र दिख्यी, महार्क वर्ष वाणिनी, श्रम्भावित किमानिनी, कामानिन निश्वायाद्व ॥ >॥ मन्द्रिक स्वीलन, कृष्ठ हार्य न्दर्क विश्व क्षायाद्व ।। >॥ मन्द्रिक किविवाद ।। >॥ वृक्ष विश्व क्षायाद्व ।। >॥ वृक्ष विश्व क्षायाद्व ।। २॥ वृक्ष विश्व क्षाया, व्यवस्थ विश्व क्षाया, व्यवस्थ विश्व क्षायाद्व ।। २॥ वृक्ष विश्व क्षाया, व्यवस्थ विश्व क्षायाद्व ।। २॥ वृक्ष विश्व क्षाया, व्यवस्थ विश्व क्षायाद्व ।। २॥ व्यवस्थ क्षायाद्व ।। २॥ व्यवस्थ विश्व क्षायाद्व ।। २॥ व्यवस्थ विश्व क्षायाद्व ।। २॥

किन शकां जी द्व शांत, किनशका जी द्व शांत ॥ धुः॥
जानन मायद कारन थिक, भर बहु मायद छन्कि शांव
॥ भा नादमागद जनय इर्यः अमि कि शिर्याह वृद्यः,
शारत जाद मा मा करयः, शांन्थिय कि कान् का छात ॥ >॥
जित्र वृद्यहि अहे हि इर्दः, कृष्ण कृष्णां जि द्वरः, अमिक् छ
कि पृक्षिक् वर्दः, मार्थिय कि नव हादाव ॥ २॥ जाभन्
मार्यद्र जाम्ब शांद्र, भरदद्र माकि अमूष् छाद्द, कान् कहिक
हर्षे जर्द, कान्कृरन शिर्य माष्ट्राव, ॥ ० ॥

পিরিতি সুখের নিধি, সাধিলে নাহিক হব ॥ ছু॰ ॥ খারেউদ্র ঘটেকোথা, সেকথা কৌতুকে কম ॥ \*॥ তুমিয়ে বুকেছ ভাল, সেইভাল আমার ভাল, ক্লতঃ পরের মুখে, ঝাল্থেয়ে জুলান হয়।। ১॥

কোথাগেলে আমার প্রাণ, সুথনাশিষে !! ধ্রু॰ !! প্রেমগ্র পথমাঝে, বিরহ বনে ফেলিযে !! \*!! সেবলে কতনা দুঃখ, কহিতে অবাক, মুথ, আরণে বিদরে কুক, পাষাণ রাঘ বিদরিযে !! > !! গঞ্জন৷ বিটপ চয়, দঃখ কুশাক্ষর ময়, লাঞ্ছনা লতায় বসি, শোক বিহুক্ত ডাকিষে !! \*!! প্রনাদ করিবে প্রাণ, কেকরে তথন ত্রাণ, অব্যা-হতি পিরিতেকি, অর্থানী জনে বধিয়ে ! ২ !!

कानीवरन कानकार मनः, कानीवरन कानकार मनः

।। धुः।। उद कारन कारोग्नाद, निभाम कारन वक्त ।। हाः

कानीकर मनः कानीइरन कारनावारन (कछ हारनमा,
कानाकारन कान् भनाहरत, ग्रामकारना इय् रमभमन ।। १।

चना हिन्ना वाश्रिम्द ममा हिन्न, हिन्नामयी हवन, नरङ्गुः।

चना छभवाम, कामारन हान् इय् कि कथन।। १।।

म्रानंत वार्मना) यनि, इरयमन मिलाहेल ॥ दु॰ ॥ তবে धकीतत वृथा, आत्रता किन त्रहिल ॥ ॥ ॥ धहेकि প্রেমের রীত, হলো অতি অনুচিত, তিল সুখ আলাপনে, চির্দুঃখ নাঘ্চিল ।! ১ ।। -

ভালবাসি ব্যলেকি প্রাণ, আসিতে ভালবাসনা
।। খুং ।। কেমনি করম দোব,নাহিপুরিল বাসনা ।। \* ।।
হেরেশশি মুখেহাসি, সুখের সাগরে ভাসি, তাইকি
দাসীরে রাখ, ভাবিতে তব ভাবনা ।। ১।।

आद्रमृष्ट्र मनः क्रिन, अठउव विष्ठम्ना ।। धु. ।।
वृक्षित्व वृक्षित्व नात्र, नात्पट वाप्रनाधना ।। ॥ ।। अग्रमाञ्च
निश्चनद्र, नाष्ट्रि आहे कड़ा हैकद्र, यहे । भूका उपस्तद्र,
पिक्षना पान कल्लना ।। >।। त्रनव लो किकापत्र, आरख
जाव जावास्त्र, क्रमान्य किमून्पत्र, त्रथ्य कित्रनमा
।।>।। भामान ज्ञित्र लिखमान, लाह्नश्चात्र त्रहे मत्राथान,
आहेकड़ा नव मग्रान, जाव्य ज्ञावना।। २।। यहो त्र्यानिया ह्य, ह्यल्पत्र काहाथान् इय, मिक्षना पिक्षना
नव, मिक्स्ति गठ कानना।। ०।।

শুন্গিরি নারদেরে, মেথেকি ব্যলেছে ।। ধুন ।।
শানিতে উমারে ছেথা, কিভার হ্যেছোঁ। \*।। দুইন্য
লাচন্ব, সরেমার একটি হ্য, লোকেশুনে কিনাক্য,
মারাণ ভুলেছে ।। >।। শুনেছি লোকের মুখে, মা আমার
মনের দুংখে, পায়াণী জননী ব্যলে, কহুনা কেঁদেছে ।। ২।।

भीतीरमध्य पूर्धत् (इतन, थाउय। कृतंन पूर्णान, किनानि किनुबि स्थित, अधिमान् करत्रह।। ७॥

আমার পিরিতি গুণ, কহিতে দহে ছদ্য ।। শুন ।।
কবেহ্য কবের্য, কবেন্য কেবাক্য ।। \*।। হ্যেছে কিনাহ্যেছে, অনিবিরহ্ ঘটেছে, স্নেখানে বাঘের ভ্য, দেইখানেকি সন্ধ্যাহ্য ।। ১।।

আনিতো দুংখের দুংখী, সুখেসুথী কেতোমার । ধুন ।। শুনিতে বাসনা অতি, জুড়াও প্রাণ আনার ।। \* ।। একোন বিধান প্রাণ, বুঝিতে নাপারি ধ্যান বুঝিলে কিছবে বল, উচিত নাহ্য তার ।। ১ ।। একয়ারা ভিন্নফল, জলে আর্ জুলে অনল, তবসহ কেহ্সুখী, কেছ বহে দঃখভার ।। ২ ।।

न मानव मानज प्राप्त, जरून नाहिक इय ॥ दुर ॥ किकल ब्रिट्यात उद्युक्त नाहित्य ॥ \* ॥ प्रज्जाव हिनमान, मान दहिल (भाषान, भाषान जाष की वान, कीवान मींजन नद्मा > ॥ वियंग प्राप्ति कहे, कहेकाल जिक्हरे, इहिन्द श्रीनागूरन, चानून नींद्र माय्य ॥ २ ॥

खहरत् रामारत थरन, त्राभिरा छ्य ॥ धूर !। विदीर्भ इत्य मार्थ, किञ्जानि प्राण्ना इय ॥ \*।। विद्रह भाषक थान, .श्रम्य कुरत ज्ञान, नश्रान जिल थात्रन, अमनित्म हिज्ञाय ॥ > ॥ अम्प्रिल जाश्राण्यत्व, मनानत्न स्थाश्रद, जानन উভाপ करन, श्रिष्ट निरात्रिज तय ॥ २ ॥

जारत कतरत व्यत्न, क्वनखाना ज्नमन ॥ कु ॥ स्त्रारमपु मृतीत्य मूक्त, शारन श्रमत्त ।। \*॥ नम्रत विश्व स्थल, कृष्टक स्य क्वल, वाकीयात वाकिमज, कागुज स्थल ॥ > ॥ त्रमा त्राथक विश्वाम, वारतक नहरत नाम, त्राभि श्रम निम्नथाय, मृत्रिय नयन ॥ २ ॥ क्वानज वा स्थानज, कानीनाम किष्टागल, ज्ञाद स्थारन श्रभा, स्नातन महिन॥ > ॥

সবেবলে তুমিনাকি, ভাল বেদেছরে প্রাণ।। শুন।।
কিন্তুতব ভাবেতার, নাছেরি কোন বিধান।। #।। ভাবি-লে তোমার ভাব, কতহ্য অনুভাব, কণেকে সরস ভাব,
কণে বিরস ব্যান।। ১।। '

### সুরট মলার ।। য়ত্।।

क्ममङ, मांगद नांहिष्ट ॥ धुः ॥ ऋषित छत्रक नोल, कमल ভामिष्ट ॥ # ॥ मूललिख शर्मकन, किनित्रक नजरन, जुमत मधूत चत्र, नृश्द वाक्षिष्ट ॥ > ॥ लोल-किश्व कर, ভालकि धु धरु, कशान कलाक किया, खधा । अ ।। तन मण्यान ॥ मांमा, कतान वंदना वाया, चए चए चए चए हारत, हनना व्यक्ति हा। २ ११ मझ नित्र मुख्याल, क्ष्म्य क्ष्मकाल, लक्ष्मां क्रांतिन हर हारत. पनुक पनि हा। ३ ११ छेझं एक मानाइत, क्रांत्र कात हत, मानकूष्ठ भाषाध्व, ह्या ना नि ह् ११ ० ११ मनामना म्य-खूता, भविष्य कर्ग्द्रा, किकिनी क्रिट्ट भी, केट्टिंट भाषि हा। ३ ११ बहेबल महामाया, प्रमृ क्रित्र हाया, मोइड क्ष्मांप हीन, क्षनार हानि हा। 8 ११

# वाषात्र ठेका॥

व्यक्ति, व्यक्ति अपि एक काल, काल किन क्रिक्ति । व्यक्ति, व्यक्ति अपि एक काल, व जना क्रिक्ति । क्रिश्च । अपि एक काल, व जना क्रिक्ति । क्रिश्च व । क्रिश्च व । क्रिक्ति व । क्र

কিমাধুরি ছেরিছরি, বিশেষ বিণী ন রাস ৷ দুর্ন ।
শার্দ পার্দ শশি, তমোনালি স্প্রন্ম ৷ কালা কর্ম
নামাজাতি, উত্কুল মলিকা জাতি, সহ স্য প্রন্ম ডাতি,
একেআর পরিহাস ৷৷ ১ ৷৷ কপুরি রজনী ঘটা, কৌম্দে
কুলুম ছটা, কমঠাদি বৃদ্ধকটা, বিপুলা পুলকে বাস ৷৷ # ৷৷

বামনেত্রাণ গোপাশ্যবা, গণে নোহন কম্পদা, মুরুলী কলশ্ সশ্গীভে,কামমন্ত্রিজ্ঞাস্যা ২।।

## **मात्र**ी त्रागिगी । विमाउउ।ना ॥

শুনেছ স শার বাত্রা, আরে মৃঢ় আত্মা মন। প্রশান সকলি অগার তত্র, সার মাত্র ব্যতিক্রম। মা। ভমি কার কে ভোমার, করকার অহশকার, তির্ফার পুরফার, করেছেতে ভলনে সম।। সা মাকক বুক্ষাওকটা, পক্ষমাস দকীবিটা, অরুণ অনল ছটা, অহুরত্বনোপন।। ॥।। লেকটাত্র তুহগণ, ফেলিপাক আ্যোজন, কাল পাচক গণন, ইহুক্পনা চরম।। ২।।

नकृति रहा, न्थश्रय हित ॥ धुः ॥ रक्षित क्रम भाग, गीनन नश्जि ॥ \* ॥ व्यालियन व्यानाशन, न्यालम नश्चायन, मरन श्रम पर्व मन्द, मरन छ। द्रश्चि॥ ১॥

অন্তকালে, ওপদ তোনার!। গ্রু ।। অন্তরে রেখোন।
রেখো, অন্তরে আমার ॥ \* ॥ অন্যবা আরাণ্ডকই,
মিছে আরাধিত হই, কোঁটোলের্দ্রেহাই কেন, নিকটে
বাজার ॥ ১॥

्रकानि क्लान, (क्ष्म, इय् इय् इय्ना ॥ धु.०,॥ निष्क् नय असि इय, त्रम् त्रम् त्रम् त्रम् ॥ १॥ लितीए शक्सा अफ, व्यामि निक् व्यवित्रच, त्मछोद् इस्य वित्रच, नस् नय् नर मा॥ ५॥ वानना चाहारत वस्य, त्राहे उपानिमी इस्य, कि कत चाहारत कस्य, व्यथवा॥ त्म स्वस्त कथः, कर्कव्कर्करना ॥ २॥

निनी मनिनी जाक, প্রভাকরের প্রভাতে 11 कुर!।
गात्राक वित्रांक कानि, यथा ग्रामिनी প্রভাতে 11 का।।
श्रियं তোমার নয়ন, স্গনদয়ান্যন, তরুণা রুণ বরণ,
প্রকাশিত এ সভাতে 11 % 11 কেননা হইবে বল, গগণ
য়াহার হল, সেজন গতভূতল, হেরে হৃদ্য কমল ।। \*\*।।
মলিন বিরুদা ভাগে, রন্ত্রণা দলিলে ভাগে, কলেতে বিরুদ্ধ আভাগে, জুলাবে দুঃখ আভাতে 11 ২ ।।

### 

## **(मा**श्नि) রাগিণী ॥ জলমতেতালা ॥

त्र जन गिर्देश कार्य, वितरहं मित्र क्षान ।। श्रुष्ट ।। विन जान मा इतिया, वितरहं मित्र क्षान ।। श्रा विन जन कपुलनन, मनाखल परहं मनः, नाहि एक पत्रनम, क्षेत्र कालतीरत क्षान ।। ३।। व्याप्त जानवानि हाहा, जीन का ना कार्य कार्य, स्थान सर्वित क्षान ।। ३।।

प्रकथः जनाथ। नष्टः, कहित्व इव त्विष्य ॥ धुः ॥ न: इक व कथा इय, किक वि का इ। श्वनिष्य ॥ सः (कामा- त्र वित्रष्ट् क्या, श्रामात्र वहत्त्र छथा, धार्य नयन छाटन, भाकतिष्ठु प्रेथितय ॥ । । १

कानवना, (करणाकानवना, अरनारकणी अरनाद्रम, नरक हजूदक । धुर ॥ ग्रानिष्ट् यह नः तथी, प्रमुख मन्द्र तथी, प्रमुख मार्थ के प्रमुख किरामा, विविध के प्रमुख करा । १ ॥ भ्रम्मानिकानिकर , किनिय असन करा, यम इहस्रात्र करा, यम इहस्रात्र करा, यम इहस्रात्र करा, यम मन, पर्मिन नर्म वन, यामा नामा पाना मन, पर्मिन कृतिका वन, विकल नक्न वन, यामा नामा पाना मन, पर्मिन कृतिका । १॥

কেননে কিবলে বল, এপ্রাণে রাখিরে প্রাণ।। ধুন।।
য়ারনানে অভিমান, সেকার ল অপমান। \*।। দেখহয
কিনাহব, লে বেক্য কিনাক্য, প্রেমর্য কিনার্য,
হেরিয়ে তব বিধান। ১ ।। সদাদহি কিনাদহি, তাপসহি
কিনাসহি,তাইকহি কিনাকহি,হই এদুঃখেতে ত্রাণ।।২।।

(श्रमणारम, मुक्त जानित ।। धु- ।। आमात मामत माथ, मान मिनाहेत । ॥ ।। आमिजावि ध्वयान, जीनदाम जावश्रीम, हेजदा मीहन जावि, काणजा नहित ॥ > ॥ मान हित प्रक्रणाम । जाजित (म आमावाम), जीव्हिड स्थित में स्था, क्वक पृथित ॥ २ ॥ र्भित्रकन्यान ॥ खनेराउठा ॥

वृंदाय वालाशा निष, यम इय प्रमान ११ था। कि प्राय इयाइ प्रायी, नाजानि कानकांत्र ११ का प्राप्त कथन कथन, द्रात क्ष्मां नयन, जाइ इत्य कि बान, कथन ब्राह्म कीवन ११ २१६

কার রমণী রাকার মনি, কোকমদ কুসুম সংকাশ রুচিরে ৷৷ ধুনাছে চম্পু হয় করী, খপুতুপা ভয়ংকরী, অপরপ রুগধির, নগ্ন: বিমগ্না রুবিরে ৷৷ ক্লাবিরার শক্তিকার, পুপুরকৈ কনিকার, শিরশি ত্রিকোণা কার, রুজ্জ ত্রিগুল শুচিরে ৷৷ ১ ৷৷ বিপরীত রতেরতি, মতকামে৷ পরিরতি, তদুপরি কিমুরতি, বিবর্ণ বর্ণ উদিরে ৷৷ ২ ৷৷ কলানিধি ভালভালে, অন্থিয় কঠমালে, খপুমুপ্ত করবালে করে ধারণে সুর্থারে ৷৷ ৩ ৷৷ অশ্রুতশ্র তিনধার, নিজ্মুপ্র করবালে করে ধারণে সুর্থারে ৷৷ ৩ ৷৷ অশ্রুতশ্র তিনধার, নিজ্মুপ্র করি তার, বর্ণনী ডাকিনা আর, ছিধার৷ পায়ী ক্লিরে ৷ ৪ ৷৷

হিণ্ডোলরাশ ॥ জলদতেতালা॥

উচিত ভাহারে নই, করি অন্তরেরান্তর গা ধুং গ

এবোধ নাহণ সার, কেঁ আপন কেবাপর।। । করিছে জতি য়তন, নঁলিলেন প্রাথ নমঃ, তবু নাহল আপন, হ্যুবাকি ইহারি পর।। ১।।

মিছে কালীবানী হব, মিছে কালীবানী হব। । ৬ ।। লাগালামাকে মাব্যনে কি, মাথের ঋণে বজরব ।। ৯ ।। লাগালামার তনৰ আমি, লাগানিবেন নজানামিন মার কিল শুন্য কারে, বিমাতার কি অরণ লব ।। ১ ।। দেখহ বিমানতার কারে, পিতার জটায বিরাজ, সপাজী সুতের বাজ, ইথে কি নহে সম্ভব ।। ৯ ।। স্বার্থাব তাষ্ভূলে জাক, পারের্ গুণ্ পাঁচ্মুখে গাব, স্বার্থন তার্থন্নয্, নেশমষ্ রার্দোহাই কব ।। ২ ।।

তবে শিবে, শিবের দোহাই ।। খু., ।। তারিতে কাতরে মদি, তবননে নাই ।। \* ।। তাবিনা ভাবিত্তাশ, আমি দীন হীন দাস, রাখিতে একালিদাস, লঘুঠী কেন সদাই ।। ১ ।।

वृक्ष श्रीय श्रृहेत्र गहिल शिक्तिक, बहे भारक देश शह गासमू प्राक्षिक।।

जमारखाय अद्रा